अमृत स्थापना एवं 2550वां महावीर निर्वाण वर्ष महोत्सव-2024

अ.भा.प.जैन महासभा का 55वां स्थापना वर्ष

स्थापित 1968

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

₹5

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग मासिक पत्रिका

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

अंक 9 ✦ प्रकाशन तिथि : 25 मार्च 2024 ✦ वर्ष 12 ✦ कुल पृष्ठ 48 ✦ मूल्य ₹5

अहिंसा

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

होली एवं महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाऐं

TAILOR MADE
SOLUTIONS
FOR DIVERSE
INDUSTRY NEEDS

MEI POWER PRIVATE LIMITED

MARSON'S
AGRA, INDIA

25 KVA to 14 MVA
Type Tested as per
BIS Level 3 & 2 / IEC & IS

संस्थापक - स्व. श्री स्वरूप चन्द जी जैन (मारसन्स)

(19 अगस्त, 1927 - 31 अगस्त, 2016)

आपका स्नेह, सेवाभाव, समाज की प्रगति की भावना, उच्च विचार एवं
प्रेरणादायक जीवन सदैव हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा।

Transformers | EPC Contractor | Renewable Energy Solutions

MEI POWER PRIVATE LIMITED
Correspondence: 1/189 Delhi Gate, Civil Lines, **Agra - 282 002 (INDIA)**
Ph: +91 562 2520027, +91 562 2850812
Works: Mathura Road, Artoni, **Agra - 282 007 (INDIA)**
Ph: +91 90277 09944, +91 92580 78803
info@marsonselectricals.com www.marsonselectricals.com

9001 14001 MIDEL CE ENERGY IS LIFE BEE CONSERVE IT EU Directives

Transformers | EPC Contractor | Renewable Energy Solutions

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग

मूल्य ₹ 5/-

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

अंक 9 ✦ 25 मार्च 2024 ✦ वर्ष 12 | Email : shripalliwaljain.patrika@gmail.com | कुल पृष्ठ : 48

पूर्व प्रकाशन मथुरा से, सम्प्रति जयपुर से प्रकाशित

महासभा पदाधिकारी

श्री त्रिलोक चन्द जैन *(अध्यक्ष)*
नया बास, सकर कूंई के पीछे, अलवर (राज.)
मोबा.: 8233082920

श्री महेश जैन *(महामंत्री)*
टी-22, अलंकार प्जाला, सेन्ट्रल स्पाइन, सेक्टर 2,
विद्याधर नगर, जयपुर-302039 (राज.)
मोबा.: 9414074476
Email : abpjmmaheshjain@gmail.com

श्री भागचन्द जैन *(अर्थमंत्री)*
पुराने जैन मंदिर के पास, नौगावां,
जिला अलवर-301025 (राज.)
मोबा.: 9828910628
E-mail : bhagchandjain07@gmail.com

पत्रिका प्रबन्ध एवं सम्पादक मण्डल

डॉ. अनुपम जैन *(परामर्शदाता)*
'ज्ञानछाया', डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452009
फोन : 0731-2797790, मोबा.: 9425053822
E-mail : anupamjain3@rediffmail.com

श्री चन्द्रशेखर जैन *(संयोजक)*
86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क
आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018
फोन : 0141-2553272, मोबा.: 9829134926
E-mail : csjain30@yahoo.co.in

श्री प्रकाश चन्द जैन *(सम्पादक)*
78, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार ''बी''
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302015
मोबा.: 9828374013
E-mail : pcjain49@gmail.com

श्री पारस जैन गहनौली *(सह-सम्पादक)*
बी-204बी, 10-बी स्कीम, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302018, मोबा.: 9928715869

श्री महेश चन्द जैन *(अर्थ संयोजक)*
36-सी, कृष्णा विहार विस्तार, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302015, मोबा.: 9828288830
E-mail : 3466mahesh@gmail.com

संयोजक की कलम से.....

भगवान महावीर

भगवान महावीर ने अहिंसा, तक, संयम, पांच महाव्रत, पांच समिति, तीन गुप्ती, अनेकान्त, अपरिग्रह एवं आत्मवाद का संदेश दिया। महावीर स्वामी जी ने यज्ञ के नाम पर होने वाली पशु-पक्षी तथा नर की बलि का पूर्ण रूप से विरोध किया तथा सभी जाति और धर्म के लोगों को धर्म पालन का अधिकार बतलाया। महावीर स्वामी जी ने उस समय जाति-पाती और लिंग भेद को मिटाने के लिए उपदेश दिये। कार्तिक मास की अमावस्या को रात्रि के समय महावीर स्वामी निर्वाण को प्राप्त हुये, निर्वाण के समय भगवान महावीर स्वामी जी की आयु 72 वर्ष की थी।

भगवान महावीर के जिओ और जीने दो के सिद्धान्त को जन-जन पहुंचाने के लिए जैन धर्म के अनुयायी हर वर्ष की कार्तिक पूर्णिमा को त्यौहार की तरह मनाते हैं। इस अवसर पर वह दीपक प्रज्ज्वलित करते हैं। जैन धर्म के अनुयायियों के लिए उन्होनें पांच व्रत दिए जिसमें अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह बताया गया। अपनी सभी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेने की वजह से वे जितेन्द्रिय या 'जिन' कहलाए। जिन से ही जैन धर्म को अपना नाम मिला। जैन धर्म के गुरूओं के अनुसार भगवान महावीर के कुल 11 गणधर थे, जिनमें गौतम स्वामी पहले गणधर थे। भगवान महावीर ने 527 ईसा पूर्व कार्तिक कृष्णा द्वितीया तिथि को अपनी देह त्याग दी। बिहार के पावापुरी जहां उन्होने अपनी देह को छोड़ा, जैन अनुयायियों के लिए यह पवित्र स्थल की तरह पूजित किया जाता है। भगवान महावीर की मृत्यु के दो सौ साल बाद जैन धर्म श्वेताम्बर और दिगम्बर सम्प्रदायों में बंट गया।

भगवान महावीर स्वामी जी की शिक्षाएं : भगवान महावीर द्वारा दिए गए पंचशील सिद्धान्त ही जैन धर्म का आधार बने हैं। इस सिद्धान्त को अपना कर ही एक अनुयायी सच्चा जैन अनुयायी बन सकता है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को पंचशील कहा जाता है।

सत्य : भगवान महावीर के अनुसार एक बेहतर इंसान बनने के लिए जरूरी है कि हर परिस्थिति में सच बोला जाए।

अहिंसा : दूसरों के प्रति हिंसा की भावना नहीं रखनी चाहिए। जितना हम खुद से प्रेम करते हैं उतना ही प्रेम दूसरों से भी करें। अहिंसा का पालन करें।

अस्तेय : दूसरों की वस्तुओं को चुराना और दूसरों की इच्छा करना महापाप है। जो मिला है उसमें ही संतुष्ट रहें।

ब्रह्मचर्य : महावीर जी के अनुसार जीवन में ब्रह्मचर्य का पालन करना सबसे कठिन है, जो भी मनुष्य इसको अपने जीवन में स्थान देता है, वो मोक्ष प्राप्त करता है।

अपरिग्रह : ये दुनिया नश्वर है। चीजों के प्रति मोह ही आपके दु:खों का कारण है। सच्चे इंसान किसी भी सांसारिक चीज का मोह नहीं करते है।

इस वर्ष महावीर जयंती 21 अप्रेल को मनाई जाएगी। इस दिन भगवान महावीर के मंदिर में विशेष पूजा अर्चना की जाती है। भगवान महावीर का विशेष अभिषेक किया जाता है। जैन मंदिर में जैन लोग अपनी शक्ति अनुसार गरीबों में दान दक्षिणा करते हैं। सम्पूर्ण भारत में सभी जैन मंदिरों में यह उत्सव विशेष रूप से मनाया जाता है। इस दिन सभी प्रमुख शहरों में प्रभात फेरी एवं जुलूस के माध्यम से महावीर के संदेशों को जन-जन तक पहुंचाया जाता है।

-चन्द्रशेखर जैन

पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। यह लेखकों के निजी विचार माने जाने चाहिये। प्राप्त लेखों में संशोधन कर प्रकाशन करने का अधिकार सम्पादक मंडल के पास सुरक्षित है।

भावभीनी श्रद्धांजलि

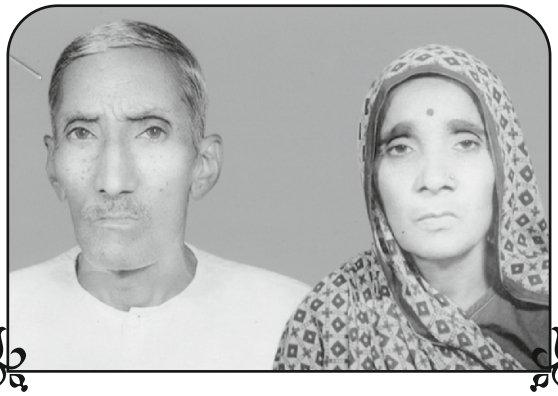

पूजनीय पिताजी स्व. श्री प्यारेलाल जी जैन चौधरी
श्रद्धेय माताजी स्व. श्रीमती असरफी देवी जी जैन
(मूल निवासी - मौजपुर, अलवर)

स्व. श्रीमती इन्दु जी जैन
(धर्मपत्नी श्री पदम चन्द जैन)
(स्वर्गवास : 30.12.2018)

हम सभी परिवार के सदस्य सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये भगवान वीर से उनकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र :
पदम चन्द जैन

पौत्र-पौत्रवधु :
पारस जैन-रश्मि जैन,

पौत्री-दामाद :
डिम्पल-राजेश जैन
सिम्पल-नितिन जैन
प्रिती-उत्तम कोठारी

पड़पोत्री-पौत्र :
चेल्सी जैन-अक्षत जैन

पुत्र :
अनूप चन्द जैन

पौत्र-पौत्रवधु :
हेमन्त जैन-मधु जैन

पौत्री-दामाद :
सुनिता-सुनिल
अनिता-परवेश
विनिता-प्रताप

पड़पौत्र :
रोबीन-मानस

निवास :
बी-52, कीर्ति नगर, टोंक रोड, जयपुर
फोन : 0141-2706317, 9829066317, 9414055855

चरण..... आचरण की ओर

- प.पू. आचार्य श्री विद्यासागर जी

मोह तिमिरापहरणे दर्शन लाभादवाप्तसंज्ञानः।
रागद्वेषनिवृत्त्यै चरणं प्रतिपद्यते साधुः॥
रत्नकरण्ड श्रावकाचार

संदर्भ - रत्नकरण्ड श्रावकाचार में मंगलाचरण के उपरान्त सृज्य आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं समीचीन धर्म का कथन करूँगा जो दर्शन ज्ञान चारित्रात्मक है। प्रथम अधिकार में सम्यग्दर्शन, द्वितीय अधिकार में सम्यग्ज्ञान का वर्णन किया है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र ये तीनों मिलकर ही धर्म संज्ञा को प्राप्त होते हैं और उस धर्म का जो सहारा लेता है, वह संसार से ऊपर उठ जाता है, संसार से दूर हो जाता है, मुक्ति सुख का भाजन बन जाता है।

वर्णन की अपेक्षा से तो सम्यक् चारित्र तीसरे नम्बर पर आता है, लेकिन उत्पत्ति की अपेक्षा से ऐसा नहीं समझना चाहिए। जिस प्रकार सम्यग्दर्शन व ज्ञान दोनों एक साथ उत्पन्न होते हैं, उसी प्रकार सम्यक्चारित्र भी एक साथ उत्पन्न हो सकता है ऐसा धवला, जयधवला, महाधवला इत्यादि ग्रंथों में वर्णन आया है। उनमें उल्लेख आता है कि वह भव्य जब जिनवाणी का श्रवण अथवा गुरुओं का सान्निध्य प्राप्त कर लेता है और वह डायरेक्ट (साक्षात्) एक साथ सप्तम गुणस्थान को छू लेता है।

मोह तिमिरापहरणे दर्शन लाभादवाप्तसंज्ञानः।
रागद्वेषनिवृत्त्यै चरणं प्रतिपद्यते साधुः॥

(मोह) दर्शनमोहनीय, (तिमिरापहरणे) अंधकार के अपहरण होने पर, (दर्शन) सम्यग्दर्शन, (अवाप्त संज्ञानः) उसके साथ ही सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर लेना (रागद्वेषनिवृत्यै) रागद्वेष की निवृत्ति के लिए (चरणं) चारित्र की ओर (प्रतिपद्यते) चला जाना चाहिए/बढ़ना चाहिए। (साधु) सज्जन/भव्य पुरुष को, अर्थात् दर्शन मोहनीय के अन्धकार के नष्ट होने पर जिसने सम्यग्दर्शन व उसके साथ ही सम्यग्ज्ञान को प्राप्त कर लिया है, ऐसा वह भव्य सज्जन पुरुष रागद्वेष की निवृत्ति के लिए चारित्र की शरण में चला जाता है।

चारित्र की शरण किसलिए ?

कोई भव्य जीव चरण/चारित्र की शरण ले लेता है। किसलिए लेता है? कोई कार्य करे तो उसका प्रयोजन भी होना अनिवार्य है। यहाँ क्या प्रयोजन है? 'रागद्वेष- निवृत्यै' रागद्वेष की निवृत्ति के लिए चारित्र की शरण लेता है। यदि यह उद्देश्य गौण हो गया तो चारित्र के क्षेत्र में विकास नहीं, बल्कि सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र का विनाश और सम्भव हो जाएगा। रागद्वेष जीव के लिए अभिशाप है। ये दृष्टि को, ज्ञान को और आचरण को समाप्त कर देने वाले हैं। थोड़ी भी रागद्वेष की भूमिका बनी तो सम्यग्दृष्टि ज्ञानी तथा अपना हित चाहने वाला उस पथ से दूर होने लगता है। जब रागद्वेष को मिटाने का लक्ष्य बन जाता है तो चारित्र को लेना अनिवार्य हो जाता है। रागद्वेष अपने आप मिट जायें यह सवाल ही नहीं उठता। अपने आप कोई काम नहीं होता, कारण के द्वारा कार्य होता है। बाधक कारण को हटाकर साधक कारण को प्राप्त करेंगे तो हमारी कामना पूर्ण होगी। रागद्वेष से बचना चाहते हो तो चारित्र की शरण में चले जाओ और कोई भी भूमिका नहीं है। कोई छाँवदार वृक्ष नहीं है, जो हमारे रागद्वेष को मिटा सके। एकमात्र चारित्र के पास ही यह शक्ति है।

रागद्वेष को मिटाने के लिए चारित्र की शरण कब लेता है वह? 'मोहतिमिरापहरणे' मोहरूपी तिमिर/अंधकार के दूर होने पर। दर्शन का लाभ हुआ है, तो समझो दृष्टि प्राप्त हो गई, श्रद्धान हो गया कि सुख यदि मिलेगा तो आत्मा में मिलेगा, रत्नत्रय की प्राप्ति के माध्यम से ही मिलेगा। रत्नत्रय को छोड़कर अन्य किसी पदार्थ को मैं नहीं लूँगा, सुख का कारण केवल अपनी आत्मा है। दृष्टि के साथ ज्ञान भी सम्यक् हो गया अब रागद्वेष को मिटाना है, चारित्र को धारण करना है। जिस व्यक्ति को जिस पदार्थ के प्रति रुचि होती है, जब तक वह मिल न जाये, तब तक रात दिन चैन नहीं पड़ती, क्योंकि जो उपलब्ध है वह अभीष्ट नहीं है और जो अनुपलब्ध है वह इष्ट है। दावत में षट् रस व्यंजन हों पर जिसे नमकीन ही अच्छा लगता है उसके लिए बिना उसके पंगत कैसी? उसे षट्रस पकवान इष्ट नहीं हैं, क्योंकि उसमें मन नहीं है। जिस व्यक्ति को जो चीज अपेक्षित है उसी में रुचि रहती है। जब तक वह प्राप्त न हो छटपटाहट चलती रहती है। मखमल के भी गद्दे बिछे हों, किन्तु जिसे सुबह मुनि दीक्षा के लिए जाना है, तो उसे वहाँ पर भी नींद नहीं आती, मखमल के गद्दों पर भी एक-एक मिनिट कटता है, बार-बार घड़ी देखता है। सम्यग्दर्शन, ज्ञान प्राप्त होने के उपरान्त उसे रागद्वेष को मिटाने के लिए रुचि रहती ही है, अतः वह संयम/चारित्र की शरण में चला जाता है।

चारित्र का अर्थ क्या है? आचार्य समन्तभद्र महाराज कह रहे हैं कि चारित्र का अर्थ पाँचों पापों से निवृत्ति रूप है- हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह से निवृत्ति लेना चारित्र है। ध्यान रखिये कोई भी दीक्षा लेता है, सकल/देश संयम, कोई भी चारित्र धारण करता है तो उसका लक्ष्य क्या होना चाहिए? रागद्वेष मिटाने के लिए। चर्चा में, दृष्टि में, मन-वचन-काय की चेष्टा में,

प्रत्येक समय यही लक्ष्य रहेगा कि यह चर्या मैं इसलिए अपना रहा हूँ कि रागद्वेष को मुझे मिटाना है। जिस चारित्र के द्वारा रागद्वेष मिटता है, वह सम्यक्चारित्र है। और जिस चारित्र के द्वारा रागद्वेष की उत्पत्ति होती है वह मिथ्याचारित्र है। सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र संसार के उन्मूलक हैं, मोक्षमार्ग स्वरूप हैं, मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान, मिथ्याचारित्र मोक्षमार्ग के खिलाफ हैं। संसार के वर्धक हैं। ऐसा दृढ़ संकल्प होना चाहिए कि जब तक रागद्वेष नहीं मिटेंगे, तब तक मैं चारित्र का सहारा नहीं छोडूंगा, जब तक कार्य की प्राप्ति नहीं होती, तब तक कारण को नहीं छोड़ा जाता। मान लो कि मथानी से मंथन कर रहे हो, कब तक करते रहते हो? जब तक नवनीत की प्राप्ति नहीं होती। इसी प्रकार संयम के क्षेत्र में भी होना चाहिए।

रागद्वेष को मिटाना है, मिटाने का एक मात्र कारण है चारित्र, जो पाँच पापों की निवृत्ति रूप, पाँचों पापों से बचने रूप है। यह बचना एक ही दिन में होता है क्या? एक ही घंटे में क्या रागद्वेष पर कंट्रोल कर सकते हैं। ऐसा तो सम्भव नहीं। ऋषभनाथ भगवान् को 1000 वर्ष लग गये। 1000 वर्ष तक चारित्र की शरण लेकर आदिप्रभु ने जीवन गुजार दिया। रागद्वेष नहीं मिटे, छठा/सातवां, सातवाँ/छठा गुणस्थान चलता रहा, मौन साधना चलती रही रागद्वेष को मिटाने के लिए भगवान् बाहुबली की साधना एक साल तक चली, हिले नहीं, डुले नहीं, बोले नहीं, खाया पिया नहीं। इतना कठिन तप फिर भी रागद्वेष अभी तुरन्त नहीं मिटे। श्रद्धान एक क्षण में हो जाता है, लेकिन जिसके ऊपर श्रद्धान किया जाता है, उसे प्राप्त करने के लिए एक क्षण नहीं, अपितु बहुत क्षण अपेक्षित हैं, कड़ी साधना की आवश्यकता है, तब कहीं जाकर के रागद्वेष का उन्मूलन सम्भव है।

यह चारित्र कौन स्वीकार करता है? साधु/सज्जन/भव्य। वह सज्जन जिसको ज्ञान प्राप्त हुआ है, दर्शन लाभ हुआ है, दृष्टि प्राप्त हो गई है ज्ञान श्रद्धान हुआ है मुक्ति के लिए साधन सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र ही हैं यह सुख को दे सकते हैं इसके अलावा कोई नहीं, पर में मुक्ति नहीं, पर में सुख नहीं पर को छोड़ने से सुख है, पर को जोड़ने में सुख मोक्षमार्गी को नहीं, संसारी को है। संसारी का ऐसा विश्वास है अरे भैया! अपने जीवन के अंतिम काल का क्या पता, माता-पिता तो वृद्ध हैं ही, वे तो रहेंगे नहीं, बाल-बच्चों का भरोसा क्या? 20वीं शताब्दी का काल चल रहा है, इसलिए अपने नाम से ही, बच्चों को बताना तक नहीं, गुदड़ी में बाँधते जाओ, काम में आता है, नहीं तो अन्त में उनका है ही। इसलिए यदि अपने जीवन में सुख चाहते हो तो जोड़कर रखो। यह जोड़ना-सोचना सांसारिक सुख है और सम्यग्दृष्टि को यह विश्वास हो जाता है कि जितना जोड़ना है, वह संसार से सम्बन्ध जोड़ना है और जितना तोड़ना है, वह मुक्ति से सम्बन्ध जोड़ना है। यही कहलाता है 'अवाप्तसंज्ञान'। महाराज! यह तो बिल्कुल ही विपरीत दशा हो गई, यूँ कहना चाहिए कि सारी दुनिया पूरब की ओर जा रही है, तो साधक पश्चिम की ओर जा रहे हैं, यह अपूर्व दिशा है अपूर्व अर्थात् अद्वितीय दिशा सारा का सारा संसार, जो जोड़ने में लगा है, क्या हम उसे सम्यग्दृष्टि कहें, नहीं! भले ही हमें सारा संसार पागल कह दे, तो भी भीड़ की बात नहीं माननी है। वृद्धों की बात मानो, आयु में वृद्ध नहीं 80, 90, 100 वर्ष के हों दादाजी, परदादा जी, जो पर वस्तु को जोड़ने में लगे हैं, उनकी नहीं, यहाँ पर वृद्ध का तात्पर्य है दृष्टि जिसकी समीचीन है सही है, वह भी ऊपर-ऊपर से नहीं भीतर से भी। बन्धुओं जोड़ना ठीक नहीं, छोड़ना ही ठीक है। मिट्टी में कुछ नहीं रखा।

ऊँची आसन पर बैठकर, करे धर्म की गल्ला।
औरों को माया बुरी बतावे, आप बिछावे पल्ला॥

अरे यह सब पर है, इसमें कुछ नहीं रखा, धर्म की बात मैं कह रहा हूँ, सुनो! यह सारे के सारे संसार के कारण हैं, राग के कारण हैं बन्ध के कारण हैं, दुर्गति देने वाले हैं, ये पर हैं, स्वभाव अलग हैं, ये सब विभाव हैं, संसार है, राग करना अभिशाप है, छोड़ दो, छोड़ दो। कहाँ छोड़ दें? हम पल्ला बिछा देते हैं, इसके ऊपर छोड़ दो (श्रोताओं में हँसी)। तो वह सोचेगा कि आप तो कह रहे थे यह रखने योग्य नहीं है और आप पल्ला बिछा रहे हो। ये तो समझ में नहीं आती। बात हमारे पल्ले तो यह पड़ रही है कि वस्तुतः आप हमें उपदेश देकर के इकट्ठे करने में लगे हुए हो, तो उसका बुरा प्रभाव पड़ेगा। यह उल्टा उपदेश देते हैं, हमें छुड़वा देते हैं और खुद ले लेते हैं, लेकिन जिसकी दृष्टि वास्तव में समीचीन हो गई उसका श्रद्धान हो जाता है- पर पदार्थ में सुख नहीं, यदि है तो आत्मद्रव्य में है, सुख को प्राप्त करने का साधन है तो सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र। आचार्य समन्तभद्र कहते हैं- सही साधन को अपनाओ, तब निराकुल दशा प्राप्त हो सकेगी। यह न्याय का सिद्धान्त है कि जैसा कारण होगा वैसा ही कार्य होगा। हिंसादिनिवृत्ति रूप जो चारित्र है उस चारित्र को अपनाएंगे तभी रागद्वेष की प्रणाली मिटने वाली है, अन्यथा तीन काल में भी सम्भव नहीं। राग-द्वेष जो हो रहे हैं, वे क्यों हो रहे हैं, जिन पदार्थों से हो रहे हैं उन पदार्थों को छोड़ना भी अनिवार्य है, इसी को बोलते हैं बाहरी चारित्र। इस बाहरी चारित्र से ही अन्दर का रागद्वेषनिवृत्ति रूप जो आभ्यन्तर चारित्र है वह होने वाला है। दूसरा मार्ग ही नहीं है। यही सही मार्ग है, मोक्ष प्राप्त होगा तो इसी से ऐसा अटूट श्रद्धान रहता है हमको।

इदम् एव च ईदृशं एव च तत्त्वं नान्यत् न च अन्यथा। इसका उल्टा भी नहीं है, अन्यथा भी नहीं है, ऐसा ही है, इसी प्रकार है, यही है। इस प्रकार का प्रगाढ़ श्रद्धानवाला सम्यग्दर्शन और उस राग-द्वेष को मिटाने के जितने साधन हैं उनमें एक सम्यक् चारित्र भी है जो कि हिंसादिनिवृत्ति रूप होता है। या यूँ कहें कि जिन साधनों से राग-द्वेष की शांति होती है वह है सम्यक्चारित्र। बाहर से कम से कम शांति आये तो बाद में रागद्वेष की प्रणाली जहाँ से

उद्भूत हो रही है, वह भी मिलेगी, अन्यथा तीन काल में नहीं।

पाप से बचो

एक बर्तन में दूध तप रहा है, उबल रहा है तो क्या करते हो? अग्नि को बाहर खिसका देते हो। क्या होगा इससे? तपन/क्षोभ/उबलन शांत हो जाएगी। दूध ही क्षुब्ध होने वाला है, दूध में ही शांति आने वाली है फिर भी यह स्पष्ट है कि जब तक अग्नि नीचे से तेज रहेगी तब तक दूध में क्षोभ का अभाव नहीं होगा, उष्णता का अभाव नहीं होगा। इसी प्रकार जिन पाप प्रणालियों से रागद्वेषों को विकास हो रहा है तो रागद्वेष को छोड़ने के लिए पाँच पापों का आलम्बन छोड़ना होगा। महाराज जी हो जायेगी शांति? अरे भाई यह आचार्य समन्तभद्र कह रहे हैं न, जो भगवान को भी हिलाने की शक्ति रखते थे। भगवान् से भी पूछ डाला क्यों धारण करें? बहुत कुछ कहा तब अन्त में कहा हाँ यह युक्ति भी है और अनुभूत भी। जो रागी-द्वेषी होता है वह पक्षपात की बात कह सकता है। आप रागी, द्वेषी न होने के कारण पक्षपात की बात नहीं कहेंगे सही बात कहेंगे। जब कभी भी रागद्वेष की निवृत्ति होगी, उस समय नियम से वह पापों से निवृत्ति लेगा।

अभी बिजली चली गई तो आप में से कोई नहीं आया बैटरी को बदलने, क्यों? क्योंकि आपने निश्चय कर लिया है कि यह मेरा काम नहीं है, इसके बारे में मुझे ज्ञान नहीं है जिसे ज्ञान है उस मिस्त्री को नियुक्त कर रखा है। वह व्यक्ति तुरन्त आता है, जिसको ज्ञान प्राप्त हो गया है। उसी प्रकार वह व्यक्ति झट से चारित्र लेने के लिए आ जाता है। रागद्वेष के साधन को मुझे हटाना है और चारित्र को आगे बढ़ाना है। अभी तक ज्ञान था कि आत्मा का हितकारी कोई है तो पंचेन्द्रिय के विषय हैं, अब ज्ञात हो गया कि 'आतम के अहित विषय कषाय।' जब जान लिया कि ये अहितकारी हैं तो फिर उनकी ओर देखें क्यों? नहीं। देखें नहीं, मिटाने का प्रयास करें। किसके द्वारा मिट सकते हैं। घर पर मिट सकते हैं? कहाँ पर मिट सकते हैं? इन्हें किस प्रकार मिटा दूँ? आकर के कहता है महाराज! मुझे रागद्वेष मिटाना है। आ जाओ बैठ जाओ और किसी के साथ बोलना नहीं, क्योंकि बोलने से भी राग उत्पन्न होता है। इस प्रकार पाँच पापों से वह जब निवृत्ति लेगा तो उसका उपयोग राग-द्वेष की ओर नहीं जाएगा।

सम्बन्ध ही दुःख का कारण

आत्मा का उपयोग रागद्वेष की ओर तब तक जाता है जब तक इष्ट व अनिष्ट पदार्थ रहते हैं। पदार्थों के विमोचन होने के उपरान्त इष्ट रहा, न अनिष्ट। कुछ भी बंध नहीं है। आपकी दुकान के पड़ोस में दो दुकानें और हैं। एक की दुकान में फायदा हो गया, एक की दुकान में हानि हो गई। दोनों की वार्ता को आपने सुना पर आपको कुछ नहीं होता क्यों? क्योंकि उनके हानि लाभ से हमारी दुकान का कोई हानि-लाभ नहीं है। आचार्य कहते हैं- इसी प्रकार जिन पदार्थों से जब तक सम्बन्ध रहता है, तब तक उनके वियोग में दुःख व संयोग में सुख प्रतीत होता है, जिन पदार्थों का त्याग कर दिया तो फिर कुछ नहीं, जिस पदार्थ से हमारा सम्बन्ध है, उसी को लेकर हर्ष विषाद होता है। सम्यग्दृष्टि को ऐसी जागृति हो गई। पदार्थ हमारा हो भी नहीं सकता, तो फिर क्यों उसके प्रति सम्बन्ध रखना, क्योंकि पर पदार्थ से सम्बन्ध रखना दुःख विकल्प का कारण है।

इस सभा में अभी कोई आकर आवाज दे- सीताराम जी। मान लो सभा में चार सीताराम हैं। आवाज होते ही चारों के कान सतर्क हो जाते हैं, देखते हैं कौन है? किसने आवाज दी? और जैसे ही देखा अमुक व्यक्ति ने आवाज दी, ओह मुनीम जी! तो तीन सीताराम जी की आकुलता समाप्त हो जाती है। क्यों? क्योंकि उनका उन मुनीम जी से कोई सम्बन्ध नहीं है। और जिन सीताराम जी के मुनीम जी हैं उन सीताराम जी को आकुलता परेशानी होती है वह खिसकने लगते हैं। उठ जायें कि नहीं, शास्त्र तो समाप्त हुआ नहीं। मुनीम जी का चेहरा कैसा है, हँस रहे हैं या विषाद/चिन्ता युक्त हैं। पता नहीं क्या हो गया। लगता है बॉम्बे में सौदा हुआ था उसमें गड़बड़ दिखती है। ये सब क्यों? क्योंकि सम्बन्ध है। जिस सीताराम जी का मुनीम जी से सम्बन्ध है, उनके मन में उथल-पुथल है, बाकी के तीन बिल्कुल शांत वीतरागी/निर्विकल्प समाधि जैसे बैठे हैं।

प्रत्येक व्यक्तिका सम्बन्ध किसी बाहरी पदार्थ से जुड़ा है। उस पदार्थ के संयोग में, वियोग में, उसके बारे में कुछ वार्ता सुनते हैं, तो नियम से कुछ हर्ष-विषाद होता है और इस हर्ष-विषाद को ही रागद्वेष कहते हैं। इस रागद्वेष और हर्ष-विषाद की प्रणाली को यदि मिटाना है तो पदार्थों से सम्बन्ध को तोड़ना होगा। व्यक्ति सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान प्राप्त करने के उपरान्त जितना-जितना बाहरी पदार्थों से सम्बन्ध तोड़ता है, उतना ही उतना वह अपने निकट पहुँचता चला जाता है और एक समय आता है, जब वह आकिंचन्य रह जाता है, किसी पदार्थ से सम्बन्ध नहीं रखता वह। कितना पुरुषार्थशील होगा वह, उसकी दृष्टि, उसका ज्ञान, उसकी वृत्ति कितनी निर्मल होगी, कितना साहसी है वह। दुनिया किसी प्रकार सहारा लेने का प्रयास कर रही है, लेकिन वह निराधार, एकमात्र अपनी ही आत्मा का सहारा लेता है जो कुछ कर्म के अनुसार मिलेगा वह ही मेरे लिए मान्य है और कुछ नहीं। यह मानना साहस का काम है। रागद्वेष को मिटाने का रास्ता है, तो बस यही एक रास्ता है। अन्धकार मिट गया। सूर्य का प्रकाश आता है, पदार्थ अपने आप प्रकाशित हो जाते हैं। अभी तक अन्धकार में हाथ मार रहे थे जहाँ-तहाँ गिर रहे थे। ज्ञानरूपी प्रकाश आ गया। अपना कौन? पराया कौन? सारा का सारा देखने में आ गया। वह पदार्थ वह रास्ता मेरा नहीं था। सम्यग्दर्शन का अर्थ ही यही है कि इस प्रकार का मजबूत श्रद्धान

बनाना कि पर पदार्थ मेरे नहीं हैं। हेय का विमोचन और उपादेय का ग्रहण, इसमें जो सहायक बनता है वही सम्यग्ज्ञान है और इन्द्रियों के विषयों से उपेक्षा होना ही ज्ञान का वास्तवि फल जिसे चारित्र कहते हैं। ज्ञान होने के उपरान्त उसका विषयों की ओर धावमान होना बह जाना, वह ज्ञान, ज्ञान नहीं है। बस समझ लो- 'ओरों को तो माया बुरी बतावे आप बिछावे पल्ला।' दूसरे के लिए जो बुरी है वह तुम्हारे लिए भी तो बुरी है, लेकिन वास्तविकता तो यह है कि अपनी दृष्टि में बुरी लग नहीं रही है, बस कहता जा रहा है। पंचेन्द्रियों के विषय जब तक जीवन में रुचिकर / अच्छे लग रहे हैं तब तक सम्यग्ज्ञान नहीं है। संसार शरीर भोगों से जब तक उदासीनता नहीं आयेगी, तब तक समझो अभी बात बनी नहीं। संसार की ओर मुड़ना और संसार से मुड़ना बहुत अन्तर है इसमें।

दर्शन मोहनीय की सत्ता/क्षय को जानना हमारे वश की बात नहीं

अब दूसरी बात यहाँ पर है। दर्शनमोह व चारित्र-मोह क्या है? उसे हम आगम से जान रहे हैं। हमें उसका क्षयोपशम हुआ कि नहीं, उसका ज्ञान इस अवस्था में 'न भूतो न भविष्यति'। आगम यह कहता है कि दर्शन-मोहनीय व चारित्रमोहनीय वह कर्म है, जिसको हम इन आँखों से नहीं देख सकते, हाथों में टटोल कर छू नहीं सकते, उसके पास कोई गंध नहीं, जो अपनी नासिका ग्रहण कर ले। छदमस्थ के लिए, हमारे जैसे जो मंदबुद्धि वाले हैं क्षायोपशमिक ज्ञान के साथ चलने वाले उनके लिए वह अमूर्त जैसे हैं। माईक्रोस्कोप में भी दिखने वाले नहीं, फिर हम कैसे जानें कि हमारे दर्शनमोहनीय का क्षय/उपशम/क्षयोपशम हुआ कि नहीं हुआ? कोई कहे कि जब तक कर्म का उपशमादि नहीं होगा तब तक चारित्र लेना बेकार है, क्योंकि उसमें समीचीनता तभी आ सकती है जब दर्शनमोहनीय का क्षय/उपशम/क्षयोपशम हुआ हो। इसका ज्ञान हो तो चारित्र लें, क्योंकि मिथ्याचारित्र तो हम अंगीकार कर नहीं सकेंगे, महाराज! अरे भाई सम्यकचारित्र कब धारण करोगे? सम्यकदर्शन की पहचान आ जाये तब सम्यक्चारित्र पहिचान में तभ आ सकेगा जब दर्शनमोहनीय की आपको पहिचान हो। वह होती नहीं तो बड़ी उलझन है। आचार्य कहते हैं उलझन तो तुम्हारी है। यह उलझन की बात ही नहीं, रुचि की बात है। दर्शनमोहनीय के क्षय/उपशम/क्षयोपशम के जानने का थर्मामीटर आप ढूंढना चाहोगे, तो न मिला है, न मिलेगा। यह दिव्यज्ञान का ही विषय है कि किसके पास दर्शनमोहनीय का क्षय/उपशम/क्षयोपशम है? किसके पास उदय है? बाहर से दिखना चाहिए सच्चे देव गुरु-शास्त्र के प्रति समर्पण का भाव, मार्ग यदि है तो यह है, यही है। प्रतिमा के सामने जाते समय आप यही भाव रखते हैं कि ये ही भगवान् हैं, दूसरे नहीं हो सकते ऊपर-ऊपर से ही नहीं, अन्दर से भी उसी की शरण में जाऊँगा, तो मेरे कर्म की निर्जर। होगी, उसी के ऊपर श्रद्धा करूँगा तो मेरे कर्म की निर्जरा होगी, ऐसे दृढ़भाव सम्यग्दृष्टि के हैं। दूसरे के पास जाने की बात तो दूर, यहाँ आकर भी दूसरे भावों की शरण नहीं है। हे भगवान् ! मुझे कर्म निर्जरा करनी है, आप जैसा बनना है इसके लिए आपकी शरण में आया हूँ व तब तक आपकी शरण लूँगा, जब तक कि आपकी शरण में स्थिर नहीं हो जाऊँगा। यह बाहरी पहचान सम्यग्दर्शन की है। प्रशम, संवेग, आस्तिक्य अनुकम्पा ये चार जहाँ हो, वहाँ सम्यग्दर्शन बनता है। हमेशा उदासीन/शाँत रहना और चिन्तन करना कि संसार में क्या रखा है?

समझने के लिए घर में शादी हो रही है, बारात आई खूब धूमधाम चल रही है, शादी हो गई, बारात लौट गई, अब तो मजा नहीं आ रहा है, ऐसा लगता है जैसे भवन खाने को दौड़ रहा है। क्यों? भवन तो वही है, वही रंग रोगन, सब कुछ वही, लेकिन फिर भी अच्छा नहीं लग रहा। जिस प्रकार सब कुछ होते हुए भी वहाँ अच्छा नहीं लगता, उसी प्रकार सम्यग्दर्शन होने के उपरान्त फिर पंचेन्द्रियविषय अच्छे नहीं लगते। छोड़ो (अपना-अपना निवास स्थान) ईसरी चलो, क्यों? अच्छा नहीं लगता क्योंकि मार्ग है तो यही जीवन में संसारी प्राणी विषयों में सुख मान रहे हैं जबकि वस्तुत: विषयों में सुख है ही नहीं। परद्रव्यों को जो ढूँढ रहे हैं और उनमें सुख मान रहे हैं वे पश्चात्ताप करेंगे, क्योंकि परिग्रह महापाप माना जाता है। इसका फल जब मिलेगा तब मालूम पड़ेगा। आचार्य कहते हैं- 'बह्वारम्भपरिग्रहत्वं नारकस्यायुष:' बहुत आरम्भ और बहुत परिग्रह के माध्यम से नरकायु का आस्रव होता है। नरकों में जाना पड़ता है। अत: सम्यग्दृष्टि सोचता है कि हे भगवन! इनको कैसे ज्ञान मिले? इस प्रकार अपायविचय धर्मध्यान करता है। यह दूसरे को देखकर भी हो जाये व अपने को भी देखकर हो जाये। मैं रागद्वेष कब मिटाऊँ इसका अपाय अर्थात् दु:ख कब दूर होगा, अभाव कब होगा, सच्चा साधन मैं कब प्राप्त करूँगा, घर में शादी है, वैभव हो तो भी सोचता रहता है, सदैव उदासी छाई रहती है कि ये बाहरी लक्षण हैं। कई लोग कहते हैं महाराज हम चाहते तो नहीं थे फँसना, मगर 2-3 लोगों ने मिलकर फँसा दिया। अच्छा आप कुछ कहकर हमें मत फँसाओ हम जानते हैं ऐसे थोड़े ही फँसाया जाता है, मुनिवत् बैठ जाओ देखें कौन फँसाता है? ऊपर से ना-ना और अन्दर से हाँ-हाँ बस जरा सी अभिव्यक्ति कर दी। सम्यग्दर्शन, ज्ञान होने के उपरान्त वह स्वयं विषय कषायों में फँसना नहीं चाहेगा, और उसे कोई फँसा नहीं सकेगा, फँसा भी ले तो कब तक फँसायेगा? एक न एक दिन उठकर बाहर आ ही जाएगा। मैं अपनी आँखों से देख लूँ कि-

दर्शन मोहनीय का क्षय हुआ कि नहीं, इस प्रकार का जीवन में कभी भी प्रयास नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह सूक्ष्म परणति है जिसे हम इन आँखों से (क्षायोपशमिक ज्ञान से) पकड़ नहीं सकते।

सम्यग्दर्शन होने के उपरान्त वह स्थायी बना रहे यह भी कोई नियम नहीं। दीक्षा ली, एक साथ रत्नत्रय को प्राप्त कर लिया और अन्तर्मुहूर्त के अन्दर नीचे आ गये। कोई पाँचवें, कोई चौथे, कोई प्रथम गुणस्थान में आ गया और जीवनकाल पर्यन्त जो चर्या ग्रहण की थी वह निर्दोष पल रही है। अन्दर घटना बढ़ना होता है, वह जानना तो दिव्यज्ञान का विषय है। इसलिए हमें तो यही ध्यान रखना चाहिए कि रागद्वेष हमारे लिए अभिशाप है और रागद्वेष से अतीत होना ही वरदान है, उसी की शरण लेंगे, उसी का प्रयास करेंगे, उसी की साधना करेंगे, यही बनाये रखो तो भी पर्याप्त है। अत: चारित्र अंगीकार करते समय सम्यग्दर्शन है या नहीं यह शंका नहीं करना चाहिए।

आप चारित्र के लेते समय ऐसी शंका करते हो कि सम्यग्दर्शन है या नहीं है तो हम यह कहते हैं कि आप जो स्वाध्याय करते हो और यदि सम्यग्दर्शन नहीं है तो स्वाध्याय परम तप कैसे होगा? सम्यग्दर्शन होगा तो स्वाध्याय परम तप है और तप भी इसे मुनियों की अपेक्षा से कहा है। आपका भी है, लेकिन आपका षट्कर्म है और आपका भी षट्कर्म तब बन सकता है, जब आपने मूलगुण धारण कर लिए हों और षट्कर्म तो पंच अणुव्रत की सुरक्षा के लिए हैं। पाँच अगुव्रत तो आपने लिए नहीं, तो षट्कर्मों का यह स्वाध्याय आपका षट्कर्म भी नहीं माना जाएगा और षट्कर्म नहीं माना जाएगा तो इससे असंख्यात गुणी निर्जरा होगी कैसे? तप होगा कैसे? अथात् यदि सम्यग्दर्शन का पता नहीं है, तो स्वाध्याय भी सम्यग्ज्ञान की कोटि में नहीं आ सकेगा। यदि एक तरफ शंका करते हो (चारित्र के क्षेत्र में), तो दूसरी तरफ भी तो (ज्ञान के क्षेत्र में) शंका हो जाएगा और यदि जीवन भर ऐसा निर्णय नहीं हुआ तो फिर? जीवन भर पढ़ते-पढ़ते निकल गया कोई रिजल्ट ही नहीं आ रहा है और हम पढ़ते जा रहे हैं, पढ़ते जा रहे हैं। यह तो समझ में नहीं आ रहा कि ऐसी कौनसी कक्षा है एक साल की, दो साल की, तीन साल की है या जीवन भर की है? इस जीवन में कोई कक्षा बदलेगी या नहीं? हमारी समझ में नहीं आता कि जीवन पर्यन्त एक ही कक्षा में रहें। अर्थ यह है कि अपनी बुद्धि जहाँ तक पहुँचती है वहाँ तक पर्याप्त है जो अपनी बुद्धि गम्य पहचान के लिए प्रशम, संवेग, अनुकम्पा, आस्तिक्य है। यही तत्त्व है, यही सम्यक्चारित्र है। इसके अलावा अन्य लौकिक क्रियाओं को जो चारित्र कहते हैं, वह सम्यक्चारित्र नहीं है। सम्यक्चारित्रत तो वही है जो रागद्वेष को मिटाने का साधन है, पंच पापों से निवृत्ति रूप ही चारित्र है। इस प्रशमादि चार लक्षणों को लेकर ही सम्यग्दर्शन की पहचान, हम बाहर से कर सकते हैं। भीतरी पहचान तो जिसने कर्म को जाना है, कर्म के क्षयोपशम के बारे में जानने की क्षमता है, ऐसे जो (अवधि/मन:पर्यय/केवलज्ञान का धारी है) वही जान सकता है इसके अलावा अन्य किसी को सम्भव ही नहीं, ऐसा स्पष्ट आगम का उल्लेख है। इतना ही सोच लेना चाहिए ज्यादा नहीं, यदि हम ज्यादा शंका करेंगे तो हमारी मति विभ्रम में पड़ जाएगी और दूसरों की मति को भी विभ्रम में डाल देंगे।

यह अर्थ समझ लेना चाहिए कि चारित्र रागद्वेष की निवृत्ति के लिए लिया जा रहा है। इसी चारित्र की शरण में हमको जाना है, चारित्र लेना है। जीवन का लक्ष्य ही यही होना चाहिए कि चारित्र लेना है। रागद्वेष को मिटाने के लिए। रागद्वेष को मिटाने के लिए जिन पदार्थों को लेकर के रागद्वेष उत्पन्न हो रहे हैं, उन पदार्थों से मन, वचन, काय से कृत-कारित अनुमोदना से जब तक सहर्ष त्याग नहीं होगा, ध्यान रखिये तब तक रागद्वेष के मिटने का कोई सवाल ही नहीं। यह औषधि है, रोग मिटाने के लिए, रागद्वेष मिटाने के लिए चारित्र लेना ही औषधि है। रागद्वेष तब तक नहीं मिटेंगे जब तक आप अपने में लीन नहीं होंगे। मन बाहर लीन हो रहा है, क्यों? क्योंकि बाहर मन रखा है, माया रख रखी है, माया से कहा तुम हमारी नहीं और इसके लिए मन मानता नहीं। सम्यग्दृष्टि का पुरुषार्थ बहुत बड़ा है। संसारी प्राणी अनन्त काल से पर पदार्थ का सहारा लेकर आ रहा है, सम्यग्दृष्टि उस पर कुठाराघात कर देता है। अज्ञान दशा में जब जो स्थिति थी, जोड़ लिया, अब ज्ञान उत्पन्न हो गया है, अब कोई आवश्यकता नहीं। दवाई बहुत ढंग से पिलाई जाती है, हाथ पैर पकड़ करके भी, बेहोश करके भी। चारित्र के क्षेत्र में भी ऐसा ही प्रयास करना पड़ेगा। वस्तुत: चारित्र के क्षेत्र में जल्दी पग नहीं उठते, परिश्रम होता है, लेकिन यही परिश्रम एक दिन मंजिल तक पहुँचा देता है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र को अपनाना ही मनुष्य जीवन की सफलता है। यदि यह नहीं, तो सम्यग्दर्शन-ज्ञान तो नारक, तिर्यंच गति में भी होता है। लोग चारित्र को प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन क्षेत्र का, गति का ऐसा सम्बन्ध पड़ चुका होता है कि वहाँ से अन्यत्र नहीं जा सकते, लेकिन आपके साथ ऐसा नहीं है। बहुत गुंजाइश है आपके साथ। विषयों के क्षेत्र में जब आप शक्ति से बाहर कूदने का साहस रखते हो तो वीतरागता के क्षेत्र में शक्ति के नहीं होते हुए भी कूदना चाहिए। लेकिन लगता है कि लोग क्या कहेंगे? सबसे बड़ी बीमारी चारित्र के क्षेत्र में यही है कि देखो अच्छा! भगत जी आ गये (श्रोता समुदाय में हँसी) थोड़ा अभिषेक पूजन करें तो लोग यही कहेंगे बड़े भगत हैं, तो वह सहन नहीं होगा, लेकिन ऐसा नहीं, कब तक पीछे रहोगे। दुनिया आपको ऐसा कहती है, अत: क्या आप अपना स्वभाव प्राप्त करना छोड़ दोगे? स्वभाव अपनी चीज है, रागद्वेष नहीं। स्वभाव की ओर जाते समय दुनिया नियम से बहकायेगी। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव सब मिल चुके हैं, द्रव्य आपका, क्षेत्र श्रेष्ठ सामने दिख रहा है पारसनाथ हिल, अनंतानंतसिद्ध परमेष्ठी का धाम, इससे बढ़कर कौन-सा क्षेत्र? एकमात्र अन्दर की अलार्म घंटी बजने की देर है और अन्दर का भाव अपने आश्रित है। रागद्वेष छोड़ना है जीवन में चारित्र का सहारा लेना है।

बधाई

श्री रोहित कुमार जैन पुत्र श्री विजय कुमार जैन, अलवर को सामाजिक अपवर्जन एवं अन्तर्वशी नीति-यू.जी.सी. (विश्वविधालय अनुदान आयोग) अध्ययन केंद्र (U.G.C. Centre For Study of Social Exclusion & Inclusive Policy) का निदेशक (Director) बनाया गया है। रोहित कुमार जैन, समाजशास्त्र विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय में सहायक आचार्य के पद पर कार्यरत हैं। यह केंद्र सामाजिक अपवर्जन एवं अन्तर्वशी नीति से जुड़े मुद्दों पर शोध कार्य करता है। मुख्यधारा से बाहर के समाज को मुख्यधारा में लाने के लिए एवं सामाजिक नीतियों के सफल क्रियान्वयन के लिए उच्च स्तरीय शोध के लिए यह केंद्र जाना जाता है। आपके द्वारा हाल में भगवान महावीर के 2550वें निर्वाणोत्सव पर विश्वविद्यालय में 'जैन धर्म में पर्यावरण चेतना' विषय पर एवं 'वर्तमान में वर्धमान' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करवाया, जिसमें देश के विभिन्न प्रान्तों से विषय विशेषज्ञ, शोधार्थी, समाज के विद्वतजन शामिल हुए।

आपका शोध मुख्यत: धर्म दर्शन धर्म का समाजशास्त्र, घुमन्तु समुदाय, कच्ची बस्तियों के अध्ययन पर केंद्रित है। पूर्व में भी आपको महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन, उदयपुर द्वारा अकादमिक श्रेष्ठता के लिए 'भामाशाह अवार्ड' से नवाजा गया है। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा आपको शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

श्री अभिषेक जैन सुपौत्र डॉ. श्री पदम चंद जैन एवं सुपुत्र श्री संजीव जैन-श्रीमती निधि जैन (तालचिड़ी वाले) का लेफ्टिनेंट इन इंडियन आर्मी में चयन होने पर अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा आपको शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका के फरवरी-2024 के अंक में श्री अभय कुमार पनवेलकर - नागपुर के विचार और श्री अमीर चन्द जी जैन के साक्षात्कार लेख को पढ़ने का अवसर मिला, जिससे समाज में व्याप्त चिन्ता को अनुभव किया कि पल्लीवाल समाज के अधिकतर वरिष्ठ सदस्य आज हमारी महासभा की कार्यप्रणाली के विषय अन्तर्गत किस प्रकार चिन्तित हैं और महासभा से क्या अपेक्षा रखते हैं। कुछ समय पूर्व पत्रिका संयोजक ने भी समाज के सदस्यों से इसी विषय पर विचार आमंत्रित किये थे, आज बैठे-बैठे विचार आया कि हमारे पूर्वजों ने महासभा का जब गठन किया था तब क्या इस परिणति का विचार भी हुआ होगा कि एक दिन अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा की कार्यकारिणी की मीटिंग्स अध्यक्षजी और महामन्त्रीजी अलग-अलग निष्पादित करेंगे और मुख्य पदाधिकारियों के बीच कार्यकारिणी के सदस्य भ्रमित होते रहेंगे कि कौनसी मीटिंग अटेण्ड की जाये।

आज नए पदाधिकारियों का निर्वाचन हुए तक़रीबन 15 माह हो गए हैं लेकिन क्या समाज के सामने महासभा ने कोई ठोस सोच प्रस्तुत किए है अथवा कोई ROAD MAP की संरचना की है। मुझे भी एक कार्यकाल सम्पादित करने का अवसर समाज ने दिया था और बताते हुए बहुत ही गौरवान्वित हूँ कि मुझे ही केवल नहीं, बल्कि सम्पूर्ण उस कार्यकाल की समस्त कार्यकारिणी को समाज ने निर्विरोध चयन कर कार्य करने का अवसर दिया था। हर मंडल में हर संस्था में सदस्यों के मध्य विचारों में मतभेद होता है लेकिन सब मिल बैठकर उन को दूर करने पर विचार विमर्श करते हैं और समाधान निकलते हैं, यदि नहीं निकल पाते हैं तब उसका भी हमारे यहाँ विकल्प हो सकता है कि दोनों पक्ष मिलकर कार्यकारिणी की मीटिंग बुलाएं और उसमें समाज के वरिष्ठ गणमान्य सदस्य और पूर्व अध्यक्ष, महामंत्री और अर्थमंत्री को आमंत्रित करें और अपनी PROBLEMS को शांतिपूर्ण तरीके से DISCUSS कर हल निकाले, हर PROBLEMS का हल संभव है यदि हम अपने वरिष्ठों को निवेदन कर और अपने अहम् को त्याग कर समाज हित में निर्णय लें।

मैं श्री भगवन से प्रार्थना करता हूँ कि हम सब मिलकर पल्लीवाल समाज के हित में उपजे हुये गतिरोध से निजात पायें और महासभा के बचे हुए कार्यकाल के समय को स्वर्णिम बनाएं। मेरे इन विचारों से यदि किसी के मन को ठेस पहुचें तो तो 'मिच्छामि दुक्कड़म'

सुमत प्रकाश जैन, *इंदौर*
पूर्व अध्यक्ष, अ.भा.प. जैन महासभा

भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन

(सुपुत्र स्व. श्री हरीशचन्द्र जी जैन)

(पुण्यतिथि : 21.5.2017)

स्व. ई. श्री मोहित कुमार जी जैन

(सुपुत्र स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन)

(पुण्यतिथि : 9.8.2018)

हम आपको सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए
भगवान वीर से आपकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धावनत

श्रीमती मिथलेश जैन
(धर्मपत्नी)
डॉ. मेघा जैन-डॉ. पीयूष जैन
(पुत्री-दामाद)

श्रीमती मिथलेश जैन
(माँ)
डॉ. मेघा जैन-डॉ. पीयूष जैन
(बहन-बहनोई)

मोहित कुमार जैन ट्रस्ट (पंजि.)

ए/165, पालम एक्सटेंशन, सेक्टर 7, द्वारका, नई दिल्ली-110077
दूरभाष : 9599660709, 9599230509

BLUE STAR

Mr.Amit Jain (Shanky)
Jaipur (Kherli)

Mr.Kranti Jain
Jaipur (Kherli)

Mr.MohanKumar
Jaipur

ATREO

ATREO INTERNATIONAL

An Authorised BLUESTAR Channel Partner:-

DealsIn:- AirConditioning& RefrigerationProducts

Split|DeepFreezer|WaterCooler| Ductable|ColdRoom|CoolingTower|VRF

Ind.Chiller |AirCooler| WaterPurifier| AirPurifier

Exclusive Showroom : 11/61, Kaveri Path, Mansarovar, Jaipur - 302020 (Raj.)
Ph : 9785105777, 9636607999, 9828105777

Reg. Office : P. No. 08, Sumer Nagar Vistar, Mansarovar Ext., Jaipur - 302020
Ph : 9785105777, 9636607999, 8561030303

Power Retailer No. 1 in North Region FY-2021-22

Power Retailer No. 1 in North Region FY-2022-23

E-mail : amit@atreointernational.com // Visit us : www.atreointernational.com

संस्मरण : आचार्य श्री विद्यासागर जी

ऐसे हटता है राग

सन् 1979 की बात है। उन दिनों मैं सरकारी कार्य में नहीं आया था, अत: अपने मूल निवास स्थान आगरा में ही था। होली का दिन था। उससे पूर्व संध्या को ही मैं कहीं बाहर से आया था। तभी मुझे ज्ञात हुआ कि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज पिछले कुछ दिनों से आगरा में ही थे तथा दो दिन पूर्व ही वे आगरा के निकट आगरा-मथुरा रोड़ पर स्थित सिकंदरा चले गये। आचार्यश्री के बारे में पहले से ही काफी कुछ सुन रखा था कि वे बहुत ज्ञानी हैं, चारित्र में पक्के हैं, बिना किसी विज्ञापन के विहार करते हैं, आदि आदि।

उसी समय का मुझे उनका एक प्रसंग याद आया। एक बार आगरा के छीपीटोला क्षेत्र में आचार्यश्री ससंघ ठहरे हुए थे। एक दिन वहाँ के बड़े मन्दिर में आचार्यश्री बैठे हुए थे। आम दिनों की तरह मन्दिर में दर्शनार्थी सामान्य रूप से आते जाते रहे। एक-दो व्यक्ति को छोड़ सभी दर्शन करके चले जाते। अचानक आचार्यश्री का हाथ अपने सिर पर गया तथा उन्होंने अपने केशलोच प्रारम्भ कर दिये। वहाँ बैठे लोग आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने आचार्यश्री से निवेदन किया कि आपने यदि कुछ पहले कहा होता तो केशलोच के इस समारोह को बड़े पांडाल में भव्य समारोह के रूप में आयोजित किया जा सकता था। बड़े-बड़े पोस्टर छपवाये जा सकते थे, तथा काफी लोग इकट्ठे होते। लेकिन आचार्यश्री अपने कार्यक्रम में व्यस्त रहे। फिर उपस्थित लोगों ने अनुरोध किया कि आप कुछ क्षण तो रुक जायें जिससे आस-पास खबर कर दें। उपस्थित लोग हड़बड़ाहट में उठे तथा इधर उधर समाज के लोगों को खबर करते रहे कि आज आचार्यश्री का केशलोच हो रहा है। यह खबर शीघ्र ही समाज में फैल गई। कुछ ही देर में लोग इकट्ठे भी हो गये। लेकिन जब तक लोगों को खबर लगती तथा वे आचार्यश्री के पास आते, तब तक तो आचार्य श्री केशलोच पूरे कर चुके थे। उन्होंने अपना आशय उपस्थित जन समूह को बता दिया कि यह तो मुनि का एक नियमित कार्य है, इसमें कैसा प्रचार, कैसा विज्ञापन। तदुपरान्त एकत्रित जन समूह चाहता था कि महाराजश्री के केश यमुना नदी में प्रवाहित किये जायें। इसके लिए, बालों को ले जाने के लिए बोली लगाई जाये। लेकिन इस कार्य में आचार्यश्री ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। वे अपना कार्य करके अलग हट गये। यहाँ आचार्यश्री यह स्पष्ट कर गये कि परम्परागत मुनिधर्म में केशलोच की यही विधि है। इस कार्य के लिए प्रचार-प्रसार साधु के लिए उचित नहीं है।

इस घटना के कुछ दिनों बाद की ही बात है। छीपीटोलाबासियों को यह तो महसूस हो रहा था कि आचार्यश्री ससंघ अब अधिक दिन छीपीटोला नहीं रहेंगे। क्योंकि उन्हें शहर/नगर में रहना पसंद नहीं है। आचार्यश्री ने कहीं ऐसे स्थान पर, विहार करने का निश्चय किया जहाँ भीड़भाड़ न हो। एक दिन सुबह अचानक आचार्यश्री ससंघ (उस समय उनके संघ में शायद मुनि कोई नहीं था, लगभग दस-बारह ब्रह्मचारी तथा एक या दो क्षुल्लक थे) विहार कर गये। समाज के लोग सोचने लगे कि शायद अभी तक शौच से नहीं लौटे होंगे। आचार्य श्री शौच के लिए नदी पर ही जाते थे। लेकिन बहुत समय तक नहीं लौटे तो लोगों में खलबली मची। कुछ समय बाद पता चला कि वे यमुना पार स्थित भगवान नेमिनाथ मन्दिर (नेमिनाथ उद्यान) में विराजमान हैं। श्रद्धालु वहाँ भी पहुँचना प्रारम्भ हो गये। श्रद्धालुओं का आचार्यश्री से फिर वही निवेदन/विनती की कि आपने कुछ पहले तो बताया होता। एक भव्य शोभायात्रा निकाली जा सकती थी, कुछ बैण्डबाजे भी साथ में होते। आप तो बिना कुछ बताये ही विहार कर जाते हैं। आचार्यश्री का फिर वही मौन संदेश कि इस प्रकार के विहार की क्रिया एक नियमित चर्या है, जिसमें न तो किसी बैण्डबाजे की जरूरत है और न किसी शोभायात्रा की। सामान्य परिस्थितियों में साधु अमुक स्थान को लक्ष्य करके विहार नहीं करते, यही आर्ष मार्ग है।

श्रद्धालुओं ने पुन: निवेदन किया कि जो कुछ हुआ वह तो हो चुका। आगे से आचार्यश्री अपने कार्यक्रम पूर्व-निर्धारित कर दें कि कहाँ जाना है। लेकिन अचानक एक दिन फिर वही हुआ जिसका श्रद्धालुओं को डर था। आचार्यश्री अचानक कहीं विहार कर गये, बिना बताये। फिर उनकी खोज शुरू हो गई। सामान्यत: मुनिजन राजमार्गों के निकट नगरों/गाँवों में ठहर जाते हैं। लेकिन आचार्यश्री तो राजमार्ग से हटकर छोटे से गाँव में जा पहुँचे। आचार्यश्री की कुशलता के समाचार पा लेने के बाद जैन समाज को शान्ति मिली।

ये सब घटनायें दिमाग में एक साथ दौड़ गईं। तुरन्त ही मन में इच्छा हुई कि आचार्यश्री के दर्शन अवश्य किये जायें। सिकन्दरा हमारे घर से सिर्फ सात-आठ किलोमीटर ही तो है।

अत: मन में तय किया कि वहाँ जाकर दर्शन करूँ। इसी उद्देश्य से मैं अपने बड़े भाई समान श्री वीरेन्द्र कुमार जी जैन के पास पहुँचा तथा अपनी इच्छा जाहिर की। भाई साहब बहुत ही धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति हैं तथा बड़े मुनिभक्त भी हैं। उन्होंने मुझे बताया कि वे तो सिकन्दरा से चले गये तथा आज शाम उन्हें मथुरा के निकट स्थित जम्बूस्वामी के निर्वाण क्षेत्र चौरासी में होना चाहिए। उन्होंने मेरा आशय जानकर कहा कि कोई बात नहीं, हम चौरासी चलकर आचार्य श्री के दर्शन करेंगे। मैंने उनसे कहा कि होली का दिन है, यह सब कैसे सम्भव हो जायेगा। उन्होंने उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि होली से कोई दिक्कत नहीं है, तथा साथ चलने का कार्यक्रम भी बना लिया।

अगले दिन हम निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मथुरा-चौरासी पहुँचे। उधर पता चला कि आचार्यश्री तो कल शाम को ही गोवर्धन (मथुरा के निकट गाँव, श्रीकृष्ण की लीलास्थली) चले गये। हमने आपस में विचार किया कि जब उनके दर्शन करने को आगरा से 60 कि.मी. चलकर आ ही गये हैं तो 14-15 कि.मी. और सही। अत: हम फिर बस द्वारा गोवर्धन के लिए चल दिये। हालांकि हम आगरा से प्रात: छह साढ़े छह बजे निकल दिये थे तब भी बस बदलने करने के कारण गोवर्धन पहुँचते-पहुँचते ग्यारह बज चुके थे। हम शीघ्र ही बस से उतर कर जैन मन्दिर की और दौड़ पड़े। लेकिन वहाँ पर भी वही निराशा हाथ लगी। उधर पता चला कि आचार्य श्री तो अभी-अभी आहार करके कहीं विहार कर गये। चूँकि गोवर्धन में जैन बस्ती न के बराबर है, अत: वहाँ पर निश्चित पता न चल सका कि वे किस ओर विहार कर गये हैं।

इस प्रकार की आचार्यश्री की प्रवृत्ति देखकर मन उनके दर्शन करने को और अधिक व्याकुलित हो चला। हम शीघ्र ही गोवर्धन के तिराये पर आये। वहाँ कुछ गाँव वालों से पता चला कि वे वहाँ से छ:-सात कि.मी. तक ही पहुँच पाये होंगे। अति-उत्साहित होकर तुरन्त हमने एक ताँगा (घोड़ागाड़ी) किया तथा उस दिशा की ओर चल पड़े जिधर आचार्यश्री के जाने की बात गाँव वालों ने बताई थी। हमने कोई पांच कि.मी. रास्ता ही तय किया होगा कि अचानक थोड़ी दूरी पर कुछ ब्रह्मचारी वेश में लोग दिखाई दिये। हमें कुछ सन्तोष हुआ कि अब हम मंजिल तक पहुँचने वाले ही हैं। थोड़ा आगे चल कर ताँगा रुकवा दिया तथा पैदल पैदल चलने लगे। हमने जो दृश्य देखा ऐसा आज तक कभी देखने का सुअवसर नहीं मिला। हमने देखा कि सड़क के दाहिनी ओर खेत में कुछ अन्दर एक पेड़ के नीचे एक साधु ध्यान-मुद्रा में विराजमान हैं, थोड़ा आगे एक अन्य पेड़ के नीचे एक अन्य ब्रह्मचारी हैं। इस प्रकार सड़क के दोनों ओर आचार्यश्री के संघ के सभी शिष्य-साधु/त्यागी/ब्रह्मचारी किसी न किसी पेड़ के नीचे ध्यानमुद्रा में बैठे हैं। सबों को नमस्कार करते हुए हम आगे बढ़े। तभी सड़क के बाहिनी ओर कुछ अन्दर पेड़ के नीचे आचार्य श्री को ध्यान मुद्रा में देखा। यह सबों के सामायिक का समय था। हम सभी आचार्यश्री को नमस्कार कर उन्हीं के निकट बैठ गये। आचार्यश्री हमारे आगमन से अनभिज्ञ थे। वे ध्यान में ही रहे आये। इन युवा आचार्यश्री को एक टक होकर हम निहारते रहे और मन ही मन प्रसन्न होते रहे कि आखिर हमने उनके दर्शन कर ही लिए। उनकी ध्यानमुद्रा देखकर हमको शास्त्रों में वर्णित मुनि की दशा की बात याद आती है। शास्त्रों में वर्णित मुनि की साधना/तपस्या/ध्यान स्थिति को हम अपनी आँखों से देखकर स्वयं को धन्य मान रहे थे। खेतों-जंगलों में मुनिसंघ विराजमान है जहाँ एकान्त के सिवाय कुछ नहीं है। ऐसे स्थान पर मुनि एकाग्रचित्त होकर ध्यान लगा रहे हैं। जिस प्रकार का दृश्य हमने देखा उसे मैं वर्णित करने में अपने आपको सक्षम महसूस नहीं कर पा रहा हूँ, लेकिन जो कुछ देखा, वह आज भी ज्यों का त्यों आँखों में समाया हुआ हैं।

हम आचार्यश्री को टकटकी बाँधकर निहारते रहे। कुछ समय बाद आचार्यश्री का ध्यान/सामायिक समाप्त हुआ। उन्होंने हम लोगों की ओर एक निगाह उठाकर देखा। हमने उन्हें बताया कि हम किस प्रकार वहाँ पहुँच पाये। आचार्यश्री चुप रहे आये। उसी समय एक अन्य व्यक्ति भी उनके दर्शनार्थ उसी प्रकार पहुँचे थे जिस प्रकार हम पहुँचे थे। उन्होंने आचार्यश्री से निवेदन किया कि आप हमें कुछ तो दिशा-निर्देश/ज्ञान दें। मुझे अभी अक्षरश: तो याद नहीं है। आचार्यश्री बहुत धीमे स्वर में बोले- शान्ति से जीवन यापन करें, विद्वेष हटायें, राग को कम करें आदि। आचार्यश्री फिर चुप हो गये। तभी वे सज्जन बोले कि महाराज! राग कैसे हटायें। आचार्यश्री ने हल्की मुस्कान ली और हाथ में पीछी लेकर खड़े हो गये। पीछी से अपने शरीर को हल्का पौंछते हुए (जीव राशि यदि कोई हो तो उसे हटाते हुए) बोले 'ऐसे हटता है राग' और वे इतना मात्र बोलने के साथ ही चल पड़े। उनके पीछे-पीछे संघ के अन्य साधु/ब्रह्मचारी भी चल पड़े। हम सब उन्हें टकटकी बाँधकर जाते हुए देखते रहे। जब वे आँखो से ओझल होने लगे हम वापस हो लिये।

-डॉ. अनिल कुमार जैन
बापू नगर, जयपुर

साक्षात्कार

महिला सशक्तीकरण

महिलाओं की उन्नति या अवनत्ति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनत्ति निर्भर करती है। स्वस्थ, सुखी और शांतिपूर्ण जीवन एक महिला का मूल अधिकार है, इसी के मध्य नजर 102 वर्षीय श्रीमती बर्फी देवी जैन (धर्मपत्नी स्व. श्री मंगतराम जी जैन) के विचार उनके स्वयं की मौजूदगी में दि. 3.3.2024 को उनके आवास पर उनके परिजनों के द्वारा मुझे बताए, लेकिन दुर्भाग्यवश दि. 21.3.2024 को उनका स्वर्गवास हो गया। पत्रिका सम्पादक मण्डल श्रीमती बर्फी देवी जैन को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके विचार पत्रिका के पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हैं।

-पारस जैन गहनौली, सह-संपादक

बर्फी देवी जी का जीवन परिचय–

श्रीमती बर्फी देवी जैन का जन्म 20.02.1922 को ग्राम कलवाड़ी, जिला अलवर राजस्थान में पिता कुन्दन लाल जी (पटवारी) व माताजी श्रीमती कपूरी देवी जी के यहां हुआ। श्रीमती बर्फी देवी जी ने उस समय की पांचवी कक्षा तक पढ़ाई की। आप चार बहनें एवं एक भाई स्व. श्री हजारीलाल जी जैन थे, आप पांच भाई बहनों में दूसरे नंबर की थीं। विवाह सन 1937 में स्व. श्री मंगतराम जी जैन गांव मौजपुर, तहसील लक्ष्मणगढ़, जिला अलवर राजस्थान में हुआ। इनके छः बेटे राजेंद्र प्रसाद जैन, दिनेश कुमार जैन, देवेंद्र कुमार जैन, अशोक कुमार जैन, सुधीर कुमार जैन तथा एक पुत्र विजेंद्र कुमार जैन का स्वर्गवास हो गया है और एक बेटी श्रीमती विमला जैन है। सभी बेटे एवं बेटी जयपुर में ही निवास करते हैं।

श्रीमती बर्फी देवी जी जैन के पति स्व. श्री मंगतराम जी जैन नौकरी के कारण जयपुर में सी-117, बापू नगर में रहने लगे। मंगतराम जी के बारे में रूंधे हुए गले से बताया कि वह धुन के पक्के थे, जो मन में ठान लिया उसको पूरा किया। ताउम्र रात-दिन समाज की सेवा में लगे रहे। स्व. मंगतराम जी बिरले व्यक्ति थे, जिन्होंने समाज को एक सूत्र में पिरोने का एवं समाज को संगठित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

स्व. श्री मंगतराम जी ने समाज सेवा के साथ-साथ दान और सहयोग की भावना भी खूब थी। उन्होंने श्री महावीरजी पल्लीवाल जैन धर्मशाला, श्वेताम्बर तीर्थ सिरस, पल्लीवाल जैन धर्मशाला खेरली तथा शिखरजी में एक-एक कमरे का निर्माण करवाया। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए उनके पुत्र श्री अशोक कुमार जैन ने भी कुण्डलपुर, नमोकार (पूणे), अयोध्या एवं नाकोड़ा पार्श्वनाथ भैरव धाम महावीर जी में भी एक-एक कमरे का निर्माण करवाया।

सामाजिक व धर्म में रूचि की जानकारी।

बचपन से ही परिवार से ऐसे संस्कार मिले कि हमेशा ही धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों के प्रति बहुत ही रुचि रहती थी और शादी के बाद तो मेरे पति स्व. श्री मंगतराम जी जैन जो समाजसेवी थे उनके साथ तो रुचि और बढ़ गई और एक दिन मेरे मन में भाव जागृत हुआ कि समाज के लोगों के लिए एवं बच्चों में धर्म के प्रति जागरूकता बढ़े इसके लिए मन में एक जैन मंदिर बनवाने के भाव मन में आए। यह बात मैंने मेरे पति के सामने प्रकट की, उन्होंने एक-दो दिन सोच-विचार कर कहा कि यह तो बहुत अच्छी बात है और उन्होंने मंदिर निर्माण की ठान ली।

सन 2001 में 48, शक्ति नगर, गोपालपुरा बायपास, जयपुर में एक 200 गज का एक भूखण्ड मंदिर के लिए क्रय कर लिया, जोकि समाज के सहयोग से निर्मित वर्तमान में श्री 1008 श्री चंद्रप्रभु दिगंबर जैन पल्लीवाल जैन मंदिर, शक्ति नगर में पल्लीवाल जैन समाज की धरोहर के रूप में जाना जाता है।

आप समाज से कुछ कहना चाहेंगीं।

वैसे तो अब मुझे दिखाई और सुनाई भी कम ही देता है परंतु कभी-कभी समाज के लोग यहां आते हैं तो बताते हैं और मुझे बहुत संतुष्टि भी है, साथ ही बहुत प्रसन्नता भी है कि मेरे पति स्व.श्री मंगतराम जी के द्वारा निर्मित श्री 1008 श्री चंद्रप्रभु दिगंबर जैन पल्लीवाल मंदिर, शक्ति नगर की गठित कमेटी ने मंदिर का संचालन बहुत सुंदर एवं सुव्यवस्थित कर इस धरोहर को संभाल रखा है। ■

श्रीमती गार्गी जैन (पल्लीवाल जैन समाज की महिला आईएएस) के विचार पत्रिका के पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हैं।

गार्गी जी आपके जीवन परिचय के बारे में बताएं।

मेरे दादाजी श्री महावीर प्रसाद जैन (ऑडिटर), मूल निवासी खेरली गंढ़ासिया के चार पुत्रों में सबसे बड़े पुत्र मेरे पिताजी श्री रविन्द्र कुमार जैन व माताजी श्रीमती संगीता जैन के यहां मेरा जन्म दि. 30.11.1989 को अलवर में हुआ। बचपन से मुझे पढ़ाई में रूचि थी। और extra curricular activities में भी मैं हिस्सा लेती थी। मैंने B.Tech MNIT, Jaipur से किया है। और एक साल Microsoft में Software engineer के रूप में काम किया है। उसके उपरान्त मैंने IAS की तैयारी की और दूसरे प्रयास में 45 रैंक पाया। बचपन से ही मेरे माता-पिता ने मुझे बहुत सपोर्ट किया है और आज मैं उनके कारण यहाँ तक पहुँची हुँ। वर्तमान में Director Employment & Training, Labor and Employment Department Gandhinagar (Gujarat) के पद पर कार्यरत हूँ।

क्या आप सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में रुचि रखती हैं?

मुझे सामाजिक और धार्मिक कार्यों में बहुत रूचि है, मैं JATF के माध्यम से समाज के बच्चों से जुड़े रहने की कोशिश करती हूँ जिससे उनका भविष्य सफलता की ओर अग्रसर हो।

आपके यहां तक पहुंचाने के लिए कैसे लगन लगी और महिलाओं को किस प्रकार चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

मुझे कुछ विशिष्ट चुनौतियाँ नहीं देखनी पड़ी क्योंकि मेरे माता-पिता हमेशा से मेरे साथ थे। जब मैंने जॉब छोड़ने का निर्णय लिया तो उनका पूरा समर्थन था। उनसे ही मैंने हमेशा सुना कि असफलता के बाद ही सफलता मिलती है।

क्या कैरियर के साथ-साथ युवा धर्म एवं समाज से भी जुड़े? इस पर आपके विचार।

कैरियर के साथ- समाज और धर्म से जुड़े रहने से एक positivity बनी रहती है। मैं आज यहाँ समाज की ही मदद से पहुँची हूँ। JITO से एवं पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति से मुझे पूरा सहयोग मिला। जब समाज हमारे लिये हमेशा आगे रहता है तो हमारा भी फर्ज है कि हम हमेशा समाज के काम में अग्रणी रहें।

आप घर और कार्यालय की जिम्मेदारियां को कैसे संतुलित करती हैं?

मैंने बचपन से ही घर में माता-पिता को एक साथ काम करते देखा है। मैं और मेरे husband भी मेरे साथ सभी जिम्मेवारियाँ निभाते हैं। इससे दोनों में संतुलन बना रहता है।

महिला दिवस (8 मार्च) पर आपका क्या संदेश है समाज को?

मैं सभी महिलाओं से कहना चाहूँगी कि जिंदगी की भागदौड़ में कुछ समय अपने लिये भी निकालिये। वो कीजिये जो आपको खुशी देता है। आपकी अपनी भी एक identity है, उसे भूलिये मत। जिंदगी एक बार मिली है, तो क्यों ना थोड़ा खुद के लिये भी जिये।

रात्रि में दिखाई नहीं देने की वजह निराश्रित जानवरों के साथ वाहनों की दुर्घटना आम बात है, जिसमें जानवरों के साथ वाहन चालक एवं वाहन में बैठे यात्रियों की मृत्यु के समाचार सुनते रहते हैं। इन्हें रोकने के लिए 'जीव दया रिफ़्लेक्टिव बैल्ट' को निराश्रित जीवों के गले में बांध दिया जाता है। इस बेल्ट के रिफ्लेक्शन से वाहन चालक को जीवों के होने का मालूम चल जाता है और दुर्घटना घटित नहीं होती।

विभिन्न शाखाओं को ये बेल्ट महामंत्री श्री महेश जी के द्वारा उपलब्ध कराई गई, शाखाओं ने निराश्रित मवेशियों और वाहन चालकों के सुरक्षा के लिए मवेशियों के गले में बांधी गई।

सफेदपोश शराबी

(सामाजिक जागरूकता के क्रम में व्यसन मुक्त अभियान को समर्पित एक लेख)

शराब पीना क्या यह व्यक्तिगत मसला हो सकता है ? यदि इसे व्यक्तिगत मान भी ले तो फिर शराब-बंदी समाजिक और सामुदायिक मसला क्यों बनता है ? प्रश्न बड़ा जटिल है लेकिन उत्तर उतना जटिल नहीं है। शराब पीना जरूर व्यक्तिगत हो सकता है लेकिन उसके प्रभाव उसको सामाजिक और सामुदायिक मुद्दा बनाते हैं, इसलिए शराब के सेवन पर समाज की चिंता जायज है। शराब न केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य, आर्थिकी, व्यक्तित्व विघटन का कारण बनती है अपितु दीर्घकालिक स्थिति में उसके पारिवारिक विघटन व सामाजिक विघटन का कारण भी बनती है।

खैर विषय बड़ा गंभीर है इस विषय के बहुत सारे आयाम हो सकते हैं। हाल ही में एक फ़िल्म देखने के दौरान एक शब्द जानने को मिला वह था 'SOCIAL DRINKER'। मेरा इस शब्द से यह पहला परिचय था। खोजने की कोशिश की तो मालूम चला की यह शब्द शराब पीने की आंशिक वैधता से सम्बंधित है। मूल रूप से इसका अर्थ है कि पार्टी, आयोजन के दौरान यदा-कदा (कभी कभार) शराब पीने वाले को SOCIAL DRINKER कहा जाता है। कहने सुनने में यह शब्द बड़ा ग्राह्य सा प्रतीत होता है लेकिन यह आदत कब जीवन की नियमित चर्या का अंग बन जाती है मालूम भी नहीं चलता है। शराब व्यक्ति कैसे पीना प्रारम्भ करता है इसके मूलभूत कारणों में से एक कारण 'सोशल ड्रिंकर' है जो आयोजनों में दिखावा करने, कोशिश करने, होड़ में, लाइजनिंग बनाने या किसी के आग्रह या दवाब में शराब का सेवन प्रारम्भ करते हैं। धीरे-धीरे कार्यक्रमों,आयोजनों से घर कब शराब पहुँच जाती है, मालूम ही नहीं पड़ता है। ज्यादातर हम इस विषय पर जब चिंता प्रकट करते हैं तब तक यह व्यक्तिगत, सामाजिक और पारिवारिक जीवन को शराब खत्म कर जाती है। आज आयु का कोई भी वर्ग अछूता नहीं है जिसमें शराब एक प्रमुख व्यसन बनकर ना उभरा हो। यह बड़ा दुर्भाग्य है कि शादी विवाह में, विवाह स्थल के अंदर शराब पीना गुनाह है लेकिन बाहर पार्किंग में खड़ी गाड़ियों की डिग्गी में बार लगाते मिल जाएंगे खैर आजकल ऐसे वाक्यात काफी देखने को मिल जाते हैं।

फिर भी एक आयाम जिस पर सार्वजनिक चर्चा आवश्यक है वह है 'सफेदपोश शराबी'। इसमें सफेदपोश से तात्पर्य उन लोगों से है जो समाज, वर्ग, सामाजिक मंच, मण्डल, जाति आदि का नेतृत्व करते हैं या उनसे जुड़े प्रमुख लोग, जिनके धर्म में शराब की पूर्णतया मनाही है। अब आप इस पूरी टर्म की व्याख्या को समझेंगे तो स्पष्ट होगा कि ऐसे समाजिक या धर्मिक या सामुदायिक नेतृत्व प्रदान करने वाले लोग जिनके धर्म में तो शराब का निषेध है लेकिन वो शराबी हैं जिनमें अधिकतर सोशल ड्रिंकर हैं (मेरे इस संदर्भ का उल्लेख केवल मात्र उस विचलन को इंगित करना है, जिसमें नेतृत्व का कुछ हिस्सा 'सफेदपोश शराबी' की श्रेणी में आता है) आप बोलेंगे यह व्यक्तिगत मसला है इसमें सार्वजनिक चर्चा की आवश्यकता क्यों है ? लेकिन हम उन लोगों की बात कर रहे हैं जो उन धार्मिक, समाजिक मंचो का नेतृत्व कर रहे हैं जिन मंचों से शराबबंदी का नारा लगाया जाता है, जहां शराब पूर्णतया प्रतिबंधित है। इस बात से यह स्पष्ट है कि यदि उन मंचों का नेतृत्व किसी भी रूप में ऐसे व्यक्ति के हाथ में होगा तो निश्चित ही उनके सामाजिक धार्मिक नियमों का उल्लंघन है। दूसरा नेतृत्व अधिकतर लोगों के लिए आदर्श होता है। ऐसे में कैसा आदर्श स्थापित होगा ? इस चर्चा में यहां ये प्रश्न उठना आवश्यक हो गया कि ऐसी क्या आवश्यकता हो गई कि इन मंचों का नेतृत्व ऐसे लोगों को देना पड़ा जो धार्मिक होने का दावा तो करते हैं लेकिन शराबी हैं ? इसका मूल कारण है कि हमने नेतृत्व में 'धन' को सर्वोपरि मान लिया। धन के प्रभाव में बाकी सारे गुण 'द्वितीयक' हो जाते हैं। मेरा यहां यह कहने का तात्पर्य बिल्कुल नहीं है कि धन का महत्व नहीं है लेकिन उसका महत्व साधन के रूप में है ना कि साध्य के रूप में। यदि उसे साध्य मानेंगे तो निश्चित ही हमें हमारे सामाजिक सांस्कृतिक मानदंडों से हमको समझौता करना पड़ेगा और एक समय ऐसा आएगा कि हमारे सामाजिक सांस्कृतिक मानदंड पूर्णतया बदल जाएंगे। आज हम ऐसे युग मे जी रहे हैं जहां अधिकता बिना मूल (ओरिजनल) के प्रतिलिपीयों (फोटोकॉपी) की है, इस युग में हमारा सहारा हमारे धार्मिक सामाजिक मानदंड ही है जो हमारे दिशा सूचक यंत्र है, यदि ये दिशा सूचक यंत्र खो जाएंगे या विस्मृत हो जाएंगे तो निश्चित ही

हम दिशा विहीन हो जाएंगे। इसलिए आज हमें हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक मानदंडों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है।

हम महासभा का अमृत महोत्सव बना रहे हैं, अच्छी बात है लेकिन कोरी बातें करने से समाज का भला नही हो पाएगा। मैंने महासभा के अमृत महोत्सव कार्यक्रम की सूची में व्यसन मुक्त अभियान को देखा, अच्छा व सराहनीय कदम है। लेकिन क्या हम ग्रामीण नेतृत्व, शहरी नेतृत्व, शाखा नेतृत्व, केंद्रीय नेतृत्व, कार्यकरणी, युवक मण्डल व अन्य प्रमुख पदाधिकारियों से व्यसन मुक्त अभियान को प्रारंभ नहीं कर सकते? क्या हमें ऐसी जन जागरूकता की आवश्यकता महसूस नहीं होती कि कोई भी व्यसनी पदाधिकारी ना बन पाए? पर इन कामों के लिए साहस और आलोचना सहने की झमता चाहिए। आदर्श स्वयं से स्थापित करने होंगे, उन्हें दूसरे लोगो में स्थापित करने की अपेक्षा स्वयं में स्थापित कर प्रेरणा बनना होगा, क्योंकि नेतृत्व हमेशा अधिकांश के लिए प्रेरणा होता है।

अंत में एक महत्वपूर्ण बात, गुणीजनों के अनुसार इस युग में इस धर्म में पैदा होना हमारे पुण्योदय का परिणाम है, सौभाग्य है। लेकिन यदि फिर भी हमें व्यसन मुक्त अभियान चलाना पड़े तो निश्चित ही सोचनीय विषय है। यह अभियान चलाना गलत नहीं है लेकिन इस अभियान को चलाने की आवश्यकता क्यों महसूस हुई है? इस पर सम्पूर्ण समाज का सामुदायिक सकारात्मक चिंतन, मनन आवश्यक है।

-रोहित कुमार जैन (अलवर)
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग
राज. विश्वविद्यालय, जयपुर

जो घसीटे जा रहे हैं वह सिर्फ बोझ हैं

एक रविवार की सुबह, एक अमीर आदमी अपनी बालकनी में धूप और कॉफी का आनंद ले रहा था। तभी उसे एक छोटी चींटी नजर आई, जो कि अपने आकार से कई गुना बड़ा पत्ता लेकर बालकनी के एक तरफ से दूसरी तरफ जा रही थी। आदमी उसे ध्यान से देखने लगा। वह देख रहा था कि चींटी को अपनी इस यात्रा के दौरान कई बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है, कई बार झुकना पर रहा है, मुड़ना पड़ रहा है, लेकिन वह लगातार अपने गंतव्य की ओर बढ़ती चली जा रही थी।

तभी उसे एक जगह फर्श में दरार दिखी। वह थोड़ी देर रुकी, सोची-विचार करने लगी और फिर उसने दरार के ऊपर वही बड़ा पत्ता डाल दिया, जिसे घसीटते हुए वह लिए जा रही थी। उस पत्ते के ऊपर चलकर उसने दरार पार की। फिर उसने पत्ते को दूसरी तरफ से उठाया और अपनी यात्रा दोबारा शुरू कर दी।

आदमी चींटी की चतुराई से मोहित हो उठा! इस घटना ने उसे विस्मय में डाल दिया और उसे सृष्टि के चमत्कार पर चिंतन करने के लिए मजबूर कर दिया। उसने निर्माता की महानता को देखा। उसकी आंखों के सामने संसार का यह छोटा सा प्राणी था। एक ऐसा प्राणी जो कि आकार में तो छोटा किंतु फिर भी विश्लेषण करने में, चिंतन करने में, तर्क करने में, अवसर तलाशने में, राह खोजने में और बाधाएं दूर करने की मानसिक क्षमता से लैस था।

थोड़ी देर बाद उस आदमी ने देखा कि चींटी अपने गंतव्य तक पहुँच गयी है। वहां फर्श में एक छोटा सा छेद था, जो उसके भूमिगत आवास का प्रवेश द्वार था। चींटी उस बड़े पत्ते को छोटे से छेद में ले जाना चाहती थी किंतु कैसे ले जा सकती थी? जिस पत्ते को वह इतनी कठिनाई और सावधानी से गंतव्य तक लाने में कामयाब रही थी उसे अब ज़मीन के भीतर नहीं ले जा पा रही थी। अंततः उसने पत्ते को वहीं छोड़ दिया और खाली हाथ अपने घर में चली गई।

उस नन्हें प्राणी ने इस श्रमसाध्य और चुनौतीपूर्ण यात्रा को शुरू करने से पहले अंत के बारे में नहीं सोचा था। अंत में वही बड़ा पत्ता उसके लिए एक बोझ से ज्यादा कुछ नहीं था। अब उस चींटी के पास अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए उसे पीछे छोड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

आदमी ने उस दिन एक महान सबक सीखा।

यही हमारे जीवन का भी सच है। हम अपने परिवार की चिंता करते हैं। अपनी नौकरी की चिंता करते हैं। हम चिंता करते हैं कि अधिक पैसा कैसे कमाया जाए? हमें चिंता है कि हमें कहाँ रहना चाहिए? किस तरह का वाहन खरीदना है? किस तरह के कपड़े पहनने हैं? कौन से गैजेट अपग्रेड करने हैं? आदि आदि ....

हम अपने जीवन की यात्रा में यह महसूस ही नहीं करते हैं कि ये सब केवल बोझ हैं, जिन्हें हम अत्यधिक सावधानी और खोने के डर से ढोये चले जा रहे हैं। हम अंत में केवल यही पाते हैं कि आखिरकार ये सब बेकार हैं। हम इन्हें अपने साथ नहीं ले जा सकते हैं और तब हम इन्हें छोड़ने पर मजबूर हो जाते हैं.....

सार- ***मित्रों! जीवन की यात्रा का आनंद लें। कल की चिंता में आज की खुशियों को व्यर्थ न करें। जिसे घसीटे लिए जा रहे हैं वह सिर्फ बोझ ही है।***

पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति, जयपुर

प्रगति के पथ पर अग्रसर

पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति का गठन वर्ष 2013 में शिक्षा के क्षेत्र में काम करने के लिए किया गया था। समिति के गठन के साथ ही पल्लीवाल जैन समाज के ऐसे नोनिहाल जिनके पालकों की आर्थिक स्थिति प्रतिकूल है, उन बच्चों की शिक्षा में किसी प्रकार की रुकावट न आए, इसलिए पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति ने कक्षा एक से नवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए फीस पुनर्भरण योजना प्रारंभ की थी। जिसमें समिति के द्वारा रु. 3000/- आवेदक को तुरंत भेजी जा रही है। इसी क्रम में कक्षा 10 एवं 12 में जो प्रतिभाशाली विद्यार्थी 95% और उस से ऊपर प्राप्तांक प्राप्त करते हैं ऐसे विद्यार्थियों को क्रमशः रु. 5100/- और रु. 11000/- ससम्मान प्रोत्साहन स्वरूप दिऐ जाते रहे हैं।

पल्लीवाल जैन समाज के ऐसे प्रतिभाशाली युवकों/युवतियों जो देश के सबसे महत्वपूर्ण सिविल सर्विसेज की परीक्षा के मेन एग्जाम में सफलता प्राप्त करते हैं उन्हें इंटरव्यू की तैयारी हेतु शिक्षा समिति द्वारा एक लाख रुपए प्रोत्साहन स्वरूप दिए जाते हैं। अभी तक शिक्षा समिति के द्वारा 8 छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहन राशि के द्वारा सम्मान किया जा चुका है।

शिक्षा समिति द्वारा देश के चार प्रतिष्ठित अभियांत्रिकी कॉलेज, चार चिकित्सा कॉलेज, चार प्रबन्धकीय संस्थान एवं चार विधी कॉलेज या विश्वविद्यालयों में चयनित विद्यार्थियों को बैंकों से ऋण दिलवाए जाने की सहायता करती है।

समाज के जो छात्र एवं छात्राएं उच्च एवं उच्चतम शिक्षा हेतु जयपुर में आते हैं उनके लिए छात्रावास की व्यवस्था जयपुर के जगतपुरा में की गई है। पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति ने जयपुर के जगतपुरा में एच-1, एच-2 आर.ए.एस. कॉलोनी में एक भवन का निर्माण कराया गया है, जिसमें जैन समाज की छात्राओं हेतु एक हॉस्टल सेठ रतन लाल सरवती जैन चेरिटेबल ट्रस्ट (दातियां वाले) जिसमें 32 छात्राओं के रहने की व्यवस्था की गयी है इस छात्रावास में आठ कमरे (एसी) बनाए गए हैं। छात्रावास का हर कमरे के साथ वॉशरूम तथा बालकोनी दी गयी है। छात्रावास के हर कमरे में दो छात्राओं के रहने, पढ़ने, सोने की माकूल व्यवस्था समिति प्रबंधन ने की है। पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति द्वारा संचालित देश का पहला छात्रावास है।

छात्रावास में एक भोजनशाला का भी निर्माण किया गया है। जिसमें नाश्ते, भोजन की पूर्ण व्यवस्था की गई है। छात्रावास में छात्राओं की सुरक्षा हेतु चौबीसों घंटे सुरक्षा गार्ड एवं महिला वार्डन उपलब्ध रहती है। सुरक्षा को हाई प्रोफाइल बनाने हेतु पूरी बिल्डिंग (भवन) में हाई फ्रीक्वेंसी के उन्नीस सी.सी.डी. कैमरे लगाए हैं।

इस भवन का नाम पल्लीवाल जैन शिक्षा संकुल रखा गया है। जिसके भूतल और प्रथम तल पर प्री/प्राइमरी स्कूल 'असर्फी विद्या निकेतन' का संचालन किया जा रहा है। पल्लीवाल जैन समाज द्वारा चलाए जाने वाला यह देश का पहला विद्यालय है।

अभी छात्रों के लिए छात्रावास किराऐ के भवन में संचालित किया जा रहा है। शिक्षा समिति के द्वारा जयपुर विकास प्राधिकरण को एक बड़ी भूमि आवंटन हेतु प्रार्थना पत्र प्रेषित किया गया है। इन सभी योजनाओं के सफल संचालन हेतु शिक्षा समिति को आपके सहयोग की अत्यन्त आवश्यकता है। आप सभी समाज के समृद्ध बंधु, माताएं, बहनें, नौजवान भाइयों से निवेदन है कि सभी अपने मांगलिक कार्यक्रमों के उपलक्ष में, अपनी छोटी-बड़ी खुशीओं में पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति को सहयोग प्रदान कर, समाज की उन्नति के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य के साथ एक शिक्षा दानवीर का गौरव प्राप्त करेंगे।

शिक्षा समिति को दान की गयी राशि पर आप इनकम टैक्स की धारा 80-जी का लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं, शिक्षा समिति का बैंक एकाउंट का विवरण निम्न है :-

ICICI Bank A/c No. 677701700681
IFSC Code : ICIC0006777

सम्पर्क सूत्र :

श्री आर. सी. जैन (Retd.IAS) अध्यक्ष, 9829999335
श्री देवेन्द्र कुमार जैन- उपाध्यक्ष, 9829999335
श्री भागचंद जैन- सचिव, 9414499747
श्री अशोक कुमार जैन (LIC) सह सचिव, 7073138510
श्री सुरेंद्र प्रकाश जैन, कोषाध्यक्ष, 9461136716
श्री ओम प्रकाश जैन (एडवोकेट) दातियां वाले
छात्रावास प्रभारी- 9314966351
पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति, जयपुर (राज.)

महिला मंडल शाखा ग्वालियर

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महिला मंडल (प्रज्ञामति) शाखा ग्वालियर के द्वारा होली मिलन समारोह दिनांक 10 मार्च रविवार को आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण मंगलाचरण श्रीमती पूजा जी जैन द्वारा, ग्रुप गेम्स, सरप्राइज प्रश्नोत्तरी, होली पर आधारित हाउजी एवं महिला दिवस के उपलक्ष में फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता थीम भारत की ऐसी महिला का किरदार निभाना जिसने देश को गर्वित किया हो।

फागुन उत्सव के उपलक्ष में सभी ने बहुत ही सुंदर लोकगीत की प्रस्तुति दी। इसके बाद पुरस्कार वितरण किया गया जिसमें फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में प्रथम श्रीमती पूनम जैन रही, ग्रुप गेम्स में विनर श्रीमती सुनीता जैन, श्रीमती मधु जैन, श्रीमती आरती जैन, श्रीमती शशि जैन, श्रीमती सुषमा जैन रहीं। अंत में सुरूचि भोजन का आनंद लिया।

शाखा फिरोजाबाद

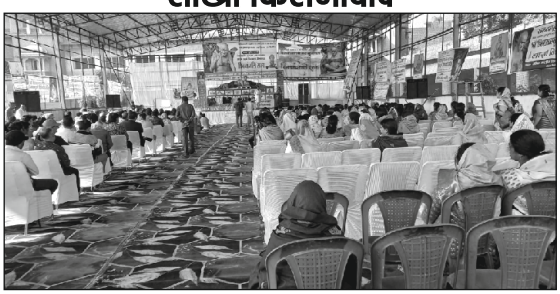

25 फरवरी 2024 फिरोजाबाद शाखा द्वारा आचार्य विद्या सागर महाराज जी की विन्यांजलि सभा आयोजित की, जिसमें सभी जैन समुदायों और जैनोत्तर समुदाय के लोगों ने विन्यांजलि समर्पित की। मेयर कामिनी राठौर और सांसद मनीष असिजा भी उपस्थित रहे।

नौगांवा

दिनांक 18 फरवरी 2024 को श्री 1008 मल्लिनाथ जिनालय नौगांवा के प्रांगण में आचार्य संत शिरोमणि श्री 108 विद्यासागर जी महामुनिराज को सकल दिगंबर जैन समाज नौगांवा द्वारा आर्यिका श्री 105 विजितमती माताजी की उपस्थिति में विनयांजलि दी गई। बड़ी स्क्रीन पर लाइव टेलीकास्ट के माध्यम से आचार्य श्री के अंतिम दर्शन किये गए।

ब्रह्मचारी आयुषी दीदी ने मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। जैन समाज के प्रवक्ता एवं मंच संचालक पारस जैन ने बताया कि आचार्य श्री ने विधिवत संलेखना धारण कर 3 दिन का उपवास किया एवं आचार्य पद त्यागकर रात्रि 2.35 बजे अपनी देह त्यागकर मोक्षगामी हो गए।

जितेन्द्र जैन 'जीतू' ने अपनी स्वरचित कविता 'विद्याधर से विद्यासागर' के माध्यम से आचार्य श्री को विनयांजलि अर्पित की। आराध्या जैन ने आचार्य श्री विद्यासागर जी की जीवनी पर प्रकाश डाला। आर्यिका श्री 105 विजितमती माताजी ने प्रवचन के माध्यम से बताया कि आचार्य श्री ने अपने माता पिता सहित सभी भाइयों को संयम के मार्ग पर लगा दिया। आचार्य श्री इस युग के साक्षात भगवान थे। अंत मे जैन समाज के सभी लोगों के द्वारा आचार्य श्री की फोटो पर पुष्पांजलि समर्पित कर विनयांजलि दी गई। इस मौके पर जैन समाज के सभी पुरुष, महिलाएं, बच्चे एवं बुजुर्ग उपस्थित रहे।

पालम

दिनांक 10.03.2024 प्रात: 9 बजे से 10 बजे तक दूसरे चरण के णमोकार महामंत्र की कड़ी में णमोकार महामंत्र का जाप श्रीमती बिमला जैन पत्नी स्व. श्री नरेश जैन व परिवार की ओर से श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर अतिशय क्षेत्र, पालम गांव में अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा, पालम शाखा के तत्वावधान में कराया गया। बड़ी संख्या में धर्म-प्रेमी उपस्थित हुए व धर्म लाभ प्राप्त किया। यह णमोकार महामंत्र का जाप प्रतिमाह दूसरे रविवार को नियमित रुप से कराया जाता है।

शाखा इन्दौर

दिनांक 03 मार्च 2024 रविवार के दिन इन्दौर पल्लीवाल जैन शाखा की मीटिंग श्री सुमत प्रकाशजी-सुधाजी जैन के गृह निवास गौतम सदन पर अद्भुत प्राकृतिक वातानुकूलित व हरियाली भरें खुले वातावरण में सान्नंद सम्पन्न हुई, जिसमें सर्वप्रथम मंगलाचरण, द्वीप प्रज्वलन किया गया। तत्पश्चात समाधिस्थ संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर महाराजश्री के प्रति विनयांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. अनुपमजी, श्री सुमत प्रकाशजी एवं इन्द्र कुमारजी द्वारा आचार्य श्री के राष्ट्रीय, धार्मिक व सामाजिक योगदान पर उद्बोधन दिया गया, तदोपरांत आगामी होली मिलन, वृहद स्तर पर भगवान महावीर स्वामी जयंती एवं अन्य कार्यक्रमों पर अद्भुत व सुदृढ़ निर्णय बोर्ड द्वारा लिए गए तत्पश्चात आभार, शांतिपाठ द्वारा सभा का सफल आयोजन सान्नंद सम्पन्न हुआ। सभी को वात्सल्य स्वल्पाहार का पुण्यार्जन राष्ट्रीय पूर्व अध्यक्ष श्री सुमत प्रकाशजी-सुधाजी परिवार द्वारा किया गया।

महिला मंडल, जयपुर शाखा

दिनांक 16.3.2024 को अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महिला मंडल, जयपुर द्वारा श्री पल्लीवाल जैन भवन, थड़ी मार्केट, जयपुर पर फागोत्सव धूमधाम से मनाया गया। जिसमें 110 बहनों ने भाग लिया। सभी का गुलाल लगा कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत णमोकार महामंत्र के जाप से की गई। संचालन मंत्री हिमानी जैन ने किया। आमंत्रित महिलाओं ने होली के भजन व गीत गाए एवं नृत्य किया। कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार के खेल और मनोरंजक गतिविधियाँ थीं, जिनका सभी ने आनन्द लिया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती मिथलेश जैन, श्रीमती रजनी जैन, श्रीमती भावना जैन, श्रीमती रेणु जैन रहीं। सभी अतिथियों का तिलक लगा कर माला एवं दुपट्टा पहना कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम को सुव्यवस्थित तरीके से सम्पन्न कराने में पदाधिकारियों कल्पना जैन, बबली जैन, नीलम जैन, प्रमिला जैन, मनीषा जैन, कार्यकारिणी सदस्यों मधुलता जैन, पुष्पा जैन, उमंग जैन, सविता जैन, आरती जैन, स्नेह जैन, आरती जैन, रजनी जैन, सपना जैन, कमलेश जैन, खुशबू जैन, सुमन जैन, ममता जैन, दीपाली जैन, मोनिका जैन, निधि जैन, लीना जैन का योगदान रहा। अध्यक्ष रमा जैन ने आमंत्रित अतिथियों एवं सभी बहनों का आभार व्यक्त किया।

नागपुर शाखा

दि 26.02.2024 को अ.भा.प. जैन महासभा, शाखा नागपुर द्वारा आयोजित एक प्यार का नगमा है, जिसमें अहमदाबाद के प्रसिद्ध गायक श्री मुख्तार शाह जोकि मुकेश की आवाज में गाने के लिए सारे भारत में मशहूर हैं।

सुरेश भट्ट सभागृह में तक़रीबन 20 वादकों, 2 फीमेल गायिका आकांशा देशमुख और स्वातिका ठाकुर ने अपने सुरीले आवाज में समा बांध लिया। करीब 1400 श्रोताओं ने मुकेश के गानों का आनद प्राप्त किया।

कार्यक्रम की शुरुआत आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज को श्रद्धांजलि देने के साथ प्रारम्भ हुआ। इसके पश्चात, पल्लीवाल दि. नागपुर सभा के अध्यक्ष श्री अभय कुमार जैन (पनवेलकर), सचिव श्री शशिकांत जैन (बानाईत), अखिल भारतीय महासभा के पूर्व अध्यक्ष श्री शरदजी जैन (पनवेलकर), अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा नागपुर शाखा के वर्तमान अध्यक्ष नीरज जैन उमाठे, सचिव श्री पंकज जैन के हस्ते दीप प्रज्वलन का कार्यक्रम हुआ।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सन्मति महिला मण्डल के अध्यक्षा सौ मनीषा जैन, सौ संध्या जैन एवं सारी महिला मण्डल की कार्यकारिणी का सहयोग मिला। श्री सारंग पनवेलकर जैन एवं श्री पवन जैन बनाईत ने विशेष योगदान दिया। सफल आयोजन के लिए सभी का आभार व्यक्त किया गया।

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा, नागपुर शाखा द्वारा अमृत महोत्सव के तृतीय कार्यक्रम के अंतर्गत सन्मति महिला मण्डल द्वारा कार्यक्रम किये गए।

मंगलाचरण, महिला द्वारा बलून फुलाने का कार्यक्रम, हल्दी कुंकूम, अंत में आभार प्रदर्शन एवं भोजन का कार्यक्रम हुए।

कार्यक्रम की अध्यक्ष सौ. मनीषा जैन, मंत्री संध्या जैन, अर्थमंत्री माला जैन, चित्रा जैन, उषा जैन, माधुरी जैन, लता जैन. अन्य सदस्य, शाखा एवं समाज के गणमान्य लोग उपस्थित थे।

शाखा अजमेर

मंदिर परिसर की साफ-सफाई

अजमेर शाखा का महिला मंडल होली मिलन को यादगार मनाने के लिए विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की तैयारी में लगा है, वहीं दूसरी ओर अजमेर शाखा का नवयुवक मंडल अपने मंदिर जी की परिसर को साफ-सफाई कर सुसज्जित करने में जुटा हुआ है। नवयुवक मंडल के सदस्यों ने अपनी एकजुटता, इच्छा शक्ति एवं कठिन परिश्रम द्वारा मंदिर जी परिसर में पड़े हुए अटाले एवं रद्दी सामान को छांट कर हटाया और उनमें से उपयोगी वस्तुओं, धोती-दुपट्टे, वस्त्र, पूजन के बर्तन इत्यादि को धो-पोंछ कर व्यवस्थित रूप से सहेज कर रख लिया है।

इन नवयुवकों में से कोई इंजिनियर है, कोई बैंक अधिकारी तो कोई बीएसएनएल में अधिकारी है, कोई व्यापारी है, कारोबारी है, तो कोई बिल्डर है। लेकिन किसी को भी अपने पद का, अपनी हैसियत का, अपनी शिक्षा का अभिमान नहीं है। हर एक युवक सिर्फ और सिर्फ अपने धर्म के प्रति, अपने समाज के प्रति, अपने कर्तव्य के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है। ज्ञातव्य हो अजमेर शाखा द्वारा आयोजित अमृत महोत्सव वर्ष के स्थापना कार्यक्रम में राष्ट्रीय महामंत्री श्री महेश जी इस नवयुवक मंडल से मिलकर बहुत प्रभावित हुए थे।

आगामी दिनों में आप सभी को अजमेर शाखा एवं उसकी तीनों यूनिटों द्वारा आयोजित होली महोत्सव एक अनूठे अंदाज में बहुत कुछ नया देखने को मिलेगा। होली महोत्सव को बड़े ही उमंग एवं उत्साह पूर्वक मना रही है, जिसकी शुरुआत हो चुकी है।

अखिल भारतीय पल्लीवाल महासभा का इस वर्ष को अमृत महोत्सव वर्ष में रूप मनाने का निर्णय बहुत ही उपयोगी और सार्थक प्रतीत हो रहा है।

शाखा कोटा

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की सल्लेखना पूर्वक समाधि होने पर कोटा में सकल जैन समाज के नेतृत्व में दिनांक 18.02.2024 को सायं सीएडी सर्किल पर विनयांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें कोटा शाखा के अध्यक्ष, मंत्री एवं अन्य सदस्य शामिल हुए। समाज के लोगों ने कीर्ति स्तंभ पर दीप जलाकर विनयांजलि अर्पित की गई। इसके पश्चात दिनांक 19.02.2024 को मुनिश्री आदित्य सागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में सर्वधर्म विनयांजली सभा का आयोजन किया गया, इस सभा में कोटा शाखा के अध्यक्ष, मंत्री अन्य सदस्यों के साथ उपस्थित हुए तथा श्री अंकित जैन एडिशनल एस.पी. कोटा भी उपस्थित हुए तथा विनयांजलि दी गई। मुनिश्री आदित्य सागर जी महाराज ने अपने प्रवचनों में कहा कि व्यक्ति को कभी याद नहीं किया जाता है, व्यक्तित्व को याद किया जाता है। व्यक्तित्व की ही पूजा होती है। हम आचार्यश्री के जीवन को आत्मसात करें, स्वयं के कल्याण की ओर बढ़ें। आचार्यश्री के संकल्पों को साथ लेकर चले। हम उनके आचरण के कण मात्र को भी जीवन में उतार लेंगे तो जीवन धन्य हो जाएगा तथा आचार्यश्री के आदर्शों को जीवन में उतारने का संदेश दिया।

QUALITY WORKS • PROMPT SERVICE • COMPETITIVE RATES

PRODUCTS :
Transmission Line Towers (HT&LT), Telecom Towers, Wind Mill Structures, Sub-Station Structures, Lattice Structures, RSJ Poles & GI Earthing Strips.

FULLY EQUIPPED ULTRA MODERN FABRICATION AND GALVANIZING PLANT WITH EOT CRANES, HOISTS, POWER TROLLEYS, TESTING LABS & ETP SYSTEM TO ENSURE GREEN ENVIRONMENT

Fabrication & Galvanizing done as per IS, BIS, ASTM, DIN & ISO Standards
Bath Size : 9m (L) x 0.8m (W) x 1.4m (D)
Plant Capacity : 18000 Tons / Year

Vijay Transmission PVT. LTD.

Plant :
PNH No. 100, Village Kanhera, Block Dharsiva, Uria Acholi Marg, Dist. Raipur-492001
Tel.: (0771) 305 4900 • Fax : (0771) 232 3162

Corporate Office :
210, 211, 2nd Floor, Kamla Space, S.V. Road, Santacruz (West), Mumbai-400054
Tel.: 022-262183401 • Fax : +91-022-26609915
E-mail : info@vijaytransmission.com

॥ श्री शांतिनाथाय नमः ॥

प्रथम पुण्यतिथि

स्व. श्री पदम चन्द जी जैन

(कालवाड़ी - खेड़ली वाले)

(स्वर्गवास : 27 मार्च 2023)

आप हमसे दूर हैं किन्तु आप हमारे दिलों में रहते हैं
आज ही के दिन आपने हम सबसे विदा ली थी, ईश्वर आपकी दिव्य आत्मा को शान्ति प्रदान करें,
हम सभी परिवारजन आपकी पुण्यतिथि पर सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

श्रीमती विमला देवी जैन
(धर्मपत्नी)

पुत्र-पुत्रवधू :
राजेश-मोनिका
प्रशान्त-जूही
गौरव-श्रुति

भतीजा-भतीजा वधू :
विमल-विमला
पारस-सुनीता
शीतल-मंजू

ससुराल पक्ष :
प्रकाशचंद-विजयलक्ष्मी
मोहनलाल-मिथलेश
मदनलाल-सुनीता

भाभी :
शान्ति जैन
(पत्नी स्व. श्री उम्मेदीलाल जी जैन)

पुत्री-दामाद :
अलका-कैलाश
मनीषा-मनीष
ज्योति-मनीष
प्रीति-विपिन
आभा-आकाश

आयुषी, रियांशु, भूमिका, अंशी, शायना,
भौमिक, नव्या, परी, बानी, धारवी, कियांश, शौर्य

निवास :
92, एफ-1, अर्जुन नगर नॉर्थ, शहीद अशोक मार्ग, जयपुर-302015

D.D. JAIN & CO.

ddjain_000@yahoo.co.in

BROKER & COMMISSION AGENTS :

EMPTY TIN 2, 5, 10 AND 15 LTR IN ALL QUALITY
HDPE JARS, CORROGRATED BOXES • LABLE • MULTI LAYER FILM

CONSULTNAT : OIL INDUSTRIES & PACKING MATERIAL PLANT
BRAND REGISTRATION • PATENT • TRADEMARK • COPYRIGHT
ISO • FSSAI REG. • MSME/SSI REGISTRATION • BARCODE

MANUFACTURERS & SUPPLIER OF :

PREMIX (VITAMIN A&D2) FOR OIL FORTIFICATION
EMPTY PET BOTTLES / JAR, PREFORMS
SEMI & FULLY AUTOMATIC BOTTLE/JAR/TIN FILLING MACHINES
POUCH MACHINE • STRAPPING MACHINE • SHRINK TUNNEL
ALUMINIUM FOIL & INDUCTION WED SEALING MACHINE
PRINTING MACHINE • BATCH CODER • MICRO FILTER
TICKLI AND SPOUT SEALING MACHINE ETC.

PALLIWAL UDYOG

udyogpalliwal16@gmail.com

YOUR'S SERVICE

yourservice99@yahoo.co.in

MANUFACTURERS & SUPPLIER OF :

PLAIN AND PRINTED BOTTLE CAP (AGMARK APPROVED PRINTER)
PVC SHRINK IN ALL SIZES • TICKLI AND SPOUT FOR TIN
STRAPPING ROLL • BOPP TAPE
ALUMINIUM / BLUSTER FOIL AND INDUCTION WED
ALL TYPE OF CAPS

OLD MACHINERY AND PLANT
ELECTRONIC ITEMS
LABOUR CONTRACTOR
CATERER & EVENT ORGANIZER
SERVICE PROVIDER
TRANSPORTER & OTHER SIMILAR SERVICES

MAHESH JAIN & CO.

companymaheshjain@gmail.com

T-22, ALANKAR PLAZA, CENTRAL SPINE
VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR-302023
PHONE : 0141-2232762, 2232766

KAPIL JAIN
+91-9887093314

MAHESH JAIN
+91-9414074476
jaindd2013@gmail.com

Awarded
Edible Oil
Motivator

S. R. ENTERPRISES

TRANSASIA

Roche

TOSOH

BIOMÉRIEUX

Ortho-Clinical Diagnostics
a Johnson & Johnson company

Abbott

BIO-RAD

SD BIOSENSOR,INC.

Stago
Diagnostics is in our blood.

B-18&19, Jai Jawan Colony Scheme No. 1st, Tonk Road, Jaipur-302018 (Rajasthan)
(M) +91-9829012628, +91-9414076265 E-mail : srindiaentp@yahoo.com

शाखा आगरा

पल्लीवाल जैन महासभा शाखा आगरा की ओर से एक बहुत ही सुंदर होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें समाज के सभी श्रेष्ठजन जो समाज को सुदृढ़ और शक्तिशाली बनाकर आगे बढ़ता देखना चाहते हैं, सभी उपस्थित हुए। यह भव्य आयोजन प्रथम बार आगरा में किया गया। इस सफल आयोजन के लिए और इस भव्य आयोजन के लिए समाज के अध्यक्ष श्री रविंद्र जैन, मंत्री श्री प्रमेंद्र जैन एवं अर्थमंत्री श्री दीपक जैन एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य व होली मिलन के संयोजक श्री राहुल जैन पश्चिमपुरी को बहुत-बहुत हार्दिक बधाई। और इस बार जो कार्य पल्लीवाल समाज की युवा कार्यकारिणी और पल्लीवाल महासभा आगरा की कार्यकारिणी समाज को आगे बढ़ाने के लिए समय-समय पर उत्तम कार्य कर रही है वह समाज के सभी युवाओं व समाज के श्रेष्ठ जनों को एकत्रित कर समाज के लिए अच्छा कार्य कर रही है। उन सभी कार्यकारिणी के सदस्यों को इस सफल आयोजन के लिए बहुत-बहुत हार्दिक शुभकामनाएं।

दिनांक 17.03.2024 को अ.भा.प. जैन महासभा शाखा आगरा द्वारा रंगारंग होली महोत्सव का आयोजन एम.डी. जैन इंटर कॉलेज, हरी पर्वत, आगरा पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान राज्यसभा सांसद श्री नवीन जैन का नागरिक अभिनंदन समाज द्वारा किया गया।

महामंत्री प्रमेन्द्र जैन ने बताया कि महोत्सव का शुभारंभ दोपहर 1:00 बजे प्रारंभ हुआ, सर्वप्रथम मेले का उद्घाटन श्री रविंद्र जैन द्वारा किया गया। उसके उपरांत भगवान महावीर के चित्र का अनावरण श्री शिव कुमार नितिन जैन द्वारा व दीप प्रज्वलन श्री प्रमोद जैन विजय जैन कमला नगर द्वारा किया गया, उसके उपरांत पंडित अरुण कुमार जैन द्वारा मंगलाचरण किया गया। कार्यक्रम में आए हुए बाहर से सभी अतिथि व विशिष्टजनों का साफा, दुपट्टा, व चंदन लगाकर आगरा कार्यकारिणी द्वारा स्वागत किया गया।

उसके उपरांत ब्रज के हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें आगरा के चर्चित हास्य कवि श्री राज बहादुर सिंह राज, डॉक्टर राघवेंद्र शर्मा, एलेश अवस्थी व कवित्री भूमिका जैन ने अपने हास्य व्यंग्यों के साथ होली के हुल्लड़ पर उपस्थित लोगों का मन जीता और अपने काव्य की रचना की। कवि सम्मेलन का उद्घाटन श्री पंकज जैन द्वारा किया गया उसके उपरांत नन्हे-मुन्ने बच्चों द्वारा रंगारंग होली के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। जिसका उद्घाटन श्री अनिल जैन, श्री अभिनव जैन दयाल बाग द्वारा किया गया।

उसके उपरांत समाज द्वारा आगरा के नवनिर्वाचित राज्यसभा सांसद श्री नवीन जैन का नागरिक अभिनंदन मुकुट, शॉल, साफा व अभिनंदन पत्र, देकर उनका स्वागत किया। इस अवसर पर राज्यसभा सांसद नवीन जैन ने समाज को संबोधित करते हुए कहा कि इस तरह के होली मिलन समारोह समाज के अंदर होते रहने चाहिए, इससे समाज की एकता अखंडता बनी रहेगी और मुझे सबसे ज्यादा प्रशंसा इस बात की है कि आज पल्लीवाल जैन समाज की यह 55 वर्ष पुरानी संस्था है। आपके बुजुर्गों ने समाज को एक माला में जोड़कर रखा है। इस कार्य को युवा पीढ़ी आगे तक लेकर जाए। उन्होंने कहा कि आज समाज की एकजुटता में महिलाओं का भी विशेष योगदान है। आज का प्रोग्राम इस बात का प्रमाण भी है। मैं अ.भा.प. जैन महासभा, शाखा आगरा को इस सम्मान के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

उसके उपरांत संगीत के साथ महारास, डांडिया के साथ महिलाओं बच्चों द्वारा नृत्य किया गया तथा अंत में फूलों की होली का भी उपस्थित जनसमूह ने संगीत के साथ नृत्य कर आनंद लिया। कार्यक्रम का संचालन शाखा मंत्री श्री प्रमेन्द्र जैन द्वारा किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष चौ तपेश जैन, राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री राहुल जैन, आगरा दिगंबर जैन परिषद के महामंत्री सुनील जैन (ठेकेदार), राकेश जैन (पार्षद), राष्ट्रीय संगठन मंत्री राहुल जैन एड., केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्य राकेश जैन, श्रीमती अलका जैन बजाज, शाखा अध्यक्ष रविंद्र जैन, महामंत्री प्रेमेंद्र जैन, कोषाध्यक्ष दीपक जैन, पूर्व डिप्टी मेयर अशोक जैन, मनोज सिंघई, संयुक्त मंत्री अरुण जैन, संगठन मंत्री दीपक जैन, विजय जैन निवोरब, विशाल जैन, मुकेश जैन, विशाल जैन, दीपक जैन, नीरज जैन, मनीष जैन, अरविंद जैन, ऋषि जैन, महेश जैन (SBI), मनीष जैन (ठेकेदार), प्रवीन जैन, डॉ. यतेंद्र जैन, पंकज जैन, अंकुश जैन, अनिल बजाज, प्रमोद जैन, सुनील जैन, श्रीमती उषा जैन (मारसंस), महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती सपना जैन, मंत्री साधना जैन, कोषाध्यक्ष रेखा जैन, युवक मंडल अध्यक्ष अंकित जैन, मंत्री शुभम जैन, अर्थमंत्री-यामेश जैन, श्रीमती सीमा जैन, श्रीमती रचना जैन, श्रीमती सचि जैन, श्रीमती ममता जैन, श्रीमती चंचल जैन श्रीमती वंदना जैन, श्रीमती सीमा बजाज, सरिता जैन आदि उपस्थित थे।

ग्रामीण अंचल आगरा

अ.भा.प. जैन महासभा शाखा ग्रामीण अंचल आगरा ने मिढाकुर में लता पैलेस में आचार्य शिरोमणि विद्यासागर महाराज को विनयांजलि की गई, जिसमें 26 गांव के लोग उपस्थित हुए। सभी पदाधिकारी एवं महिला मंडल की अधिक उपस्थिति रही। महासभा के अध्यक्ष श्री विनोद कुमार जैन ने सामोद किया और मंत्री श्री संजीव कुमार जैन ने आचार्य शिरोमणि विद्यासागर महाराज जी का वर्णन किया। शाखा के संरक्षक अगेन चंद्र जैन, सुभाष चंद्र जैन, दिनेश चंद्र जैन, विनय कुमार जैन, सुनील कुमार जैन, मास्टर साहब देवेश जैन, सुशील कुमार जैन, जगदीश प्रसाद जैन, संतोष कुमार जैन, मनीष कुमार जैन, पुष्पेंद्र कुमार जैन, निर्मल कुमार जैन, सुगनचंद जैन, विनोद कुमार, अनिल कुमार जैन और शाखा महिला अध्यक्ष पूनम जैन, शाखा की महिला अर्थमंत्री मधु जैन, निर्मला जैन, रीता जैन, पिंकी जैन, ममता जैन, रेखा जैन और गजेंद्र कुमार जैन सभी ग्रामीण के 26 गांव के उपस्थित थे। बारी-बारी से आचार्य शिरोमणि विद्यासागर महाराज को विन्यांजलि प्रेषित की और अंत में होली मिलन समारोह पर चर्चा हुई। सभी लोगों ने होली मिलन अरसेना में बनाने की बात की और अंत में विनोद जैन ने सभी को धन्यवाद दिया और मिढाकुर के सभी लोगों को जलपान की व्यवस्था कराई।

****

अमृत महोत्सव वर्ष-2024 एवं 2550वें महावीर निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में अ.भा.प. जैन महासभा शाखा ग्रामीण अंचल, आगरा द्वारा भव्य होली मिलन समारोह दि. 17.03.2024 को दोपहर 11:00 बजे एम.एस. गार्डन, अरसेना में आयोजित किया गया। जिसमे ग्रामीण अंचल के समस्त सदस्य एवं महिला मंडल की सभी महिला पदाधिकारी और सभी महिलाएं व सभी सम्मानित पदाधिकारी एवं महानुभाव और युवामंडल के सभी युवागण की उपस्थिति रही और 28 गांव के सभी सदस्य एवं महिलाओं की अच्छी भागीदारी सुनिश्चित रही।

होली मिलन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सतीश चंद्र जैन (पालम वाले) थे। कार्यक्रम को आगे बढाते हुए, मंगलाचरण महिला मंडल की पदाधिकारी अध्यक्ष पूनम जैन, मंत्री कामिनी जैन और अर्थमंत्री मधु जैन के द्वारा हुआ। फिर सबने भगवान को माला अर्पण की और दीप प्रज्वलन श्री अगेनचंद जैन(संरक्षक), श्री सुगनचंद जैन, श्री विनोद जैन (अध्यक्ष), श्री संजीव कुमार जैन (मंत्री), श्री सुशील कुमार जैन (अर्थमंत्री), श्री देवेश जैन (संगठन मंत्री), और अन्य ग्रामीण अंचल के द्वारा हुआ।

कुशल संचालन पूर्व मंत्री श्री सुनील कुमार जैन और श्री संजीव कुमार जैन एवं पूर्व अध्यक्ष श्री नवीन कुमार जैन, अध्यक्ष श्री विनोद कुमार जैन के द्वारा हुआ। पूर्व अध्यक्ष श्री नवीन कुमार जैन और पूर्व मंत्री श्री सुनील कुमार जैन ने होली मिलन के बारे में सभी को अवगत किया और सबको खूब रोमांचक कर दिया।

दिल्ली से पधारे हुए श्री सतीश चंद्र जी जैन अमृत महोत्सव वर्ष 2024 एवं 2550वां महावीर निर्वाण वर्ष के उपलक्ष में बताया। सभी महिला और बच्चों ने गेम खेले, होली मिलन में बड़ा आनंद आया, सभी ने डांस किया।

श्री दिनेश चंद जैन, श्री सतीश चंद्र जैन, श्री राकेश जी बजाज, श्री पुष्पेंद्र कुमार जैन, श्री पंकज जैन, श्री निर्मल कुमार जैन, श्री पवन कुमार जैन, श्री जगदीश प्रसाद जैन, श्री संतोष कुमार जैन, श्री हरेंद्र कुमार जैन, श्री सुभाष जैन, श्री भागचंद जैन, श्री रूपचंद जैन एवं सभी 28 गांव से महिला और पुरुष उपस्थित थे। ग्राम अरसेना में भोजन की व्यवस्था बहुत उत्तम थी, सभी अतिथियों को हार्दिक शुभकामनाएं और उत्साह पूर्वक अरसेना के लोगों का सम्मान व स्वागत किया। सभी को गुलाल लगाया, खूब डांस किया और आनंद लिया। अध्यक्ष श्री विनोद जैन ने कार्यक्रम एवं सभी कार्यकारणी सदस्यों को कार्यक्रम के सकुशल संपन्न होने पर सभी को धन्यवाद दिया।

शोक संवेदना

श्री ज्ञानचंद जी जैन पुत्र स्व. श्री मूलराज जी जैन (पालम वाले) का 92वर्ष की आयु में 3 मार्च 2024 को बैंगलोर में आकस्मिक निधन हो गया। श्री ज्ञानचंद जी ने इंग्लिश में एम.ए. पास कर भारत सरकार के वित्त विभाग से अपने कर्मक्षेत्र की शुरुआत करते हुए देश की प्रमुख हस्तिओं के साथ काम किया। श्री ज्ञानचंद जी चौधरी चरण सिंह, श्री विधाचरण शुक्ल, श्री जगन्नाथ कौशल एवं श्री माधवराव सिंधिया जैसे दिग्गज नेताओं के निजी सचिव के रुप में कार्यरत रहे। श्री ज्ञानचंद जी की कार्यक्षमता, निष्ठा और विश्वसनीयता के बारे में जिन-जिन विभागों में वे कार्यरत रहे वहां उन्हें भरपूर आदर व सम्मान के साथ याद किया जाता था और उनको एक उदाहरण के रुप में याद किया जाता था। श्री ज्ञानचंद जी जैन के चार पुत्र व एक पुत्री हैं जो सभी उच्च शिक्षा प्राप्त कर देश और विदेश में अपनी योग्यता का परिचय दे रहे हैं। विवेकशील सरल स्वभाव और कर्म में विश्वास रखने वाले श्री ज्ञानचंद जी अब हमारे बीच में नहीं रहे, अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा ऐसे मनीषी के निधन पर अपनी शोक संवेदना प्रस्तुत करते हुए भगवान महावीर स्वामी से प्रार्थना करती है कि उनकी आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें।

श्रीमती रामकली देवी जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री हरीबाबू जी जैन, विनय नगर, ग्वालियर वाले का निधन दि. 27 जनवरी 2024 को हो गया है। आप धार्मिक, सामाजिक एवं सरल स्वभाव की महिला थीं।

श्री प्रकाश चन्द जी जैन निवासी 9, बापू बाजार, अलवर का निधन दिनांक 26.02.2024 को हो गया है। आप धार्मिक, सामाजिक व सरल स्वभाव के व्यक्ति थे।

श्री गिरीश जी जैन (पटवारी) डीग वाले का निधन दिनांक 12.03.2024 को हो गया है। आप धार्मिक, सामाजिक व सरल स्वभाव के व्यक्ति थे।

श्री नानक चन्द जी जैन (कुकथला वाले) रूनकता, आगरा का दिनांक 09.02.2024 को आकस्मिक निधन हो गया है। आप धार्मिक, सामाजिक व सरल स्वभाव के व्यक्ति थे।

श्रीमती बर्फी देवी जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री मंगतराम जी जैन (मौजपुर वाले) सी-117, बापू नगर, जयपुर का निधन दि. 21 मार्च 2024 को हो गया है। आप धर्मपरायण, समाजसेवी एवं सरल स्वभाव की महिला थीं।

श्री योगेश जी जैन पुत्र स्व. श्री माणक चन्द जी जैन (बडेर वाले) लक्ष्मणगढ़ का दिनांक 20.03.2024 को आकस्मिक निधन हो गया है। आप धार्मिक, सामाजिक व सरल स्वभाव के व्यक्ति थे।

श्रीमती गुनमाला जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री बाबूलाल जी जैन (मंडावर वाले) 12-ए, राधा निकुंज प्रथम, मानसरोवर विस्तार, जयपुर का निधन दि. 19.03.2024 को हो गया है। आप धर्मपरायण, समाजसेवी एवं सरल स्वभाव की महिला थीं।

श्रीमती सुनीता जी जैन धर्मपत्नी श्री विपिन, पुत्रवधु श्री बिरदी चन्द जैन, 12, मुक्तानंद नगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर का निधन दि. 04.03.2024 को हो गया है। आप धर्मपरायण, समाजसेवी एवं सरल स्वभाव की महिला थीं।

श्रीमती पुष्पा देवी जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री हरीश चन्द जी जैन (अलीपुर वाले) 11-ए, श्रीनाथ नगर, श्योपुर, जयपुर का निधन दि. 26.02.2024 को हो गया है। आप धर्मपरायण, समाजसेवी एवं सरल स्वभाव की महिला थीं।

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा वीर प्रभु से दिवंगत आत्माओं को अपने श्रीचरणों में स्थान देने की प्रार्थना करते हुए शोक संवेदना प्रकट करती है।

सागर में होगा अब आचार्यश्री विद्यासागर आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज

मध्यप्रदेश की हृदयस्थली, डॉ. हरीसिंह गौर के द्वारा अपने श्रमोपार्जित धन के सदुपयोग से बुन्देलखण्ड अंचल को शिक्षा के क्षेत्र में गौरवशाली स्थान प्रदान करने वाली, साथ ही श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी के द्वारा जैन धार्मिक शिक्षा के लिए सुप्रसिद्ध नगरी सागर में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री डॉ. मोहन यादव जी ने 13 मार्च 2024, बुधवार को सागर के पी.टी.सी. ग्राउण्ड पर आयोजित विराट जनसभा में जिले के जनप्रतिनिधियों के द्वारा इच्छित माँगों पर विचार कर 6 विशिष्ट घोषणाएँ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के द्वारा की गईं। उनमें से एक प्रमुख माँग के संबंध में आपने कहा कि सागर नगर के प्रथम प्रवास पर 20 जनवरी, 2024 के दिन सागर में आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज को खोले जाने की घोषणा की थी। अब नगर के द्वितीय प्रवास के प्रसंग पर इसका नामकरण करते हुए इसे जैन समाज के महान संत आचार्यश्री विद्यासागरजी को समर्पित करते हुए 'आचार्य विद्यासागर आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज' किए जाने की घोषणा करता हूँ।

डॉ. यादव ने इस प्रसंग पर आचार्य श्री विद्यासागरजी का स्मरण करते हुए कहा कि जैन समाज ही नहीं, सारे देश/प्रदेश में उनका बहुत बड़ा नाम था। उन्होंने अपना पूरा जीवन मानव समाज को समर्पित कर दिया था। वो एक सिद्ध पुरुष थे। आचार्यश्री भले ही मनुष्य रूप में आए थे किन्तु उन्होंने विशिष्ट देवत्व को धारण किया हुआ था। वे जीवनपर्यन्त मानवता को अध्यात्म की शिक्षा देकर संस्कारित करते रहे। उनको सही मायने में आदरांजली-श्रद्धांजली के रूप में स्थायी सौगात सागर नगर को देते हुए गौरवान्वित हो रहा हूँ। अत: नगर में खोले जा रहे संस्थान को अब 'आचार्य विद्यासागर आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज' करके अपनी विनयांजली उनके चरणों में समर्पित करता हूँ।

इस अवसर पर मध्यप्रदेश शासन के मंत्री गोविंद सिंह राजपूत, सांसद राजबहादुर सिंह, जिले के विधायक शैलेन्द्र जैन, गोपाल भार्गव, भूपेन्द्र सिंह, वीरेन्द्र लोधी, प्रदीप लारिया आदि अनेक जनप्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

-बा.ब्र. स्वप्निल जैन 'गोलू'
श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन बड़े मंदिर जी के पास,
श्री गुरु मंगलधाम रोड, बण्डा बेलई, सागर

परिवर्तन संसार का नियम

परिवर्तन सृष्टि की प्रत्येक वस्तु का नियम है। कोई भी वस्तु जिस रूप में उत्पन्न होती है, सदा उसी रूप में नहीं रहती है। वस्तुत: परिवर्तन का नाम ही उत्पत्ति, विकास या विनाश है। ये तीनों परिवर्तन के रूप हैं। परिवर्तन की गति सदा एक सी नहीं रहती है। इसके साथ तालमेल रखने के लिए हमें समय के साथ निरन्तर बदलना चाहिए। मोहम्मद इकबाल ने कहा- ''यूनान, मिश्र, रोमां सब मिट गए जहां से, कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।'' अनेक देशों की संस्कृतियां समय के साथ विलुप्त हो गई लेकिन भारतीय संस्कृति सदा बनी रही। इसका कारण यह रहा कि हमारे देश की संस्कृति ने दूसरे देशों की अच्छी बातों को ग्रहण करने में कभी भी संकोच नहीं किया, इसी परिवर्तनशीलता और आत्मसाती के कारण हमारी संस्कृति आज भी कायम है।

जिस तरह नदी का पानी बहता रहता है तो वह स्वच्छ और निर्मल बना रहता है अगर वह जल एक जगह रुक जाए तो वह तालाब बन जाएगा और उसका पानी भी अस्वच्छ हो जाएगा। इसी तरह हमारे विचारों में हम समय के साथ परिवर्तन नहीं करेंगे तो अनेक समस्याएं उत्पन्न हो जाएंगी, परिवार व समाज के दूसरे सदस्यों से हम विचारों का तालमेल नहीं रख पाएंगें और लोग हमें पसन्द नहीं करेगें। यह मनमुराव का कारण बन जाएगा।

जैसे प्राकृतिक परिवर्तन होते हैं- ऋतु परिवर्तन होता है, दिन के बाद रात और रात के बाद दिन होता है ऐसे ही व्यक्ति के जीवन में भी सुख-दुख आते हैं। जिन्दगी परिवर्तनों से ही बनी है, किसी भी परिवर्तन से घबराना नहीं चाहिए बल्कि उसे स्वीकार करना चाहिए। कुछ परिवर्तन आपको सफलता दिलाएंगें और कुछ परिवर्तन सफल होने का गुण सिखाएंगे। जिस तरह एक पौधे के विकास के लिए धूप, छांव, वर्षा सभी जरूरी है उसी तरह मानव जीवन के लिए भी परिवर्तन जरूरी है। इससे उसके जीवन का नव-निर्माण होता है। जीवन में आने वाली हर नई परिस्थिति हमारे लिए वर्तमान में परीक्षा और भविष्य में शिक्षा का कार्य करती है। अत: जीवन का दूसरा नाम परिवर्तन है। जब हम अपनी चिंता को आस्था में परिवर्तित कर देते हैं तब ईश्वर हमारे संघर्ष को आशीर्वाद में परिवर्तित कर देते है। वस्तुत: समय के साथ परिवर्तन ही सुखमय जीवन का आधार है।

-रजनी जैन
80, शक्ति नगर, जयपुर

★ **श्री हेमराज जी, दिनेश जी, मुकेश जैन** (दतिया वाले), झोटवाड़ा, जयपुर ने विधवा सहायता हेतु रु. 6000/- भेंट किये। *(र.सं. 8229)*

★ **श्री रमेश चंद जी पंकज जी जैन,** दिल्ली जैन पब्लिक स्कूल बिल्डिंग, 12-रेलवे रोड, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली ने विधवा सहायता हेतु रु. 22,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8230 एवं 8263)*

★ **श्री राहुल जी जैन,** आगरा ने विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8232)*

★ **श्रीमती रेणु जैन**, गंगा चौक, पालम कॉलोनी, दिल्ली ने विधवा सहायता हेतु रु. 2100/- भेंट किये। *(र.सं. 8233)*

★ **श्री नरेंद्र कुमार जैन, अपूर्व जैन, प्रबल जैन**, डी-33, हसन खान मेवात नगर, अलवर ने विधवा सहायता हेतु रु. 21,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8234)*

★ **श्रीमती मधु पवन जैन चौधरी**, अलवर ने वैवाहिक वर्षगांठ के उपलक्ष में विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8235)*

★ **श्री अभय पाल जी** पुत्र श्री नरेंद्र पाल जी, गाजियाबाद, यूपी ने विधवा सहायता हेतु रु. 6000/- भेंट किये। *(र.सं. 8236)*

★ **श्री रोहित कुमार** पुत्र श्री विजय कुमार जी, नेहरू नगर, गाजियाबाद, यूपी ने विधवा सहायता हेतु रु. 6000/- भेंट किये। *(र.सं. 8237)*

★ **श्री अंकित जैन** पुत्र श्री शांति प्रसाद जैन, क्रॉसिंग रिपब्लिक, गाजियाबाद, यूपी ने विधवा सहायता हेतु रु. 6000/- भेंट किये। *(र.सं. 8238)*

★ **श्री हिमांशु जी** पुत्र श्री शांति प्रसाद जैन, क्रॉसिंग रिपब्लिक, गाजियाबाद, यूपी ने विधवा सहायता हेतु रु. 6100/- भेंट किये। *(र.सं. 8239)*

★ **श्री महावीर प्रसाद जी, अंकित जैन**, महुआ, राज. ने विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8240)*

★ **श्री अंकुर जैन** पुत्र श्री राकेश जी जैन, बुद्ध विहार, अलवर, राज. ने विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8241)*

★ **श्री अशोक कुमार जैन** पुत्र स्व. श्री मूलचंद जैन (ढाकपुरी वाले) मानसरोवर, जयपुर, राज. ने विधवा सहायता हेतु रु. 25,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8242)*

★ **श्री राजेंद्र कुमार जैन** पुत्र स्व. श्री मूलचंद जैन (ढाकपुरी वाले) अम्बेडकर नगर, अलवर, राज. ने विधवा सहायता हेतु रु. 5000/- भेंट किये। *(र.सं. 8243)*

★ **श्री मुंशी लाल जी निखिल जी जैन** (परवैनी वाले) कला कुआ, अलवर, राज. ने विधवा सहायता हेतु रु. 2100/- भेंट किये। *(र.सं. 8244)*

★ **श्रीमती संगीता जैन** धर्मपत्नी श्री रविन्द्र कुमार जैन, मालवीय नगर, अलवर ने विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8245)*

★ **श्री महेश चंद जैन**, सेनि. ए.ओ., हसन खान मेवात, अलवर, राज. ने विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8246)*

★ **श्री पारस चंद जैन** (खेरली वाले) 79/129, मानसरोवर, जयपुर, राज. ने विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8247)*

★ **श्री राजेंद्र जैन** (लक्ष्मणगढ़ वाले) जयपुर ने विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8248)*

★ **श्रीमती अनिता जैन** धर्मपत्नी श्री कमल चंद जैन (खोह वाले), 26, विवेकानंद नगर, अलवर ने अपनी नवासी आखी जैन पुत्री श्री विपुल जैन के जन्मदिन के उपलक्ष्य में विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8249)*

★ **श्री त्रिलोक चंद जैन, डॉ. हिमांशु जैन** (महलपुर वाले) 512, कृष्णा नगर, भरतपुर, राज. ने विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8251)*

★ **श्रीमती राजेंद्र प्रसाद जैन, उर्मिला जैन** 76, मुक्तानंद नगर, जयपुर ने वैवाहिक वर्षगांठ के उपलक्ष्य में विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8252)*

★ **श्री बाबू लाल जैन, पुष्पा जैन** डी-8, सूर्य नगर, अलवर ने वैवाहिक वर्षगांठ के उपलक्ष्य में विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8253)*

★ **श्री नरेश चंद जैन, सुनीता जैन** सी-137, रंजीत नगर, भरतपुर, राज. ने विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8254)*

★ **श्री मृणाल कुमार जैन** पुत्र श्री विजेंद्र कुमार जैन, बी-67, अशोक विहार, अलवर ने विधवा सहायता हेतु रु. 24,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8255)*

शेष पृष्ठ 36 पर.....

पत्रिका सहायता

★ श्री प्रकाश चन्द जी जैन के 26 फरवरी 2024 को देवलोक गमन पर उनकी धर्मपत्नी **श्रीमती सुशीला जी जैन** एवं पुत्र-पुत्रवधु **प्रियांशु-सलोनी**, 9 बापू बाजार, अलवर ने पत्रिका सहयोग हेतु रु. 1100/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी-3140)*

★ **श्रीमती उमा जी जैन एवं श्री उमेश जी जैन,** एम.बी.एस. नगर, कोटा ने अपने सुपुत्र चि. सागर जैन संग सौ.कां. विदुषी जैन सुपुत्री श्रीमती वीना जैन एवं श्री विनोद कुमार जैन निवासी बडौदाकान के दिनांक 12.3.2024 को सम्पन्न होने पर पत्रिका सहयोग हेतु रु. 500/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी-3141)*

★ **श्रीमती विमला देवी जी जैन** धर्मपत्नी स्व. श्री पदम चन्द जी जैन, निवासी 92-एफ-1, अर्जुन नगर नॉर्थ, शहीद अशोक मार्ग, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर ने अपने सुपुत्र चि. गौरव जैन संग सौ.कां. श्रुति जैन सुपुत्री श्रीमती ज्ञानचन्द जैन निवासी लोहामण्डी, आगरा का शुभ विवाह दिनांक 18.01.2024 को सम्पन्न होने पर पत्रिका सहयोग हेतु रु. 500/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी-3137)*

★ **श्री दीपचन्द जी जैन,** 116, शास्त्री नगर, चित्तौड़गढ़ ने अपनी पत्नी श्रीमती करूणा जी जैन का देवलोकगमन दिनांक 01.01.2024 को होने पर उनकी पुण्य स्मृति में पत्रिका सहयोग हेतु रु. 1100/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी-3139)*

★ **श्री विमल कुमार जी जैन** (ढहरा वाले) जयपुर ने अपनी सुपुत्री सौ.कां. सुरभी जैन का शुभ विवाह दिनांक 11.03.2024 को सम्पन्न होने पर पत्रिका सहयोग हेतु रु. 500/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी-3153)*

पत्रिका सदस्यता

3277. Sh. Hemendra Kumar Jain, Advocate, Shantabag Colony, Near Kansana Bhawan, M.S. Road, Morena-476001 (M.P.), Mob.: 9826990219 *(CR D-3138)*

3278. Sh. Anil Kumar Jain, 73/46, Mansarovar, Jaipur-302020, Mob.: 9414255764 *(CR D-3125)*

3279. Sh. Om Prakash Jain S/o Sh. Pooran Chand Jain, 267/126, Pratap Nagar, Sector-26, VTC - Jaipur-302006, Mob.: 9634235772 *(CR D-3151)*

3280. Sh. Vikas Jain, S/o Sh. Suresh Chand Jain, 56, Shri Shyam Vihar-A, New Sanganer Road, Near Rajputana School, Manyawas, Mansarovar, Jaipur-302020, Mob.: 9772202711 *(CR D-3152)*

महासभा सहायता

★ **श्रीमती उमा जी जैन एवं श्री उमेश जी जैन,** एम.बी.एस. नगर, कोटा ने अपने सुपुत्र चि. सागर जैन संग सौ.कां. विदुषी जैन सुपुत्री श्रीमती वीना जैन एवं श्री विनोद कुमार जैन निवासी बडौदाकान के दिनांक 12.03.2024 को सम्पन्न होने पर महासभा सहायता हेतु रु. 500/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 8251)*

★ **श्रीमती विमला देवी जी जैन** धर्मपत्नी स्व. श्री पदम चन्द जी जैन, निवासी 92-एफ-1, अर्जुन नगर नॉर्थ, शहीद अशोक मार्ग, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर ने अपने सुपुत्र चि. गौरव जैन संग सौ.कां. श्रुति जैन सुपुत्री श्रीमती ज्ञानचन्द जैन निवासी लोहामण्डी, आगरा का शुभ विवाह दिनांक 18.01.2024 को सम्पन्न होने पर महासभा सहायता हेतु रु. 500/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 8266)*

★ **श्री विमल कुमार जी जैन** (ढहरा वाले) जयपुर ने अपनी सुपुत्री सौ.कां. सुरभी जैन का शुभ विवाह दिनांक 11.03.2024 को सम्पन्न होने पर महासभा सहायता हेतु रु. 500/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 8267)*

★ श्री प्रकाश चन्द जी जैन के 26 फरवरी 2024 को देवलोक गमन पर उनकी धर्मपत्नी **श्रीमती सुशीला जी जैन** एवं पुत्र-पुत्रवधु **प्रियांशु-सलोनी**, 9 बापू बाजार, अलवर ने महासभा सहायता हेतु रु. 1100/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 8257)*

★ **श्री पवन जी जैन** (पटवारी) मालवीय नगर, अलवर ने महासभा सहायता हेतु रु. 501/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 8231)*

★ **डॉ. विपिन - स्नेह जी जैन**, नोएडा ने महासभा सहायता हेतु रु. 501/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 8261)*

★ **श्री ललित जी जैन**, **सारिका जी जैन**, नोएडा ने महासभा सहायता हेतु रु. 501/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 8264)*

कहानी

अनोखा मित्र

शाम का अंधेरा घिर आया था। छड़ी टेकते हुए वृद्ध बनवारीलाल जी.एम। (जनरल मैनेजर) के बंगले के सामने आकर रुक गए। वे अभी भी तय नहीं कर पा रहे थे कि जी.एम। से मिलने जाएं या नहीं? ऊहापोह में वहीं ठिठककर खड़े रहे। आखिर जी को कड़ा किया और लोहे का छोटा फाटक खोल अंदर दाखिल हुए, सामने लॉन में कोई नहीं था। ईश्वर का स्मरण कर वे आगे बढ़े। कुछ कदम चलने के बाद उन्हें पोर्च में साहब की कार नज़र आई।

'मतलब साहब दौरे से लौट आए हैं' उत्साह से उनकी धड़कन सहसा बढ़ गई। उन्होंने शीघ्रता से शेष रास्ता पार किया। बरामदे में आ जूते खोले और कांपते हाथों से कॉलबेल का बटन दबा दिया, कॉलबेल की मधुर ध्वनि से विशाल बंगला गूंज उठा। कुछ क्षण पश्चात किसी के निकट आने की पदचाप सुनाई दी। अगले ही पल अर्दली ने द्वार खोल अदब से पूछा, 'कहिए'

'जी, साहब हैं।'

'जी हां।'

'मुझे मिलना था, बस पांच मिनट के लिए।'

'आइए' कहते हुए अर्दली ने ससम्मान रास्ता बतलाया।

झिझकते हुए बनवारीलाल ने बैठक में प्रवेश किया। जी.एम. के बंगले पर वे पहली बार आए थे। वहां की भव्य साज-सज्जा देख वे अभिभूत हो उठे। संकोचपूर्वक चलते हुए वे एक सोफ़े में सिकुड़कर धंस गए।

उनका नाम पूछ अर्दली अंदर चला गया। बनवारीलाल अपने में सिमटे बैठक का जायजा लेने लगे। सामने कलात्मक शो केस में गणेशजी की भव्य प्रतिमा विराजमान थी। उन्हें निहारते हुए बनवारीलाल मन-ही-मन बातचीत की योजना बनाने लगे, तीन-चार मिनट बाद अर्दली वापस आया। उसके हाथ में शरबत की ट्रे थी। आदरपूर्वक शरबत पेश कर उसने विनम्रता पूर्वक कहा, 'साहब तैयार हो रहे हैं। पांच-सात मिनट लगेंगे। कृपया तब तक इंतज़ार कीजिए' और वापस अंदर चला गया।

बनवारीलाल संकोचपूर्वक शरबत की चुस्की लेने लगे।

लगभग पांच मिनट पश्चात साहब आए। बनवारीलाल तत्क्षण अदब से खड़े हो गए, 'प्रणाम साहब।'

'अरे वाह।' उन्हें देखते ही अभिवादन का ससम्मान प्रत्युत्तर दे साहब खिल उठे। 'कब पधारे आप?'

'जी, आज ही।'

'और सब ठीक है?' साहब ने उन्हें अपने साथ बैठा लिया, 'रिटायर होने के बाद शायद पहली बार मिल रहे हैं आप?'

'जी हां।' साहब की आत्मीयता से बनवारीलाल अभिभूत हो उठे।

'कितना समय हो गया होगा आपको रिटायर हुए? मेरा ख्याल है- सालभर?'

'जी हां, एक वर्ष और दो माह।'

'समय कैसे बीत गया पता ही नहीं चला.' साहब ने घनिष्ठता से उनके कंधे पर हाथ रखा। 'स्वास्थ्य वगैरह सब अच्छा है न?'

'जी हां।'

'और सुनाइए' साहब के होंठों पर स्निग्ध मुस्कान उभर आई, 'कैसी चल रही है रिटायर्ड लाइफ?'

'जी!' बनवारीलाल के हृदय की धड़कनें सहसा बढ़ गईं। उन्हें लगा, यही माकूल क्षण है साहब से शिकायत करने का। उन्होंने हाथ जोड़ याचनापूर्ण नज़रें साहब के चेहरे पर गड़ा दीं, 'एक प्रार्थना थी साहब।'

'हां, हां कहिए ना? इतना संकोच क्यों कर रहे हैं?'

'जी' बनवारीलाल अब भी झिझक रहे थे।

'दरअसल कार्यालयीन कार्य था। आप कहेंगे, बंगले पर आकर...'

'कोई बात नहीं' साहब ने उन्हें आश्वस्त किया, 'उसूलों में कभी-कभी ढील दी जा सकती है। फिर अब तो आप रिटायर हो चुके हैं, दूसरे शहर में रहते हैं। आप नि:संकोच कहिए।'

बनवारीलाल का स्वर यकायक थरथरा उठा, 'साहब! मेरे पी.एफ. का और अन्य फंड्स का पैसा दिलवा देते तो बड़ी मेहरबानी होती।'

'पी.एफ. और अन्य फंड्स?' साहब बुरी तरह चौंक पड़े। 'क्या कह रहे हैं आप? आपको अभी तक मिले नहीं?'

'नहीं साहब' साहब की प्रतिक्रिया से बनवारीलाल को उम्मीद बंधती महसूस हुई।

'अजीब बात है' साहब के चेहरे पर हैरतभरी उलझन उभर आई, 'साल भर से अधिक हो गया और आप अभी तक चुप बैठे हैं?'

'चुप नहीं बैठा साहब' बनवारीलाल की उत्तेजना एकदम बढ़ गई, 'कई बार कोशिश की। बीसियों चक्कर लगा चुका हूं दफ़्तर के।'

'फिर भी नहीं हुआ?'

'नहीं साहब।'

'हद है!' साहब झल्ला गए, 'एक ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ रह चुके कर्मचारी के संग यह सलूक?'

'जी' बनवारीलाल की आंखों की चमक बढ़ गई।

'वैसे' साहब ने याददाश्त पर ज़ोर देते हुए अपनी नज़रें उनके चेहरे पर टिका दीं।

'फंड्स आदि का काम तो रामप्रसादजी देखते हैं ना?'

'जी हां।'

'वो तो आपके मित्र हैं न?'

'ज्ज्जी..!' बनवारीलाल ने जुबान काट ली।

'फिर कहा नहीं उनसे? मित्र का काम'

'काहे की मित्रता साहब' बनवारीलाल के कलेजे से ठंडी आह निकल गई, 'दफ़्तर छूटा, मित्रता भी टूट गई। चक्कर पर चक्कर लगवाए जा रहे हैं।'

'मैं समझा नहीं, किस बात के चक्कर?'

'अरे फ़िजूल में ही' बनवारीलाल का स्वर कांप उठा, 'कभी यह जानकारी छूट गई। कभी यह एंट्री गलत कर दी।'

'आपने कहा नहीं- एक बार में सब तफ़सीर से बतला दें?'

'कहा था। झल्ला जाते हैं- सब लिखा तो है फार्म में!'

हैरत से साहब स्तब्ध हो गए। उन्हीं की कंपनी में, उन्हीं की नाक के नीचे, इतनी लालफीताशाही? उनके जबड़े कस गए।

बनवारीलाल के दिल की धड़कनें बढ़ गईं।

कुछ क्षण के मौन के बाद साहब ने सहानुभूतिपूर्वक उन्हें निहारा, 'मुझे बेहद खेद है बनवारीलालजी। कंपनी के इतने पुराने और ईमानदार मुलाज़िम होने के बावजूद आपको परेशानियां उठानी पड़ीं, आप एक बार भी मुझसे मिल लेते'

'आप इतना व्यस्त रहते हैं। महीने में पच्चीस छब्बीस दिन अन्य ब्रांचों के दौरे, इत्तफ़ाक़ से आज आप यहीं थे'

'खैर! जो हुआ सो हुआ' मृदुल मुस्कान बिखेर साहब ने उन्हें आश्वस्त किया। 'अब आप रत्तीभर चिंता न करें। कल आपका काम निश्चित रूप से हो जाएगा।'

'सच साहब' आह्लाद से बनवारीलाल का गला हठात् रुंध गया। कृतज्ञतापूर्वक उन्होंने हाथ जोड़ लिए। 'बहुत-बहुत मेहरबानी होगी साहब आपकी। मेरा दिल ही जानता है, कितनी परेशानी होती है मुझे बार-बार गांव से यहां आने में?'

'गांव से आने में?' साहब एकदम चौंके, 'मैं समझा नहीं, कौन से गांव से आने में? आप तो शायद रायपुर रहने लगे हैं न, अपने बड़े बेटे के पास?'

'जी!' बनवारीलाल सहसा संकोच में पड़ गए।

'फिर ये गांव?'

बनवारीलाल अटकने लगे, 'जी वो चालीस-पैंतालिस किलोमीटर पर एक ग्राम मांचल है। जीरापुर से नौ किलोमीटर अंदर'

'हां हां सुना तो है। नदी किनारे कोई पुरानी गढ़ी है।'

'जी हां वहीं। वहां खेती है छोटी-सी, साढ़े छह बीघा की।'

'अच्छा-अच्छा। उसे बटाई पर देने आए होंगे अभी रायपुर से?'

'जी...' बनवारीलाल संकोच से वहीं सोफे में धंस गए। 'अज्ज आऽजकल मैं वहीं रहता हूं।'

'वहां!' साहब की आंखें आश्चर्य से फैल गईं। 'उस सुविधाहीन गांव में?'

'जी' बनवारीलाल सिर झुकाए अपने में और सिमट गए।

'मेरा ख्याल है शायद बसें भी नहीं जातीं वहां? तीन-चार किलोमीटर पैदल जाना होता है?'

हां में बनवारीलाल ने सिर हिला दिया।

'फिर ऐसे सुविधाहीन गांव में रहने की क्या सूझी आपको? रायपुर में मन नहीं लगा आपका?'

जवाब देने की बजाय बनवारीलाल सिर झुकाए बैठे रहे। उनकी आंखों की कोरों पर आंसू चमकने लगे, साहब गहरी नज़रों से अब भी उन्हें भांप रहे थे। उन्होंने भेदते स्वरों में उनके दिल को कुरेदा, 'आपने जवाब नहीं दिया बनवारीलालजी? रायपुर में मन नहीं लगा क्या आपका?'

भला क्या जवाब देते बनवारीलाल? क्या अपने ही घर का दुखड़ा रो देते साहब के सामने? और वह भी अपनी औलाद के विरुद्ध! होंठ भींचे सिर झुकाए बैठे रहे।

साहब की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। उन्होंने बालकों सी कौतूहल से पूछा, 'आपके दो पुत्र और हैं न जबलपुर और इटारसी में?'

हां में बनवारीलाल ने हौले से सिर हिला दिया।

'वे भी शायद अच्छे ओहदों पर हैं? खुद के बंगले हैं? उनके यहां गए थे?'

'जी!' फटी धौंकनी-सी उनके गले से आवाज़ निकली।

'फिर वहां भी नहीं रहते? ऐसी कमज़ोर वृद्धावस्था में, आपकी पत्नी को तो गठिया है न?'

बनवारीलाल का हृदय फट पड़ने की सीमा तक भर आया। अपने मन का सैलाब रोकना उनके लिए दुश्वार हो गया। आखिर क्या मज़ा मिल रहा है साहब को, मेरा जख्म कुरेदकर? साहब भी उन्हें उन लोगों सरीखे हल्के लगने लगे,

जिन्हें दूसरों की ढकी उघाड़ने में मज़ा आता है। मन तो हुआ, साहब का बंगला तुरंत छोड़ दें, मगर बनता काम बिगड़ जाने की आशंका थी। इसलिए मन मसोसकर सिर झुकाए चुपचाप बैठे रहे।

साहब आज कुछ विचित्र मूड में थे, बनवारीलाल के निजी जीवन के प्रति उनकी उत्सुकता बढ़ती जा रही थी, 'मेरी समझ में नहीं आता, आप स्वयं इतने कमज़ोर, पत्नी बीमार, उस सुविधाहीन गांव में रहने की बजाय आप यहीं क्यों नहीं रहते, अपने घर?'

'अपना घर' सुनते ही एक हूक-सी उठी बनवारीलाल के हृदय में। थरथराती आवाज़ में उन्होंने अपना पथराया चेहरा ऊपर उठाया, 'घर तो बेच दिया था साहब!'

'बेच दिया था?' हैरत से साहब ने उन्हें घूरा, 'कब?'

'रिटायर होने के 3-4 माह पूर्व।'

'क्यों?'

जवाब देते हुए बनवारीलाल को गले में कांटे चुभने लगे। 'तीनों बेटे-बहू ज़ोर देने लगे कि रिटायर होने के बाद तो हम पति-पत्नी को उन लोगों के पास ही रहना होगा। यहां इतनी दूर, सूने मकान की देखभाल कौन करेगा? किराए पर देने में भी ख़तरे है।'

'और आपने घर बेच दिया?'

'जीऽऽऽ!' पछतावे के शूल से वे कराह उठे।

आज भी वे उस पल को कोसते रहते हैं, जब तीनों बेटे-बहुओं के बहकावे में आकर उन्होंने अपना घर बेच दिया था। काश! न बेचा होता! शहर में रहने का ठौर तो रहता! भले ही छोटा-सा घर था। कहने को तो रहता कि अपने स्वयं के घर में रह रहे हैं।

सैकड़ों शूल खच्-खच् कर उनके हृदय में चुभने लगे। कितनी भारी ग़लती कर बैठे थे वे। लोग तो ज़िंदगीभर पैसा-पैसा जोड़कर बुढ़ापे के नीड़ का इंतज़ाम करते हैं और उन्होंने बना-बनाया अपना नीड़ बेच दिया और पैसा बांट भी दिया तीनों में बराबर।

'ऐसा क्यों कर दिया आपने?' तरस खाते हुए साहब बुरी तरह कलप उठे, 'कम से कम पैसा तो अपने पास रखना था।'

'अब साहबजी' याद करते हुए बनवारीलाल का हृदय हाहाकार कर उठा, 'मैंने सोचा पैसा कहां छाती पर बांधकर ले जाना है? मरने के बाद तो तीनों का ही है।'

'मरने के बाद न? और जीते जी?' साहब की आत्मा भी बुरी तरह तड़प उठी।

'बनवारीलालजी! सूरज भी सांझ को जब अस्ताचल को जाता है, तो चंद्रमा के पास अपनी रोशनी संजोकर रखता है- रात के सहारे के लिए! और आपने? कुछ भी नहीं रखा अपने पास, बांट दिया सब। कम से कम अपनी वृद्धा बीमार पत्नी का तो ख्याल किया होता। पूरी मुट्ठी खोल दी?'

बनवारीलाल का इतने दिनों का दर्द, जो अंदर-ही-अंदर रोक रखा था, साहब के सहानुभूतिपूर्ण रुख का स्पर्श पाते ही लावा बनकर फूट पड़ा। हाथों में मुंह छुपा वे फफक-फफक कर रो पड़े एक नन्हें से बच्चे की तरह।

दुनिया की भीड़ में लुट चुके एक नादान, अनाथ, असहाय बच्चे की तरह, उनका करुण रुदन रोके ही नहीं रुक रहा था, 'कुछ नहीं बचा साहब मेरे पास, कुछ भी नहीं, ले-देकर बस ये मांचल वाली ज़मीन है। दाम कम मिल रहे थे उस वक्त, भगवान ने कुछ ऐसी बुद्धि दे दी कि बेची नहीं। लड़कों को भी जानकारी नहीं थी उसकी, वरना...'

साहब स्तब्ध सुनते रहे।

बनवारीलाल सोफे से उतर गिड़गिड़ाने लगे, 'मेरे फंड्स के पैसे दिलवा दो साहब, बड़ी मेहरबानी होगी, बार-बार मेरे बूते का नहीं रहा किराया लगाकर आना। एक रुपया ख़र्च करने के लिए बहुत सोचना पड़ता है साहब मुझे।'

साहब को अब और सुनना दुश्वार हो गया। पिता के उम्र का एक वृद्ध इंसान उनके सामने इस तरह... ? उन्होंने खींचकर वृद्ध बनवारीलाल की कृशकाया को अपने बाहुपाश में जकड़ लिया। भावातिरेक में उनसे बोला नहीं जा रहा था। किसी तरह दिल पर क़ाबू पा उन्होंने रुंधे कंठ बनवारीलाल को आश्वस्त किया, 'अब आप रत्तीभर चिंता न करें बनवारीलालजी, आपका काम हो गया समझो। ब्याज समेत एक-एक पैसा आपको मिल जाएगा।'

'सच साहब!' कृतज्ञता से बनवारीलाल की सूनी आंखें चमक उठीं।

साहब आत्मीयता से मुस्कुरा दिए, 'अब तो ख़ुश?'

आह्लादित बनवारीलाल ने उनके हाथों को अपनी सजल आंखों से लगा लिया।

'अच्छा बनवारीलालजी,' उनकी पीठ थपथपा साहब ने उनके मन को खंगाला, 'फंड्स का पैसा मिलने के बाद आपकी क्या योजना है?'

'बस, ये पैसे मिल जाएं, बैंक में एफ.डी. कर दूंगा। फिर ब्याज से...'

'और रहेंगे कहां?'

'मांचल वाली ज़मीन बेचकर यहीं शहर में छोटा-सा घर ले लूंगा।'

'रायपुर या अन्य बेटों के पास नहीं जाएंगे?' कटुता और नैराश्य से उनके होंठ फड़फड़ा कर रह गए।

साहब उनके चेहरे पर आते भावों को भांपते रहे। कुछ क्षणों के मौन के बाद उन्होंने गहरे स्वरों में पूछा, 'बनवारीलालजी, क्या आपको मालूम है आपके फंड्स के काम में अड़ंगे कौन डाल रहा था? किसकी हरकत होगी यह?'

'जाने दो साहब, मेरा काम बन गया, अब मेरे मन में कोई कटुता नहीं।'

'फिर भी, कौन होगा वह अड़ंगेबाज?'

'है तो वही, जो कभी मेरे मित्र राम प्र.'

'नहीं बनवारीलालजी, वे नहीं मैं, मैं स्वयं आपका जी.एम.'

'अ..आऽऽऽप!' हैरत से बनवारीलाल की आंखें फैल गई। अविश्वास से वे साहब को देखते रहे।

'हां बनवारीलालजी! मेरे ही कहने पर रामप्रसादजी टालमटोल कर रहे थे।'

बनवारीलाल को अब भी विश्वास नहीं हो रहा था।

साहब बेहद गंभीर थे, 'आपकी रिटायरमेंट के महीनेभर पूर्व रामप्रसादजी मेरे पास आए थे और उन्होंने ही ऐसा करने के लिए मुझसे अनुरोध किया था।'

'म्ऽमगर क्यों?'

'बनवारीलालजी!' साहब की आवाज़ भारी हो गई, 'आपकी आंखों पर ममता की पट्टी बंधी थी। आप कुछ देख नहीं पा रहे थे। मगर रामप्रसादजी ने सब भांप लिया था।'

'क्या?'

'आपके बेटे-बहुओं में से एक भी आपकी सेवा नहीं करने वाला। सबके सब अपने-अपने हिस्से पर नज़रें गड़ाए थे।'

बनवारीलाल की आंखें आश्चर्य से फैल गई।

साहब एक-एक शब्द तौलते हुए गहराई से उन्हें घूर रहे थे। 'बनवारीलालजी, यदि फंड्स के ये पैसे भी रामप्रसादजी रिटायरमेंट के दिन ही दिलवा देते तो...'

'तो?' बनवारीलाल का कलेजा मुंह को आ गया। वे तो इनका बंटवारा भी तीनों में...?

'फिर आज क्या करते आप, आप?'

सोचकर ही बनवारीलाल भीतर तक दहल उठे। क्या हालत होती उनकी आज? उनके नेत्र पुनः छलछला आए, वे व्यर्थ ही अपने मित्र को दोष देते रहे। मगर उसने तो...? उनका दिल अपने मित्र से मिलने को तड़प उठा। वे जाने के लिए तत्क्षण उठे। तभी उन्होंने देखा, रामप्रसाद ठीक उनके पीछे खड़े हैं, 'रामप्रसाद' कहते हुए वे उनके गले लग फूट-फूटकर रो पड़े। दोस्ती का फ़र्ज़ कैसे अनोखे अंदाज़ में निभाया था इस निर्मोही ने।

विद्याधर से विद्यासागर, संतों में शिरोमणि संत हैं,
महावीर सम दिखने वाले, कलियुग के भगवंत हैं।
वर्तमान के वर्द्धमान, जिनआगम के स्वाध्यायी वो,
विनयांजलि अर्पित करते गुरु विद्यासागर जयवंत हैं॥

विषय-विकारों को तजकर जिसने वैराग्य को धारण किया,
लेकर हाथ मे पिच्छी कमण्डल घर संसार का त्याग किया।
जिनकी अमृतमयी वाणी को सुनकर मन्त्रमुग्ध हर प्राणी हैं,
ऐसे जिनवाणी मां के सपूत ने जिनशासन का नाम किया॥

जिनके त्याग तपस्या चर्या से सारी दुनिया अभिभूत हैं,
नज़र जिस पर भी पड़ जाए, बिन मंत्रों के वशीभूत हैं।
संयमरूपी आभूषण से तन मन कुंदन बनाया जिसने,
ऐसे गुरुवर के दर्शन मात्र से, होता हर काम फलीभूत हैं॥

दैदीप्यमान नक्षत्र की भांति ललाट स्वयं तेजोमण्डित है,
आचार्य दीक्षा अंगीकार कर मन भी निर्मल अखंडित है।
संयम को धारण कर वो तो अब मोक्ष मार्ग की ओर चले,
समवशरण में जा बैठे गुरुवर मन में जो संकल्पित हैं॥

आगम को परिभाषित करते ऐसे वो पावन ग्रन्थ हैं,
विनयांजलि अर्पित करते गुरु विद्यासागर जयवंत हैं।

*-**जितेन्द्र जैन 'जीतू'**, नौगांवा*

विधवा सहायता

★ **श्री सुमेर चंद धीरेंद्र कुमार जैन,** भरतपुर ने विधवा सहायता हेतु रु. 6000/- भेंट किये। *(र.सं. 8256)*

★ **श्री विनोद कुमार मनोज कुमार जैन** तिजारा फाटक, अलवर ने विधवा सहायता हेतु रु. 6000/- भेंट किये। *(र.सं. 8258)*

★ **श्री सुमति चंद जी, श्रीचंद जैन** (पूर्व महामंत्री, अ.भा.प. जैन महासभा, खोह वाले) 110, अशोक विहार विस्तार, जयपुर ने विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8259)*

★ **श्री अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा, शाखा मुंबई,** मुंबई ने विधवा सहायता हेतु रु. 24,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8260)*

★ **श्री अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा, शाखा बोदला,** आगरा ने विधवा सहायता हेतु रु. 51,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8262)*

★ **श्री अमित जैन अंकित जैन** पुत्र श्री त्रिलोक चंद जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष, अ.भा.प. जैन महासभा), अलवर ने विधवा सहायता हेतु रु. 36,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8265)*

हमारा अपना एक घर हो
अबका अपना

प्लॉट एवं विला उपलब्ध

navkar वाटिका कुबेर
अपनी जमीन अपनी छत
1 एवं 2.5 बीएचके घर, किफायती दर पर

RERA REGISTRATION NO.: RAJ/P/2019/961

मुख्यमंत्री जन आवास योजना के प्रावधानों के अन्तर्गत

खेरली की प्रथम गवर्नमेंट अप्रूव्ड आवासीय योजना

विकासकर्ता :
नवकार प्राईम डेवलपर्स प्रा. लि.
नवकार वाटिका, पेपर मिल, खेरली, जिला-अलवर (राज.)

Follow us on:
navkar.vatika

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें +91 7891126673, +91 9414515121

पवन जैन (चौधरी)
पार्षद, नगर पालिका खेरली
मो. : 9414020800

प्रतिष्ठान :

- अमित चन्द्रा टेक्सटाइल प्रा. लि., अलवर
- नवकार प्राइम डवलपर प्रा. लि., अलवर
- नवकार साड़ीज, अलवर
- नवकार वाटिका, खेरली
- नवकार ट्रेडिंग कम्पनी, अलवर
- शिखा टेक्सटाइल एजेंसी, अलवर
- अलवर सॉल्वेक्स, MIA, अलवर
- मै. पवन कुमार जैन, MIA, अलवर

निवास स्थान :- 1/544 काला कुआं, हाउसिंग बोर्ड, अलवर

पत्रिका विज्ञापन सहयोग राशि

** संशोधित दरें दिनांक 25.01.2022 से लागू*

	वार्षिक	मासिक
कवर पृष्ठ अंतिम (मल्टीकलर)	31,000/-	
कवर पृष्ठ द्वितीय (मल्टीकलर)	25,000/-	
कवर पृष्ठ तृतीय (मल्टीकलर)	25,000/-	
कलर पृष्ठ (मल्टीकलर)	21,000/-	3,000/-
पुण्य स्मृति आधा पृष्ठ श्वेत श्याम	10,000/-	1,000/-
पुण्य स्मृति पूरा पृष्ठ श्वेत श्याम	15,000/-	1,500/-

पत्रिका सदस्यता

पत्रिका वार्षिक शुल्क	50/-	5/-
पत्रिका आजीवन सदस्य	500/-	
पत्रिका संरक्षक सदस्य	11,000/-	
पत्रिका हितैशी सदस्य	5100/-	

सूचना

(अ) रु. 500/- से कम के आर्थिक सहयोग राशि वालों के नाम पत्रिका में प्रकाशित नहीं किये जायेंगे।

(ब) जो सदस्य अपनी पत्रिका कोरियर द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं वह रु. 50/- प्रति माह के हिसाब से एक वर्ष का शुल्क रु. 600/- श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका को भेजें।

- *पत्रिका हेतु प्रकाशनार्थ सामग्री पत्रिका संयोजक/सम्पादक के पास ही प्रेषित करें, जो प्रत्येक माह की 15 तारीख तक प्राप्त होनी चाहिये।*
- *पत्रिका हेतु सदस्यता शुल्क/विशेष सहायता संयोजक के पास प्रेषित करें।*
- *पत्रिका में स्थान उपलब्ध होने पर ही विज्ञापन का प्रकाशन किया जायेगा।*
- *गत वर्ष के रंगीन विज्ञापनदाताओं की बकाया विज्ञापन सहयोग राशि शीघ्र संयोजक के पास भिजवाने का कष्ट करें।*

आप पत्रिका की भुगतान राशि 'श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका' के नाम से या ऑनलाईन खाते में भी भेज सकते हैं, विवरण निम्न है :-

"SHRI PALLIWAL JAIN PATRIKA"
Bank Name : **BANK OF BARODA** • Branch : **DURGAPURA, JAIPUR**
A/c No.: **38260100005783** • IFSC Code : **BARB0DURJAI**

पत्रिका राशि ऑनलाईन जमा कराने के बाद संयोजक को सूचना देवें एवं ट्रांसफर राशि का स्क्रीन शॉट भी भेजें, इसके अभाव में जमा राशि का समायोजन किया जाना संभव नहीं होगा।

चन्द्रशेखर जैन, संयोजक पत्रिका
मो.: 9829134926

मान्यवर,

सभी साधर्मी बन्धुओं को सुचित किया जाता है कि अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा को विधवा सहायता एवं अन्य सहयोग प्रदान करने हेतु राशि चैक, नकद या ऑनलाईन महासभा के खाते में जमा करवाई जा सकती है, जिसका विवरण निम्न है :-

"AKHIL BHARTIYA PALLIWAL JAIN MAHASABHA"
Bank Name : **STATE BANK OF INDIA** • Branch : **C-SCHEME, JAIPUR**
A/c No.: **51003656062** • IFSC Code : **SBIN0031361**

राशि जमा कराने के पश्चात अर्थमंत्री को अवश्य सूचित करें, जिससे जमा की रसीद प्रेषित की जा सके।

भागचन्द जैन, अर्थमंत्री महासभा
मो.: 9828910628

वैवाहिकी

सूचना

1. पत्रिका में प्रकाशित वर/वधू की तलाश के अंतर्गत विवरण की सत्यता से सम्पादक अथवा पत्रिका का किसी भी प्रकार का दायित्व नहीं हैं। वर/वधू दोनों पक्ष पूर्ण जानकारी अपने स्तर से करने के बाद ही संबंध स्थापित करें।
2. पात्रों के विवरण में आयु के स्थान पर जन्मतिथि तथा आय चार/पांच अंको में, के स्थान पर वास्तविक आय लिखें।

नोट : प्रकाशन योग्य सामग्री एवं संबंध होने की सूचना पत्रिका संयोजक को प्रषित करें जिससे आगामी अंक में विज्ञापन का प्रकाशन किया जाये या न किया जाये।

वर की तलाश

★ **चित्राक्षी जैन** पुत्री श्री पदमचंद जैन, जन्मतिथि 15.09.1992 (प्रात: 3:15 बजे, अलवर) कद 5'-6'', शिक्षा- एम.टेक. (सी.एस.), गौत्र : स्वयं- अठवरसिया, मामा- चौधरी, सम्पर्क : 2क-292, शिवाजी पार्क, अलवर, मो.: 9413048598 *(फरवरी)*

★ **गार्गी जैन** पुत्री स्व. श्री अमर चंद जैन, जन्मतिथि- 27.09.1994 (जयपुर), कद- 5'-3'', शिक्षा- एम.कॉम., शासन सचिवालय, जयपुर में सहायक सांख्यकी अधिकारी के पद पर कार्यरत, गौत्र : स्वयं- अम्बिया, मामा- चौरबंबार, सम्पर्क : ई-त्रिवेणी नगर, जयपुर, मोबाइल : 7073066521 *(मार्च)*

★ **Kratika Jain** D/o Sh. Rakesh Kumar Jain, DoB 14.10.1997 (at 06:40AM, Agra), Height 5'-3", Education: MA (Eng.), CCC, O'Level, D.El.Ed., CTET/UPTET - Primary/Junior Qualified, Persuing B. Ed. and Preparing for Govt. Job, Gotra : Self- Baderia, Mama- Bhadarwasi, Contact : 9456402442, 7055191567, Email : rkjain1665@gmail.com *(Dec.)*

★ **Megha Jain** D/o Sh. Sunil Kumar Jain, DoB 02.04.1996 (at 02:20 pm, Beawar), Fair Complexion, Height 5'-3", Education : B.Tech. (CS), Occupation- Working in IT Company (Techuz InfoWeb Pvt. Ltd., Ahmedabad), Package- Rs. 3.5 Lakh, Contact : Saras Dugdh Dairy, Raniwara, Dist. Jalore, Mob.: 9460960622, 9001831835 *(Dec.)*

★ **Harshita Jain** (Manglik) D/o Sh. Ashok Jain, DoB 03.06.1995 (at 12:30 pm, Kota), Height 5'-1", Education : B.Com., M.Com., Fashion Designing, Gotra : Self- Kudal, Mama- Badwasia, Contact : 9414596857, 9462762900, Email : harshijain880@gmail.com *(Dec.)*

★ **Sandhya Jain** (Manglik) D/o Sh. Manoj Kumar Jain, DoB 28.11.1997 (at 06:55 pm, Alwar), Height- 5'-2", Education- B.Tech (ECE), M.Tech. (VLSI), Profession- Duty Logistics Officer in Genpact India Pvt. Ltd. Jaipur, Gotra : Self- Rajeshwari, Mama- Kher, Contact : Near Jain Temple, Ramgarh, Dist. Alwar-301026, Mob.: 9413066719 *(Dec.)*

★ **Surbhi Jain** D/o Sh. Uttam Chand Jain, DoB 21.01.1996 (at 12:30am, Morena), Height- 5Ft., Fair Complexion, Education- Chartered Accountant (CAT), B.Ccom., Occupation- Deputy Manager In ICICI Bank, Gwalior, Gotra : Self- Banjaare, Mama- Chandpuria, Contact : AB Road, Banmore, Distt. Morena (M.P.), Mob.: 9691454590, 7000016910 *(Jan.)*

★ **Astha Jain** D/o Shri Bharat Bhushan Jain, DoB 24.12.1995 (at 02:35 PM, Palam, New Delhi), Height- 5'-3", Fair Complexion, Education- B.A., Profession- Working as Stenographer in National Highways Authority of India, Gotra : Self- Maleswari, Mama- Barolia, Contact : H.No. WZ-246, Palam Village, New Delhi-110045, Mob.: 9899012731, 9013454299 *(Jan.)*

★ **Meenu Jain** (Charu) D/o Sh. Devesh KUmar Jain, DoB 11.05.2000 (at 09:00 AM, Agra), Height- 5'-2", Fair Complexion, Education- 12th, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Behatriya, Contact : Vill. & Post Main Market Midhakur, Agra, Mob.: 8979082704, 7037557836 *(Jan.)*

★ **Shailina Jain** (Anshik Manglik) D/o Late Sh. Sunil Kumar Jain, DoB 23.01.1999 (at 9:45 PM, Alwar), Fair Complexion, Height 5Ft., Education- B.Tech. (Computer Science), Job- Data Analyst in Axtria (Gurgoan), Gotra : Self- Kher, Mama- Choudhary, Contact : Smt. Sunanda Jain, 197 Nehru Nagar 200 Foot Road, Alwar, Mob.: 9571556869 *(Jan.)*

★ **Ashi Jain** D/o Sh. Ajit Kumar Jain, DoB 16.01.1998 (at 11:45 am, Agra), Height 5Ft.,Education- B.Desgn., Occupation- Junior Footwear Merchandiser (Dlords Footwear and Fashion Pvt. Ltd., Gotra : Self- Januthriya, Mama- Barbasiya, Contact : 21/1049, Indira Nagar, Lucknow, Mob.: 9412850182, 9457465002 *(Feb.)*

★ **Arti Jain** D/o Sh. Bhagchand Jain, DoB 22.06.1998 (at 9:05 am, Kota), Height 5'-3", Education- B.Tech. (Civil), Gotra : Self- Nageshwariya, Mama- Badariya, Contact: 4-F-

32, Opp. Nasiya Ji Jain Mandir, Dadbari Extn., Kota, Mob.: 9414225917, 9414317362 *(Feb.)*

★ **Silky Jain** D/o Sh. Jagdish Prasad Jain, DoB 16.09.1997 (at 1:59 pm, Alwar), Height 5'-1", Education- B.Tech., Presently Preparing for Competitive Exams, Gotra : Self- Lohkirodiya, Mama- Salawadia, Contact : 126, Scheme No. 4, Alwar, Mob.: 8949058577, 9413436435 *(Feb.)*

★ **Ojasvi Jain** (Manglik) D/o Sh. Pradeep Jain, DoB 29.10.1996 (at 02:55 am), Height 5'-5", Education- M.Com (Account & Law), Ph.D (Pursuing), NET Qualified, Gotra : Self- Kher, Mama- Athvarsiya, Contact : Jain Gali, Sikandra, Agra, Mob.: 9568389697, 9027511025 *(March)*

★ **Soniya Jain** (Divorcee) D/o Late Sh. Pawan Kumar Jain, DoB 02.11.1990 (at 08:20 AM, Mandawar, Dausa), Height- 5'-3", Education- BPED, MA (Sanskrit, Political Science), Working- Govt. Physical Teacher in Rajasthan Government (Alwar), Preference- Only Alwar City, Gotra : Self- Bahttariya, Mama-Digamber Jain, Contact : Smt. Sushama Jain, HB/137, Bajrang Vihar Colony, Mahwa, Dausa, Mob.: 9680539915, 8824995555 *(March)*

★ **Ankita Jain** D/o Sh. Chandra Shekhar Jain, DoB 08.08.1995 (at 11:45 AM, Jaipur), Height- 5'-3", Education- B.Tech (E.C.), Occupation- UDC in ESIC (Ministry of labor and Employment Central Govt.) Vadodara (Gujarat), Gotra : Self- Baderiya, Mama- Mahrod, Contact : 78-A, Madhav Nagar, Maharani Farm, Durgapura, Jaipur-302018, Mob.: 9414752966 *(March)*

★ **Shivani Jain** D/o Sh. Mahavir Jain, DoB 23.10.1997 (at 6:30 PM, Morena), Height- 5'-3", Fair Complexion, Education- B.Tech (CS) From Banasthali Vidhyapith in 2019, Job- Service Now Developer in Genpact India Pvt. Ltd, Gurgaon, Gotra : Self- Devaria, Mama- Nageshwariya, Contact : Girraj Hardware Store, Lohiya Bazaar, Morena (M.P.), Mob.: 9425126178, 8319115879 *(March)*

★ **Lily (Vaishali) Jain** D/o Sh. Babu Lal Jain, DoB 13.12.1994 (at 1:40 PM, Hindaun City), Education- B.Tech (ECE) Job- Serving in SBI, Vadodra, Income- 51,000/- per month, Gotra : Self- Pawatiya, Mama- Gindorabaks, Contact : House No. 69, Heera Nagar Vistar, Heerapura, Dhavas Road, Jaipur, Mob.: 9950639997, 8630866389 *(March)*

वधू की तलाश

कृपया दहेज लोभी पत्रिका में प्रकाशनार्थ विज्ञापन न भेजें

★ **शोभित जैन** पुत्र श्री राकेश कुमार जैन, जन्मतिथि 25.10.1997 (रात्रि 12:35 बजे, मंडावर जिला दौसा), शिक्षा बी.कॉम., कार्य- स्वयं का होलसेल व्यवसाय, आय- 6 अंकों में मासिक, गोत्र : स्वयं- कोटिया, मामा- वोरांग डांगिया, सम्पर्क : 77/167, अरावली मार्ग, शिप्रा पथ, मानसरोवर, जयपुर (राज.), मो.: 9694575758, 9414067972 *(जनवरी)*

★ **ऋषभ जैन** पुत्र श्री प्रदीप कुमार जैन, जन्मतिथि 13.05.1995 (प्रातः 6:00 बजे), कद- 5'-5'', शिक्षा- बी.कॉम., पी.जी.डी.एम. फाइनेंस, जॉब- एरिया क्रेडिट मैनेजर लार्सन एंड टुब्रो फाइनेंस जोधपुर, आय 12 लाख वार्षिक, गोत्र : स्वयं- जनूथरिया, मामा- चौरबम्बार, सम्पर्क : 9 भजन नगर, अजमेर रोड, ब्यावर, मो.: 9460312001, 9414866607 *(फरवरी)*

★ **अंकुर जैन** पुत्र श्री गोविन्द शरण जैन, जन्मतिथि 26.07.1989, शिक्षा- एम.ए., बी.एड., जॉब- स्कूल टीचर, कद- 5'-7'', गौत्र : स्वयं- भतरीया, मामा- पावटिया, सम्पर्क : हिंडौन सिटी, मो.: 9352409431, 7737980561 *(फरवरी)*

★ **अभिषेक जैन** पुत्र श्री गोविन्द शरण जैन, जन्मतिथि 9.5.1990, कद- 5'-7'', शिक्षा- एम.कॉम., एम.बी.ए., जॉब- प्राइवेट नौकरी (कोटा), सैलरी 40000, गौत्र : स्वयं- भतरीया, मामा- पावटिया, सम्पर्क : हिंडौन सिटी, मो.: 9352409431, 7737980561 *(फरवरी)*

★ **सीए शुभम जैन** पुत्र श्री सुरेश चन्द्र जैन, जन्मतिथि 16.10.1994 (सायं 5.15, जयपुर), कद- 5'-7'', शिक्षा- बी.कॉम., एम.कॉम., एल.एल.बी., सीए, भारत सरकार के मुम्बई (SPMCIL) में सहायक प्रबन्धक (वित्त एवं लेखा) के पद पर कार्यरत, गौत्र : स्वयं- लेदोडिया, मामा- वैधवैराष्टक, सम्पर्क : ए-49, सरस्वती नगर, मालवीय नगर, से. 6 के पास, जयपुर, मो.: 9829205321 *(फरवरी)*

★ **देवेश जैन** पुत्र स्व. श्री चेतन कुमार जैन, जन्मतिथि- 23.09.1993 (प्रातः 4:25 बजे, आगरा), कद- 5'-7'', शिक्षा- बी.सी.ए., एम.सी.ए., जॉब- सॉफ्टवेयर इंजीनियर, मुम्बई, आय- 8 लाख वार्षिक, गोत्र : स्वयं- बड़वासिया, मामा- चांदपुरिया, सम्पर्क : आगरा, मो.: 7520339306 *(मार्च)*

★ **अंकुर जैन** पुत्र श्री गोविन्द शरण जैन, जन्मतिथि- 26.07.1989, रंग गोरा, कद- 5'-7'', शिक्षा- एम.ए., बी.एड., गौत्र : स्वयं- भतरीया, मामा- पावटिया, सम्पर्क : हिंडौनसिटी, मोबा.: 9352409431, 7737980561 *(मार्च)*

★ **अभिषेक जैन** पुत्र श्री गोविन्द शरण जैन, जन्मतिथि- 09.05.1990, कद- 5'-7'', शिक्षा- एम.कॉम., एम.बी.ए., प्राइवेट नौकरी (कोटा), सैलरी- 40,000/-, गौत्र : स्वयं- भतरीया, मामा- पावटिया, सम्पर्क : हिंडौनसिटी, मोबा.: 9352409431, 7737980561 *(मार्च)*

★ **Abhinav Jain** S/o Sh. Sholeshwar Jain, DoB 19.03.1994 (at 12:13 PM, Alwar), Fair Complexion, Height- 5'-7", Education- BBA, MBA, Work- Started Own Trading Business in 2018, Presently Working as Distributor for Nuvoco Vistas Corp Ltd., Duraguard Cement, Alwar, Gotra : Kashmiriya, Contact : K-1/6, Apna Ghar Shalimar Near Telco Circle Alwar-301001, Mob.: 9319125252, 9057400272, 9425125811 *(Jan.)*

★ **Shubham Jain** S/o Sh. Sumat Kumar Jain, DoB 23.11.1994 (at 1:45 AM, Bharatpur), Height- 5'-6", Fair Complexion, Education- B.Tech. (Chemical), Occupation- Senior Engineer in Nuberg Engg. Ltd., Noida (UP), Package- 10.5 LPA, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Pawatiya, Contact : 604, Orient Residency, Krishna Sagar, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9460738602 *(Jan.)*

★ **Kshitij Jain** S/o Sh. Satish Chand Jain, DoB 25.10.1989 (at 06:45 AM, Delhi), Height 5'-10", Education- MCA, Job- Working as CXM in an IT MNC - Noida, Salary- Rs. 29 LPA, Gotra : Self- Vairashtak, Mama- Januthariya, Contact : Flat No. 612, Tower C, Gaur Sports Wood, Sector 79, Noida, Mob.: 9871981382, 9650334767, Email : sjainchand@gmail.com *(Jan.)*

★ **Amit Kumar Jain** S/o Sh. Dinesh Chand Jain, DoB 16.09.1996 (at 4:00 PM, Dausa), Height- 5'-6", Education- M.A., Occupation- Bussiness (Hotel & Guest House), Income-18 LPA, Gotra : Self- Kher, Mama- Nageshwariya, Contact : Mehandipur Balaji, Dist. Dausa (Raj.), Mob.: 9784761984, 8955011011 (Whatsapp), 9829428416 *(Jan.)*

★ **Laksh Jain** S/o Sh. V.K. Jain (Nowgaon Wale), DoB 05.09.1993 (at 1:07pm, Alwar), Height 5'-10", Education- B.Tech (NIT Nagpur), Currently Working with EXL (MNC) as Senior Manager-Analytics in Gurgaon, Gotra : Self- Aamiya, Mama- Bayania, Contact : 9167755866, 9820827871, Email : vijay_257@yahoo.com *(Jan.)*

★ **Amit Jain** (Mangalik) S/o Sh. Ajay Jain, DoB 22.03.1995 (at 03:58 AM, Delhi), Height 5'-8", Education- B.Tech., Occupation- Software Engineer in Cognizant (Noida), Package 13.5 LPA, Gotra : Self- Vairashtak, Mama- Mehtiya, Contact : Mayur Vihar, Delhi, Mob.: 8368394410, Email : ajayjain1961@gmail.com *(Jan.)*

★ **Palak Jain** S/o Sh. Ashok Kumar Jain, DoB 19.11.1991 (at 2:35 PM), Height- 5'-7", Education- B.Com, MBA, Service- Process Analyst in Tata Consaltancy Service, Gurgaon, Package- 5 LPA, Gotra : Self- Baderia, Mama- Barolia, Contact : House No. 1724, Sector 7, Avas Vikas Colony, Bodla, Agra-282007, Mob.: 9319179796, 9758010189 *(Jan.)*

★ **Rajat Jain** S/o Sh. Rakesh Kumar Jain, DoB 02.11.1992 (at 02:10PM, Mathura), Height- 5'-8", Fair Complexion, Education- B.Tech. (Computer Science), Occupation- Working in Disprz Gurugram (H.R.), Package- 6.60 LPA, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Maimuda, Contact : H.No. 133, Dalpat Street, Koyla Wali Gali, Holi Gate, Mathura, Mob.: 9058485772 *(Jan.)*

★ **Pawan Kumar Jain** S/o Sh. K.K. Jain, DoB 19.09.1994, Height- 5'-7", Education- Chartered Accountant, M.Com., Occupation- Deputy Manager in ICICI Bank Jaipur_RO, Package- 10.35 LPA, Gotra : Self- Daduriya, Mama- Nageshriya, Contact : Plot No. 14, Sky House, Dronpuri, Vaishali Nagar West, Jaipur, Mob.: 9461588831, 9024272579 *(Jan.)*

★ **Shobhit Jain** S/o Sh. Rakesh Jain, DoB 25.10.1997 (at 12:35AM, Mandawar, Dausa), Height- 5'-4", Fair Complexion, Education- B.Com., Occupation- Business, Earning- 6 digit, Gotra : Kotiya, Contact : 77/167, Arawali Marg, Shipra Path, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9694707058, 9414067972 *(Jan.)*

★ **Jayeshu Jain** S/o Sh. Suresh Chandra Jain, DoB 12.10.1995 (at 10:45pm, Midhakur, Agra), Height 5-'8", Fair Complexion, Education- Bachelor of Science in Mathematics, Master of Arts in Political Science, Occupation- Business, Gotra : Self- Sarang, Mama- Jaipatiya, Contact : Main Market, Midhakur, Agra, U.P.- 2831025, Mob.: 7983653357 *(Jan.)*

★ **Ankur Jain** (Vinod Jain) S/o Sh. Jagdish Prasad Jain, DoB 15.11.1991 (at 6:30 AM, Firozabad), Height- 177.8 cm., Fair Complexion, Education- B.Com, M.Com, LLB, Job- IT Support and Account in Army Hospital, Star Health and LIC Insurance Agent, Income- 6 LPA, Gotra : Self- Salawadiya, Mama- Mast Chaudhary, Contact : 361, Jain Nagar, Khera, Saiyaad Wali Gali, Firozabad (U.P.)-283203, Mob.: 9045730849, 9837639412, Email : jain_antesh1008@rediffmail.com *(Jan.)*

★ **Nipurn Jain** (Manglik) S/o Sh. Sushil Kumar Jain, DoB 08.01.1994, Height- 5'-8", Fair Complexion, Education- MBA, Job- Bank of

America (Gurugram), Gotra : Self- Janutharia, Mama- Bhatariea, Contact : Flat-403, Mangalam Aadhar Apartments, ShastriPuram, 100 Feet Road, Agra, Mob.: 9557254263 (WhatsApp), 9634294065 *(Jan.)*

★ **Mohil Jain** S/o Sh. Satish Kumar Jain, DoB 14.04.1999 (at 3:46 am, Sarangpur, Dist. Rajgarh), Height- 5'-9", Fair Complexion, Education- B.Tech. (Electrical), Job- IT Engineer in Accenture Company, Indore, Package- 8.40 LPA, Contact : V-397, Vandana Colony, Guna (M.P.)-473001, Mob.: 9826248763, 8319729307 *(Jan.)*

★ **Prateek Jain** S/o Sh. Girish Jain, DoB 15.12.1995 (at Gangapurcity), Fair Complexion, Height- 5'-8", Education- B.Tech (Mech.), Job- Senior Sales Consultant at Celebal Technologies, Jaipur, Package- 29 LPA, Gotra : Self- Baroliya, Mama- Nagesuriya, Contact : 6/338, SFS Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9314621214, 7597483527, Email : girishrekha1994@gmail.com *(Jan.)*

★ **Arpit Jain** S/o Sh. Anil Jain, DoB 30.03.1994, Height 5'-6", Education- B.Tech (Civil), MBA (HR), Occupation- Rollout Manager in IT-Operation Company, Gotra : Self- Khair, Mama- Sarang, Contact : Anil Jain, Director (IT), Govt of India, Mob.: 9928018284, 9602099877, 8209777617 *(Feb.)*

★ **Parag Jain** S/o Sh. Satish Kumar Jain, DoB 21.10.1995 (at 10:54 pm, Alwar), Height 5'-10", Education- B.Tech (CS), Working as a Assistant Manager in SBI, Gotra : Self- Badwasia, Mama- Athwarsia, Contact : 27/169, Naruka Colony, Alwar, Mob.: 7014560816, Whatsapp. 9785564525, E-mail : satishjain912@gmail.com *(Feb.)*

★ **Garvit Jain** (Ankshik Manglik) S/o Late Sh. Pradeep Kumar Jain, DoB 09.09.1992 (at 7:00 pm, Alwar), Education- B.Tech, Job- Service, Bengaluru, Package 30 LPA, Gotra : Self- Ladoriya, Mama- Chodri, Contact : Basant Vihar, Scheme 3, Alwar, Mob.: 8849527429 *(Feb.)*

★ **CA Saurabh Jain** (Manglik) S/o Sh. Vijay Kumar Jain, DoB 30.10.1993 (at 6:30 pm, Jaipur), Height 5'-6", Education- Chartered Accountant (2017) , B.Com, Job- Senior Manager, Credit Saison, Mumbai (Japanese MNC), Gotra : Self- Bhoradangiya, Mama- Bhetariya, Contact : 38, Flat No. G1, ISD Residency 2, Dr. Rajendra Prasad Nagar, Jaipur, Mob.: 9251565282, 8955322167 *(Feb.)*

★ **Sachin Jain** S/o Sh. Mahesh Chand Jain, DoB 15.01.1994 (at 8:45 pm, Kherli), Height 5'-8", Education- B.Tech. (Mechanical), Job- Banking Assistant Sirohi CC Bank, Gotra : Self-Bayaniya Mama- Baroliya, Contact : 54, Kalla Wala Vatika Road, Tonk Road, Jaipur, Mob.: 8949275858, 9414854516, 9414446323 *(Feb.)*

★ **Kapil Pawan Jain** S/o Sh. Pawan Kumar Nemichand Jain, DoB 06.03.1998 (at 9:00 am, Agra), Height- 5'-7", Education- B.Com., Pursuing US CMA, MBA, Occupation- Asst. Manager (Accounts & Finance) in Sarvagram Fincare Pvt. Ltd., Mumbai, Salary- 7.2 LPA, Gotra : Self- Kotia, Mama- Rajoriya, Contact : 905, Radha Raman Society, Opp. D-Mart, Near Maxus Mall, Bhayander West, Mumbai-401101, Mob.: 9969373009, 7021687465 *(Aug.)*

★ **Archit Jain** S/o Sh.Rajesh Jain, DoB 09.07.1995 (at Jaipur), Height- 6 ft., Education- MBA Diploma in Animation,VFX and Graphic Design from Maac Jaipur, Occupation- Own Business Web Developer, Gotra : Self- Ladoriya, Mama- Chandpuriya, Contact : 962, Kissan Marg, Barket Nager, Tonk Phatak, Jaipur, Mob.: 9351537837 *(March)*

★ **Rahul Jain** S/o Sh. Jagdish Prashad Jain, DoB 15.12.1994 (at 9:45pm, Hindaun City), Height- 5'-10", Education- B.Tech (Electronics & Communication), Occupation- Nircon & Infrastructure Company (Sales Manager) Jaipur, Package- 7 LPA, Gotra : Self- Bahtriya, Mama- Baderiya, Contact : F-57, Behind Jain Temple, Mohan Nagar, Hindaun City, F-138, Near Apex International School, Lalkothi, Jaipur, Mob.: 9462622391, 6376592481 *(March)*

★ **Himanshu Jain** S/o Sh. S.K. Jain, DoB 24.07.1998, Height- 5'-10", Education- B.Tech (Mech.), Gotra : Self- Choudhary, Mama- Athwarsia, Job- Thales (MNC), Income- 14.5 LPA, Contact : 91/16, Patel Marg, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9079910858, 9530026423 *(March)*

★ **Pranav Jain** S/o Late Sh. Ashok Jain, DoB- 07.03.1993 (at 08:10 AM, Alwar), Education- B.Tech, Occupation- Working as a Software Professional in HCL Technologies, CTC : Approx 25 Lacs, Gotra : Self- Athvarsiya, Mama- Rajoriya, Contact : A-46, Arya Nagar, Scheme No. 1, Alwar, Mob.: 9460309548, 9530243608 *(March)*

★ **Ajit Jain** S/o Late Sh. Vinod Kumar Jain, DoB 27.06.1990 (at 3:55 PM, Bharatpur), Height- 5'-10", Fair Complexion, Education- B.Tech (VIT Vellore), Presently Working as Junior Statistical Officer in Subordinate Statistical Service under Ministry of Statistics and Programme Implementation, Posted at New Delhi, Gotra : Self- Chourbambar, Mama- Borandangya, Contact : (1) Smt. Pushpa Jain, Bharatpur

(Rajasthan), Mob.: 9785122157, (2) Alok Jain, Bharatpur (Rajasthan), Mob.: 9686695963 *(March)*

★ **Aditya Jain** S/o Sh. Anil Kumar Jain, DoB 28.11.1995 (at 9:43 am, Alwar), Education- B.Tech (Chemical) NIT Surat, MBA (IIM Ranchi), Working at Bangalore (Future First), Income 30LPA, Gotra : Kher, Contact : 73/46, Paramhans Marg, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 8387059788, 9414255764 *(March)*

★ **Abhishek Jain** S/o Sh. Vinod Kumar Jain, DoB 22.07.1992 (at 01:05 AM, Agra), Height- 5'-5", Education- M.Com. (DBRAU Agra), Occupation- Accountant at Hotel The Taj Vilas Agra, Income- 3.6 LPA, Gotra : Self- Januthariya, Mama- Baebare, Contact : 37/472, Nagla Padi, Dayalbagh, Agra, Mob.: 9219219655 *(March)*

★ **Mani Jain** S/o Sh. Akhilesh Kumar Jain, DoB 04.10.1992 (at 2:20 pm, Bharatpur), Fair Complexion, Height- 5'-6", Education- M.Tech, VLSI Branch NIT Kurukshetra, Occupation- Staff Engineer Micron Company, Hyderabad, Package- 19 LPA, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Maimunda, Contact : 3-KA-6, Manu Marg, Housing Board, Alwar, Mob.: 6377539259, 9413273936 *(March)*

★ **Shubham Jain** S/o Sh. Sanjay Kumar Jain, DoB 29.04.1994 (at 5:40 am), Height- 5'-6", Fair Complexion, Education- M.Sc (Mathematics) from DBRAU Agra, Computer Skills : ADCA, CCC, O" level, CTT & (Java Programming Language), Occupation- Working with HDB Financial Services as a Branch Manager, Mathura (Loan Department), Contact : 256, Bari Chappetti, Near Jain Mandir, Firozbad, Mob.: 8057556239, 8445255409, Email : jainjainshubh@gmail.com *(March)*

★ **Aman Jain** (Manglik) S/o Sh. Surendra Jain, DoB 23.06.1995 (at 01:30 PM, Alwar), Height- 5'-4",Fair Complexion, Education- B.Tech (CSE), Noida Institute of Engineering, Job- Sr. Software Developer, Simplilearn, Income 35 LPA, Gotra : Self- Kaashmiriya, Mama- Kotiya, Contact : B 306, Kesar Garden Apartment, Sector 48, Noida, Mob.: 9810603453 *(March)*

★ **Anuj Jain** S/o Sh. Manoj Kumar Jain, DoB 22.12.1996 (at 06:17 AM, Agra), Height- 5'-6", Fair Complexion, Education- B.Tech.(CSE), Occupation- Job (Software Engineer), Mphasis, Bengaluru, Karnataka, Gotra : Self- Kotia, Mama-Daduria, Contact : 28/227, Soda Wali Gali, Pathwari, Agra, Mob.: 9412750567, 9412256237 *(March)*

★ **Ashwat Jain** S/o Sh. Ashwani Jain, DoB 24.04.1996 (at Alwar), Height 5'-10", Fair Complexion, Education- B.Com., MBA (BML Munjal University), Job- Head Business Operations, Marquee Equity, Income- 10-12 LPA, Gotra : Self- Chodbambar, Mama- Gindorabaksh, Contact : "Navkaram", 24-A, Surya Nagar, Ganesh Marg, Gopalpura Byepass, Jaipur-302015, Mob.: 9829012013, 9413345046 *(March)*

★ **Mohit Jain** S/o Sh. Vimal Kumar Jain, DoB 20.03.1994 (at 06:12 PM, Delhi), Height : 5'-5", Education : BCA + MCA, Occupation- Senior System Engineer at Ahead India (Gurgaon), Package 16 LPA, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Vijeshwari, Contact : House No. RZ-132\2, Gali No. 4, Sadh Nagar, Palam Colony, New Delhi-110045, Mob.: 9818783172 *(March)*

★ **Anshul Jain** S/o Sh. Dinesh Jain, DoB 02.01.1995 (at 12:05 AM, Kanpur), Height- 5'-8", Education- B.Tech (Instrumentation and Control), Dehradun, Job- ScaleX, Design Manager, Income- 25 LPA, Gotra : Self- Katia, Mama- Karsolia, Contact : G-5, Shanti Nagar, Cantt, Kanpur-208004 *(March)*

★ **Divesh Jain** (Manglik) S/o Sh. Gyan Chand Jain, DoB 29.06.1994 (at 6:15 pm, New Delhi), Height- 5'-3", Education- Post graduate, Job- Private Sector, SI_UK - Gurugram, Income 7-10 LPA, Gotra : Mimunda, Contact : Rze-58, Raj Nagar part-2, Dada Dev Road, Palam, New Delhi-110077, Mob.: 9718869534 *(March)*

★ **Harsh Jain** S/o Sh. Banwari Lal Jain, DoB 05.10.1996 (at 5:20 pm, Jaipur), Fair Complexion, Height- 6Ft., Education- BCA, MBA, Job- Service in Real Estate, Godrej, Pune, Income 13 LPA, Gotra : Self- Boorandangya, Mama- Negeshwaria, Contact : F-73, Vaishali Nagar, Jaipur, Mob.: 9414607366, 7597782124, Email : banwari1966@gmail.com *(March)*

★ **Mayank Jain** S/o Sh. Subhash Chand Jain, DoB 12.10.1993 (at 11:17 pm, Alwar), Height- 5'-10", Education- B.Tech in Electrical Engineering, Job- Sr. Software Engineer, Income 25 LPA, Gotra : Self- Sripat, Mama- Kotiya, Contact : 8, Gupta Colony, Jawahar Nagar, Alwar-301001, Mob.: 9739748225, 6350393714 *(March)*

★ **Devank Jain** S/o Sh. Ashwani Jain, DoB 31.10.1990 (at 07:15 AM, Alwar), Height- 5'-5", Fair Complexion, Education- B.A., MBA perusing from Distance Learning, Job- Own Business (Event Management Company), Gotra : Self- Chodbambar, Mama- Gindorabaksh, Contact : "Navkaram", 24-A Surya Nagar, Ganesh Marg, Gopalpura Bye Pass, Jaipur 302015, Mob.: 9829012013 *(March)*

* * * * * * * *

भावभीनी श्रद्धांजलि

दिन बीते, महीने बीते, बीत गये वर्ष
कोई दिन ऐसा नहीं था जब हमें न आया हो आपका खयाल

स्व. श्रीमती शान्ती देवी जी जैन
(स्वर्गवास : 06.05.2014)

स्व. श्री सुमेर चन्द जी जैन भगत
(स्वर्गवास : 22.03.2022)

आपकी पुण्यतिथि पर हम सभी
अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं, आपका स्नेह,
सद्व्यवहार, सेवा भावना एवं धर्मपरायणता हमारा सदैव मार्गदर्शन करता रहेगा।

श्रृद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
मुकेश चन्द जैन 'भगत'-रविवाला जैन,
(पूर्व संयुक्त मंत्री अ.भा.प. जैन महासभा)
दिनेश चन्द जैन-कृष्णा जैन

पौत्री-पौत्री दामाद :
क्षमा-विवेक जैन,
पूजा-तुषार,
बुलबुल-विकास जैन

पौत्र-पौत्रवधु :
संयम जैन-महिमा जैन,
आदित्य जैन-शिल्पी जैन

भाई-भाईवधु :
किशन चन्द जैन,
सुभाष चन्द जैन-सरोज जैन,
कैलाश चन्द जैन-पुष्पा जैन,
हरिश चन्द जैन-कुमकुम जैन

बहन :
श्रीमती उर्मिला जैन
श्रीमती लक्ष्मी जैन

पड़पौत्र, पड़पौत्री :
तविश, विक्षा, वेदिका, सिद्धार्थ, श्रेयांश, मायशा

पुत्री-दामाद :
रिखब चन्द जैन,
ममता जैन-नलिन जैन

धेवता-धेवता वधु :
रोबिन जैन-नेहा जैन

धेवती-धेवती दामाद :
सौम्या जैन-गौरव जैन

धेवती :
नन्दिता, अच्छिता,

निवास: 'शान्ती निकेतन', 34, कलाकुंज, बोदला, आगरा
306-ए, पार्क वैली सोसायटी, बीएमजे कंपाउंड, लोहामंडी, बोदला रोड, आगरा
फोन : 9837001213, 9411045129, 8171783722, 9808820427

भावभीनी श्रद्धांजलि

तृतीय पुण्यतिथि

स्व. श्री दुलीचन्द जी जैन

(केसरा वाले)

(स्वर्गवास : 08.03.2021)

नवम पुण्यतिथि

स्व. श्रीमती लीलावती जी जैन

(स्वर्गवास : 26.04.2015)

हम सभी परिवार के सदस्यों की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि।
आपका कर्मठ व्यक्तित्व सदा हमारी प्रेरणा बना रहे।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
महेश चन्द जैन-मधु जैन
प्रदीप कुमार जैन-निधी जैन

पौत्री-पौत्री दामाद :
हिमानी जैन-पीयूष जैन

पुत्री-दामाद :
मिथलेश जैन-मुकेश जैन
मंजु जैन-महावीर प्रसाद जैन
चन्द्रप्रभा जैन-वीरेन्द्र जैन

पौत्र, पौत्री :
आकांक्षा जैन, दक्ष जैन, मानव जैन

निवास :
मधुवन कॉलोनी, सरकारी अस्पताल के पीछे, खेरली (अलवर)
36-सी, कृष्णा विहार विस्तार, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर

TRAFO
Power & Electricals Pvt. Ltd.

TRAFO POWER & ELECTRICALS PVT. LTD.

AN ISO 9001:2008 COMPANY

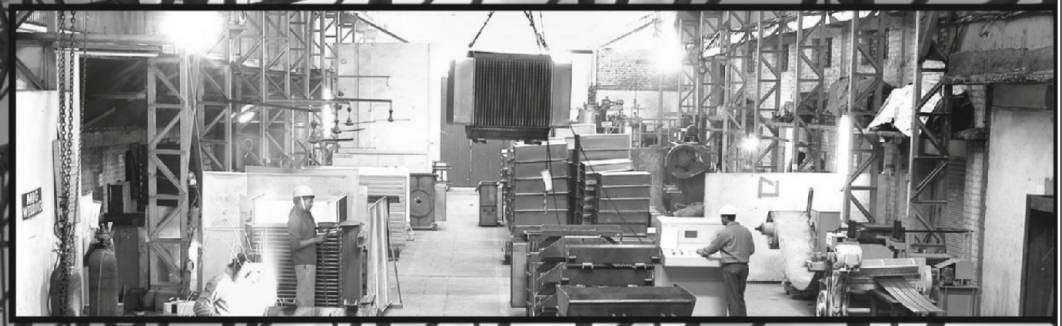

PRODUCTS

- POWER & DISTRIBUTION TRANSFORMERS
- AUXILLARY TRANSFORMERS
- SPECIAL PURPOSE TRANSFORMERS
- PACKAGE SUBSTATION
- PRESSED STEEL RADIATORS
- CORRUGATED FINWALL
- TRANSFORMER TANKS

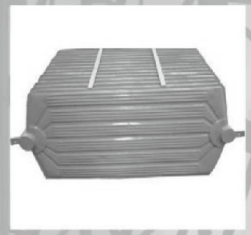

CONTACT
Trafo Power & Electricals Pvt. Ltd.
C-20 Site-C U.P.S.I.D.C., Industrial Area, Sikandra,
Agra, Uttar Pradesh - 282007, India

Phone No. : +91-562-2640388
E-mail : info@trafo.co.in
Website : www.trafopower.com

पूज्य पिताजी स्व. श्री कपूरचन्दजी जैन व माताजी स्व. श्रीमती अंगूरी देवी जैन की
पुण्य स्मृति में

विमल चन्द जैन (रेता वाले)

ग्रुप ऑफ कम्पनीज

DEALERS & SUPPLIERS OF SILICA SAND & OTHER GLASS RAW MATERIAL

AKHIL JAIN (M) 9690441107 • ANKIT JAIN (M) 9837478564

★ The Rajasthan Silica Sand Suppliers
★ Shree Vimal Silica Traders
★ S.B. Jain Mineral Enterprises

Late Sh. Bimal Chand Jain
(Reta Wala)

ANKIT JAIN

AKHIL JAIN

128-129, गणेश नगर,
सेक्टर प्रथम,
पानी की टंकी के सामने,
फिरोजाबाद (उ.प्र.)
सम्पर्क :
Ankit Jain - 09837478564
Akhil Jain - 09690441107

RNI NO. RAJHIN/2012/47438 Postal Registration No. JAIPUR CITY/410/2022-24

RERA Registration No.
RAJ/P/2022/2193
www.rera.rajasthan.gov.in

www.pearlgroupindia.com

Pearl
Build Trust & Loyalty

Pearl
ROYAL
2/3 BHK Exclusive Apartments

An exclusive place
that you can call home

D-231 B, Tulsi Marg, Bani Park, Jaipur (RAJ)

GYMNASIUM | MULTIPURPOSE HALL | INDOOR GAMES

Builder & Developers
Pearl India Buildhome (P) Ltd.
PEARL DEEWAN S-14, Mangal Marg,
5th floor Bapu nagar, Jaipur-302015
Ph.: +91 141 4014044
Website : www.pearlgroupindia.com
E-mail : pearlgroup.vijay@gmail.com

Member
TODAR | CREDAI RAJASTHAN | RAJREDCO

Dr. Raj Kumar Jain : 9414054745
Ar. Vijay Kumar Jain : 9829010092

3 Decades of Excellence | 3600 Villas + Plots | More than 800 Apartments | 35 'Pearl' Tower | 6 Townships

Disclaimer:- The image shown in indicative only and the actual view may differ from the one shown here.

If Undelievered, please return to :
श्री चन्द्रशेखर जैन *(संयोजक)*
86, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क आमेर के पीछे,
जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018 (राज.)

पत्रिका स्वामी- अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा (रजि.) के लिए मुद्रक/प्रकाशक श्री चन्द्रशेखर जैन, 86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018 ने गणेश आर्ट प्रिंटर्स, जे-51, कृष्णा मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर से मुद्रित, सम्पादक : श्री प्रकाश चन्द जैन।